प्राप्ति स्थान—
जिनवाणी कार्यालय जयपुर
सम्यग्-ज्ञान प्रचारक मण्डल
शाखा कार्यालय जोधपुर

प्रतियाँ १०००

मूल्य—बारह आना

वीर सं० २४८६
विक्रम सं० २०१६
फरवरी १९६०

मुद्रक—
जिनवाणी प्रिन्टर्स
जयपुर

# दो शब्द

प्रस्तुत पद्यावली के रचयिता स्वनामधन्य पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म० हैं। आप का जन्म वि० स० १८३४ वै० सुद पचमी को जयपुर राज्यान्तर्गत कुड नामक एक छ टे से गाव में हुआ था। आप के पिता का शुभ नाम लालचन्द्रजी तथा माता का नाम हीरादेवी था। आप वड़जात्या गोत्रीय श्रावगी थे। आपकी शरीर रचना सुन्दर और आकर्षक थी, जिससे पारिवारिक जनों एवं कुटुम्बियों को बड़ा ही गौरव था। यही कारण था कि आपका नाम रत्नचन्द्र रक्खा गया।

जब आप कुछ बडे हुए तो नागोर निवासी सेठ गगारामजी बड़जात्या पुत्र न होने के कारण आपको दत्तक के रूप से अपने यहा ले आए और बड़े लाड़ प्यार से रखने लगे।

कालकी गति विचित्र है—यह लाड़ प्यार कुछ अधिक दिनों तक भी नहीं चल पाया कि एक दिन अकस्मात् आपके पिता गगारामजी का देहावसान हो गया। रत्नचन्द्रजी की उस समय अवस्था बहुत छोटी थी और वे प्राथमिक पाठशाला में पढ़ने के लिए भर्ती हुए थे। किन्तु पढ़ने के बजाय खेल कूद में ही मन अधिक लगता था।

उस समय नागोर में पू० श्री गुमानचन्द्रजी म० सा० विराजमान थे। समय २ पर आप सन्त सेवा में भी आया जाया करते और अवस्था के अनुकूल धर्मकार्यों में रसलेते थे। एकरात में आप सन्त

सेवा में गए वहां प्रतिक्रमण के बाद किसी ने—"हरिया ने रग भरिया हो क्षीला जिन निरख् नैण सु । मार दिल बसीया जिन दोय" यह स्तवन पढ़ा। इसको आपने एकबार सुनकर दुबारा सुस्वर में गाया। आपका स्वर इतना मीठा और सुभावना था कि म० साहब ने आपका परिचय पूछा। आपने अपना परिचय और नाम बताया गुरुमहाराज ने कहा कि तुम्हारे जैसे साधु बने तो जिन शासन की बड़ी प्रभावना कर सकते हैं। यह सुनकर आप बोले कि महापुरुषों का यही आशीर्वाद है तो मैं साधु अवश्य बनू गा।

आपको यह अच्छी तरह मालूम था कि साधुता ग्रहण की आज्ञा माताजी नहीं दे सकती, क्योंकि उनके निर्धनता होने के कारण ही आप यहां दत्तक आए थे और आपसे उनकी बड़ी २ आशाएं थी; जो किसी माता को अपने पुत्र से हो सकती है। अतः आपने अपने चाचा माधूरामजी से पूछा कि आपकी आज्ञा हो तो मैं आचार्य श्री गुमानचन्दजी म० के पास संयम ग्रहण करू। यह सुनकर माधूरामजी ने कहा संयम भावना कोई आसान काम नहीं है। बड़े २ दिलवाले भी इसकी आराधना में सिहर उठते हैं। तुम्हारी क्या अवस्था और व्यवस्था है कि तुम इसे पाल लोगे। इस पर आपने कहा कि आप आज्ञा देवें तो मैं इस कार्य में अवश्य सफलता प्राप्त करूंगा ऐसा मेरा विश्वास है। आपके दृढ़ निश्चय भार साहस को देखकर माधूरामजी ने आज्ञा प्रदान करदी। उन का पूरा सहयोग रहा। उन्होंने कहा पीछे का मैं निपट लूंगा।

चाचाजी की उत्साहवर्धक बात सुनकर आपका मन मयूर नाच उठा। आप अपने संकल्प को पूर्ण करने चल दिये। जोधपुर के पास मंडोर में जो कभी मारवाड़ की राजधानी का स्थान था मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी म० के पास वि० सं० १८४८ वैसाख शु० पंचमी को नागादरी के स्थान पर आपने श्रमण दीक्षा ग्रहण करली। दीक्षा के समय आपकी अवस्था मात्र चौदह वर्ष की थी। ऐसी छोटी आयु में जो खेल कूद की आयु होती है, आपने सबसे मुंह मोड़ कर योग का कठिनतम जीवन धारण कर लिया। यह पराकाष्ठा का साहस और अनुपम त्याग का अनूठा उदाहरण है।

आपकी बुद्धि बड़ी प्रखर थी। किसी भी विषय का अभ्यास आपके लिए सरल और सहज था। बहुत थोड़े समय में ही आपने साधु जीवन के विधि विधान का ज्ञान प्राप्त कर लिया।

दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात मंडोर से विहार कर आप जोधपुर पहुँचे, जहाँ पू० श्री दुर्गादासजी म० कुछ वर्षों से स्थिरवास विराजमान थे। परमस्थविर मुनि श्री दुर्गादासजी म० ने मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० के साथ आपको मेवाड़ मालवा की ओर विहार की आज्ञा प्रदान की, तदनुसार गुरु महाराज की सम्मति पाकर सब सन्तों ने सोजत होकर मेवाड़ की ओर विहार किया और वि० सं० १८४६ का चातुर्मास आपने भीलवाड़ा ( मेवाड़ ) में किया। वहा पर आपने भगवान नेमनाथस्वामी की स्तुति रचना की।

आपको बचपन से काव्य कला का शौक था जो आपके जीवन में क्रमशः बढ़ता ही गया। इस पद्यावली के अतिरिक्त भी आपने कई छोटे मोटे चरित्र लिखे। जो संख्या में ११ से अधिक हैं। वि० सं० १८८२ में आषाढ़ शु० ११ को आप आचार्य पद पर आसीन हुए और वि० सं० १९०२ ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी को जोधपुर नगर में आपका स्वर्गवास हुआ। अल्पवय में दीक्षित होकर भी आपने जैनधर्म की बड़ी प्रभावना की एवं एक महान प्रभावशाली आचार्य हुए। वस्तुतः रत्न और चन्द्र की तरह आपका रत्नचन्द्र नाम सदा सार्थक और अनमोल रहेगा।

आपके पदों को तीन भागों में बांटा गया है—स्तुति औपदेशिक और धर्म कथा। स्तुति प्रकरण में अवसर्पिणी काल में होने वाले तीर्थंकर जैसे भगवान ऋषभदेवजी, धर्मनाथजी शान्तिनाथ जी नेमनाथजी पारसनाथजी, महावीरस्वामीजी तथा महाविदेह में विचरण करने वाले वर्तमान तीर्थंकर सीमंधरस्वामीजी आदि के स्तुति पद हैं। इनमें नेमीनाथजी और पारसनाथजी के पद विशेष संख्या में हैं।

भाव विभोर या तन्मय होकर भगवान का गुणगान करना यह आधिकभक्ति या गुणस्तुति है। इस स्तुति के द्वारा भक्त अपनी लघुता को महनीय की महत्ता विशेषता और अतिशयता के सम्मुख सकोच भावों से समर्पण कर कृत कृत्य बन जाता है। भावविह्वल भक्त अपनी एकान्त भक्ति और निर्मलश्रद्धा से उस विराट चिरन्तन और शुद्ध बुद्ध

मुक्त के प्रति अपना तादात्म्य या स्नेहानुबन्ध प्रगट करते हुए विराटता की कामना करता है। जैसे बिन्दु सरित् प्रवाह के द्वारा सिन्धु में मिलकर सिन्धुत्व का पद पालेती है वैसे भक्त भी अपनी निश्छल भक्ति रूप स्तुति से भगवान बन जाता है। जब लौकिक स्तुति भी फलदायक होती है तब अलौकिक स्तुति की तो बात ही क्या ? स्तुति द्वारा भगवत सान्निध्य लोह का पारसमणि के स्पर्श तुल्य है। इस प्रकार स्तुति प्रकरण में आपने गुणातीत के अलौकिक गुणों का मधुर गायन प्रस्तुत किया है जो हृदयाकर्षक और मधुरता से ओत प्रोत है।

दूसरा औपदेशिक भाग है। इसमे आपने उपदेशों के द्वारा पुण्य पाप और आत्मा परमात्मा तथा बन्ध मोक्षादि भावों का सुन्दर चित्रण किया है। साधु संघ की आचारशुद्धि के लिए भी, आपने प्रबल प्रेरणा की है। जिस प्रकार शुभ कर्म का परिणाम शुभ और अशुभ का अशुभ होता है तथा कषायादि सेवन से आत्मा की ज्योति मंद पडती और त्याग से ज्योति प्रज्वलित होती है आदि भावों का प्रदर्शन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। आचारनिष्ठ साधक के उपदेश का प्रभाव मन पर गहरा असर डालता है क्योंकि वह एक अनुभूत सत्य और शिवरूप होता है। यही कारण है कि आपके औपदेशिक पद अर्जुन के तीर की तरह मन पर गहरे असर डालने वाले हैं। गहन से गहन विषयों को भी आप अपने उपदेश के द्वारा सरलता से हृदयगम कराने में सफल सिद्ध हुए हैं वस्तुत आपकी पैनी दृष्टि और सद्भावना सराहनीय है।

तीसरा धर्मकथा विभाग—जीवन को आदर्श और स्वास्थ्य बनाने वाली पद्यात्मक कथाएं हैं। एक तो यों ही कथाएं रोचक होती है और अगर वह पद्य में हो तो फिर क्या कहना? इस विभाग में भी आपने लोकहित एवं आत्महित के लिए ऐसे २ रोचक कथाओं का चित्रण किया है जो एक से एक बढ़कर आत्म कल्याण में सहायक सिद्ध हैं।

इस तरह यह पद्यावली आपकी साधु भावना का एक त्रिरत्न पिटक है जो पद्य प्रेमी पाठकों के लिए परम उपयोगी सिद्ध होगा। विशेष इस की समीक्षा तो पाठक का अन्तःकरण ही करेगा किन्तु इतना मुझे कहने में कुछ संकोच नहीं कि यह पद्यावली उस साधु हृदय की वाणी या भावना है जिसका उद्देश्य सदा लोकहिताय ही रहा है। अतः यह मुमुक्षु जनों के लिए हितावह और लाभदायक सिद्ध होगी इसमें कुछ संशय नहीं।

पांडुलिपि—जैन स्तुत, श्रावक नित्य नियम सामायिक मंगल प्रार्थना आदि पुस्तकों में आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म० के कुछ स्तुति रूप आध्यात्मिक पद प्रकाशित हुए हैं जिनको भक्त लोग सामायिक व नित्यनियम के समय भक्ति रस म विभोर होकर पढ़ते हुए देखे जाते हैं—इनको देखकर मनमें संकल्प पैदा हुआ कि आचार्य श्री के सभी पदों को एक साथ संकलन कर प्रकाश में लाया जाय तो पाठकों को पढ़ने क लिए सुलभ हो जायगा। वि. सं० २ १६ का चातुर्मास भीनासर गंगासर में समाप्त कर जब फाल्गुण वदी में उपाध्यायश्री गणेशीलालजी म० तथा

उपाध्याय श्री हस्तिमलजी म० सा० आदि अजमेर में विराजते थे तब स्थविर मुनि श्री अमरचन्दजी म० के साथ अजमेर जाने का अवसर मिला। उस समय वहाँ पर विराजमान स्वर्गीय महासतीजी श्री छोगाजी म० की सुशिष्या श्री केवलकुवरजी तथा सुंदरकुवरजी से पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री के रचित सब ही स्तवनों का संग्रह उनके पास विद्यमान है। वि० स० २६१४ के अजमेर चातुर्मास के समय इसकी पाण्डु लिपि कराने का विचार हुआ। इसी विचार को कार्य रूप मे परिणत करने के लिए स्थानीय 'जीत ज्योति' के सपादक श्री जीतमलजी चौपडा को कहा गया उन्होंने प्रतिदिन एक घटा अवकाश देकर तदनुसार लगभग ३ महीने में इस समह को तीन विभागों (१) स्तुति विभाग (२) औपदेशिक विभाग एव (३) चरित्र विभाग—लिखकर तैयार किया।

प्रतियों का परिचय—

(१) आचार्य श्री के पदों की एक प्रति ( उपाध्याय श्री हस्तीमल जी म० के पास है जिसमें ६० स्तवनों का सुन्दर समह उपलब्ध है। पत्र सख्या १८—स्वयं आचार्य श्री रत्न चन्द जी म० की हस्त लिखित प्रति भी है तथा इनके अतिरिक्त आचार छतीसी उपदेश छतीसी आदि ४ छतीसींया है प्रति प्राय. शुद्ध है—लेखक का नाम निर्देश नहीं हैं।

(२) दूसरी प्रति महासती जी की—पत्र सख्या १६—स्तवन सख्या ११४—इसमें दो पद अपूर्ण है। लेखक का निर्देश नहीं है स० १६६२ का चैत्र शु० थिरवार को सम्पूर्ण।

वि० सं० २०१६ के चातुर्मास में जयपुर लाल भवन के शास्त्र भण्डार का निरीक्षण करते हुए आचार्यश्री के कुछ नवीन पद भी प्राप्त हुये जैसे—गौतम स्वामीजी का रास जो स्तुति विभाग में जोड़ दीया गया है। आचार्य श्री गुमानचन्दजी म की जीवनी तथा पूज्य दुर्गादासजी म की जीवनी—जिनको चरित्र विभाग में जोड़ दिया गया है।

साथ में परिशिष्ट विभाग भी जोड़ा गया है जिसमें आचार्य श्री के सम्बन्ध में रचित अन्य पद जो भिन्न भिन्न समय पर भिन्न भिन्न कवियों के द्वारा श्रद्धांजलि रूप में अथवा प्रशंसा रूप में लिखे गए हैं—पाठकों के पठनार्थ जोड़े गए हैं। इनमें प्रमुख हैं आचार्य श्री हमीरमलजी म० महासतीजी श्री मंगलाजी श्री मगनाजी व रघुनाथ सेवक आदि के हैं।

आचार्य श्री के जीवन की विशेष बात का उल्लेख करना जो शेष रह गया है वह निम्न प्रकार है—

आचार्यश्री ने वि सं० १८३८ में दीक्षा ग्रहण की। और दीक्षित होकर पहले ही वर्ष १८४१ में आपने काव्य रचना प्रारम्भ कर दी। आपके द्वारा रचित विशाल समूह में श्री नमीश्वर जिन स्तुति' पद जिसका चौमासा वि० १८४१ में रच जाने का उल्लेख है ( देखिए पद संख्या ४० ) ६१–६२।

महाराज श्री के अनेक पद हिन्दी साहित्य के संत कवि कबीरदास व सूरदास सदृश छोटे किन्तु मानस को हिला देने वाले हैं " आपकी रचनायें राजस्थानी ( ढूंढाड़ी—मारवाड़ी

मिश्रित ) भाषा का उत्कृष्ट नमूना है। साधु की अथवा निस्पृही त्यागीजन की भाषा मे जो स्पष्ट वादिता होनी चाहिए वही आपकी रचनाओं मे वर्तमान है। आप जिस प्रकार वेश से साधु थे, विचारो के अक्कड एवं स्पष्टवादी थे—जो साधु की भाषा मे होना अनुपयुक्त नहीं। साधु को ससारी जीवो से, उनके विशेषणों से लगाव भी नहीं होना चाहिए। कह सकते हैं जिस तरह हिन्दी साहित्य मे सत कबीरदास ने अपनी साधुक्कडी एव अक्खड भाषा मे ससारी प्राणियो को अपनी अमूल्य निधि भेट की है उसी प्रकार आचार्यश्री ने भी साधु जीवन, सयमित जीवन को श्रीजिनमार्ग पर सीधे सच्चे रूप मे चडने को चैलेज (challenge) दिया है। आप आचार्य गुमानचन्द्रजी म० के शिष्य थे। इसलिए आप प्राय प्रत्येक पद मे गुरुदेव के पुनीत नाम का ससमरण करते है साथ मे बहुत से पदों मे सवत और रचना स्थानों का भी उल्लेख किया है।

आप विशेष समय गुरुदेव की सेवा में रहे। गुरुदेव का स्वर्गवास होने के पश्चात् पूज्य दुर्गादासजी म० की सेवा मे रहे। और सम्प्रदाय की व्यवस्था करते रहे। पू० दुर्गादासजी म० के स्वर्गवास के पश्चात् चतुर्विध सघ ने आपको आचार्य पदारूढ किया।

लाल भवन, जयपुर<br>श्री पार्श्वनाथ—जयन्ति<br>स० २०१६

—लक्ष्मीचन्द्र<br>मुनि

# प्रकाशकीय

श्री रत्नचन्द्र पद मुक्तावली ( आचार्य श्री रतनचन्दजी म० के पदों का संग्रह ) पाठकों की सेवा में रखते हुये अति हर्ष हो रहा है। पुस्तक का प्रकाशनकार्य गत चातुर्मास में ही प्रारंभ कर दिया गया था और पुस्तक पूर्ण रूप से शुद्ध प्रकाशित हो इस बात का ध्यान रखने के कारण कार्य धिमी गति से चलता रहा फिर भी पुस्तक में काफी अशुद्धियां रह गई है। जिसका शुद्धि-पत्र अलगसे दिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में धूलिया निवासी श्री भीकमचन्दजी गणेशदासजी चौधरी द्वारा २००) श्री सुगनचन्दजी श्रीश्रीमाल मद्रास निवासी द्वारा १०१) श्री अमरचन्दजी मदनलालजी मेरवा वालों द्वारा ५०) एवं एक गुप्तदानीजी जयपुर द्वारा २००) कुल रुपया ५५१) सहायतार्थ प्राप्त हुये हैं। एतदर्थ सहायता दाताओं को धन्यवाद।

निवेदक

जयपुर

मंत्री की ओर से—

भँवर लाल बोथरा

श्री रत्नचन्द्र पद मुक्तावली

# पदानुक्रमणिका

## स्तुति विभागः—


| क्रम स० | टेर पद | पृ० स० |
|---|---|---|
| १ | जीव रे, तू जाप जपो नवकार | १–२ |
| २ | जाण्यो थारो भाव प्रभु जी | २–३ |
| ३ | अब मोरी सहाय करो जिनराज | ३ |
| ४ | निठुर थयो साहिब सॉवरियो | ४ |
| ५ | नेमीश्वर मुझ अर्ज सुणी जे | ५ |
| ६ | प्रात ऊठ श्री शाति जिनन्द को सुमिरन कीजे घड़ी २ | ५–६ |
| ७ | तूँ धन, तूँ धन, तूँ धन, तूँ धन, शाति जिनेश्वर स्वामी | ६–७ |
| ८ | वाणी थारी वीरजी, मीठी म्हाने लागे हो | ७ |
| ९ | म्हाने अमिय समाणी लागे रे जीव, श्री जिनवाणी | ८ |
| १० | एक आस भली जिनवर की | ९ |
| ११ | हम किम छोड़ चले मोय, जादव दीन दयाल | १०–११ |
| १२ | सतगुरु मत भूलो एक घड़ी। | ११ |
| १३ | आज नेण भर गुरु मुख निरख्यो ·· | ११–१३ |
| १४ | वामानन्दन पार्श्व जिनन्दजी, सेवे थाने सुर नर वृन्द | १३–१४ |
| १५ | सुखकारी जी थापर वारीजी सावरियां सायब। | १४–१५ |
| १६ | वारी हो सतगुरु की वाणी ··· | १५–१६ |
| १७ | चन्दा प्रभु मो मन भावे रे। | १७–१८ |

१८ जिनेश्वर वन्दिये श्री पोह ऊगते सूर १८–१९
१९ सुज्ञानी नर वंदो श्री महावीर ने जिनराज १९–२१
२० मवजीवां हो वन्दो भगवन्त ने २२–२३
२१ हो सुखकारी हो जिनजी धन धन क्षेत्र विदेह २४–२५
२२ मोने एक पार्श्व को आधार २५–२६
२३ सांवलियो साहिब सुखदायक सुणजो अर्जे हमारी २६–२७
२४ सांवलियो साहिब है मेरो मैं चाकर प्रभु तेरो २७–२८
२५ प्रभुजी थारी चाकरी रे २८–२९
२६ प्रभुजी दीनदयाल सेवक शरणे आयो २९–३०
२७ रहो रहो रे सांवलिया साहिब ३०–३१
२८ वीरजी सुणो ३१–३२
२९ जिनराज सदा ही वंदिए ३३–३४
३० श्री सीमंधर सुण अलवेसर ३४–३६
३१ वाणी सतगुरु की सुणो सुणो हो भविक मन लाय ३६–३८
३२ जिनराजजी महिमा अति घणी ३८–३९
३३ मिलया गुरु ज्ञान तणा दरिया ३९–४०
३४ मन सतगुरु सीख कहा मूढ ४०
३५ गुरु सम कुण जग में उपकारी ४१
३६ ज्ञान कला जाग छे जी गुरु उपदेश ४२
३७ सांवलिया सूरत थारी प्रभु मो मन लागे प्यारी ४३–४४
३८ जिनवर जन्मियो लालना ४४–४५
३९ वामा दे जी रा नन्द ४७

४० शान्ति जिनेश्वर मोलवा ४८
४१ श्री सीमंधर जिनदेव प्रभु म्हारो
दरसण देखण हिवड़ो उमगेजी ४६–५०
४२ साहिब साभलो हो प्रभुजी ५०–५२
४३ म्हारो मन लाग्यो धर्म जिनद सु रे ५२–५४
४४ श्री युगमन्दिर साहिब केरो ५५–५६
४५ मनडो उमायो दरसण देखवा ५६–५७
४६ प्रभु म्हारी विनतड़ी अवधारके
दरसण दीजिये ग राज ५८–५६
४७ नेमिश्वर जिन तारो हो ५६–६२
४८ नेम नगीनो रे, तोरण थी रथ फेर सयम लीनो रे ६२–६४
४६ सुख कारी हो जिनजी महर करी ने दरशन दीजिये ६४–६६
५० श्री सिद्धार्थनन्द जिनेसर जगपति हो लाल ६६–६७

## औपदेशिक विभाग

| क्रम संख्या | टेर स्तवन | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| १ | अरजी सुणो एक हमारी, विनवें सुमता नारी | ६६ |
| २ | मत ताको नार विराणी | ७०–७१ |
| ३ | चचल छैल छबीला भंवरा, पर घर गमन न कीजे रे | ७१–७२ |
| ४ | कर्म तणी गत न्यारी, प्रभुजी | ७२–७३ |
| ५ | जीवड़ला यों ही जनम गमायो | ७४ |

| | | |
|---|---|---|
| ६ | जगत में बड़ो समझ को फन्दो | ७५ |
| ७ | भेष धर यूं ही जनम गमायो | ७६ |
| ८ | कठीन लगन की पीर रे | ७७ |
| ९ | निन्दा मोरी कोई करो रे | ७७–७८ |
| १० | मत कोई करियो प्रीत दुःख के फन्द पड़ेला | ७८ |
| ११ | तू क्यों ढूंढे बन बन में तेरा नाथ बसे नैनन में | ७९ |
| १२ | नम जिनन्दा मोन बिन अपराधे छोड़ी जी | ८० |
| १३ | घर त्याग दिया अब क्या करना | ८१ |
| १४ | म्हारा प्रभुजी हो कर्म गत जाय न जाणी | ८२–८३ |
| १५ | थारे जीवा भूल घणी रे | ८३–८४ |
| १६ | रसना विगर विचारी मत बोल | ८४–८५ |
| १७ | विषया वश जन्म गमो रे | ८५–८६ |
| १८ | धिनवे सुमता नारी पर आवोनी प्यारा | ८६–८७ |
| १९ | कर्म तणी गत न्यारी कोई पार न पावे | ८७ |
| २० | मानव को भव पावन मत जाय रे निरासा | ८८ |
| २१ | समता रस का प्याला पीवे सोई आवे | ८९ |
| २२ | थोड़ो जनम जीवणो थोड़ो सेवट मन में करिये रे | ९०–९१ |
| २३ | कर गुजरान गरीबी सु मगरूरी किस पर करता है | ९१–९२ |
| २४ | जग जंजाल सपन की माया इस पर क्या गरभाणा रे | ९३–९४ |

२५ थांरी फूल सी देह पलक मे पलटे, ६४-६५

२६ इण काल रो भरोसो भाई रे को नहीं ६५-६७

२७ कथलो मांड्यो रे, साधुजी करे वखाण ६७-१००

२८ सुकृत करले रे मूंजी, थारी पड़ी रहेला पूंजी १००-१०२

२९ नगरी खुब वणी छै जी जिणरा सिद्ध
धणी छे जी १०२-१०४

३० सगत खूब मिली छे रे १०५-१०६

३१ निर्मल शुद्ध समकित जिण पाई १०७-१०९

३२ चेत चेत रे चेत चतुर नर मिनख जमारो पाय रे १०९-१११

३३ जगत सहु सपने की माया रे ११२

३४ गाफिल केम मुसाफिर, ठग लागा तेरी लार ११३

३५ त्याग नहीं पार की नारो, ते श्रावक किम
उतरे पारो ११४-११६

३६ अब घर आवोजी ··· म्हारा मन गमता
महाराज ११७-११८

३७ तू किण रो कुण थारो रे चेतनिया ११९

३८ जोवनिया की मोजा फोजा जाय नगारा देती रे १२०

३९ उलटी चाल चल्यो रे जीवडला १२१

४० निन्दा न करिये रे चेतन पारकी १२२

४१ समझ नर साधु किन के मिन्त १२३

४२ बुढापो वैरी आवियो हो १२४

४३ सीख शुद्ध मानो रे सतगुरु की १२५-१२९

| | | |
|---|---|---|
| ४४ | काया पिंड घायो राज काचो | १३० |
| ४५ | यो तो गढ़ काको राज कांचो | १३१ |
| ४६ | खाटो कर्मां को राज खांटो गाढो म्हारे पड़ियो | १३२ |
| ४७ | कूवे भांग पड़ी रे मंतो भाइ कूव भांग पड़ी रे | १३३ |

## चरित्र विभाग

| क्रम सं | टेर पद | पृ० सं० |
|---|---|---|
| १ | धन्ना मैं वारी हो थांरी देह तणी किम निरख | १३५ |
| २ | वन्दू नित गजसुकुमाल मुनीश | १३६ |
| ३ | मुनिवर धमरुचि रिख वंद् | १३७–१३८ |
| ४ | थारी जग में मोहनी | १३८–१४१ |
| ५ | धन धन धन सती चन्दनबाला | १४१–१४३ |
| ६ | शुद्ध पौषध प्रतिमा पालिए हो | १४४–१४६ |
| ७ | धन धन श्रावक पुण्य प्रभाविक विजय सेठ न सेठानी | १४६–१४८ |
| ८ | धर्म आराधिये रे आरणक श्रावक जेम | १४८–१५१ |
| ९ | तुम पर वारी हूँ, वारी सौ वार हजारी | १५१–१५३ |
| १० | सुण सुण सुन्दर रे म्हारी भवका री अरदास | १५३–१५४ |
| ११ | म्हारा ज्ञानी गुरु नी वाणी हो अमृत सारसीजी | १५५–१५७ |
| १२ | तुम पर वारी श्री वीरजी बलायी हो | १५७–१५८ |
| १३ | ऋषभदत्त ने देवानन्दा मार रथ पर रे बैसी ने वंदन संचरया | १५९–१६२ |

| | | |
|---|---|---|
| १४ | वीर बखाणयो हो श्रावक एहवोरे | १६१ |
| १५ | पूज्य गुमानचन्दजी महाराज | १६३ |
| १६ | पूज्य दुरगादासजी महाराज 'रा' गुण | १६८–१७० |
| १७ | ,, ,, | १७०–१७२ |


## परिशिष्ट


| | | |
|---|---|---|
| १ | रतनमुनि म्हारे मन बसे (पू० हमीरमलजी म० ) | १७४–१७६ |
| २ | रतनमुनि री वाणी रे माने लागे प्यारी ( पू० हमीरमलजी म० ) | १७६ |
| ३ | रतनचन्द मुनि दीपता म्हारा सारे वंछित काज जी ( मु० दौलतरामजी म० ) | १७७–१७८ |
| ४ | सतगुरु उपगारी ए, पूज्य रतनमुनि श्रैन ( सतीजी श्रीमगतुलाजी मगना जी ) | १७८–१७६ |
| ५ | धनदिहाड़ो ने सुभरी घडी, ( सतीजी श्री मगतुलाजी ) | १८०–१८१ |
| ६ | मूसा तोय नेक लाज नहीं आइ रे (ले सिंभुनाथ) | १८१ |
| ७ | शुभ गति शरण तिहारो ,, | १८२ |
| ८ | कब कर हो मन मेरो, ऐसो ,, | १८२ |
| ९ | रहो मन रतन मुनी के पास ,, | १८२–८३ |
| १० | सतगुरु कब आवे सुनरी ,, | १८३ |
| ११ | वारी हो रतनेस पूज, वैण सुखकारी ,, | १८३–१८४ |
| १२ | रतन मुनि है जू गुणधारी ,, | १८४ |

श्री रत्नचन्द्र पद मुक्तावली

# शुद्धि पत्र

| पृष्ठ संख्या | पंक्ति संख्या | अशुद्ध | शुद्ध |
| --- | --- | --- | --- |
| १ | २ | एइज | एहिज |
| १ | ६ | बन्धु | बन्धूँ |
| १ | १६ | | |
| ४ | १० | 'सी' | क्या के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। |
| ४ | १२ | पर-समोरस | परस-मोरस |
| ५ | ४ | रूत्तर | उत्तर |
| ६ | ६ | संपत | संपद |
| १० | १० दूसरे पद 'अवर' के साथ मे जोड़कर पढ़ें | | |
| ११ | भजन संख्या ( १२ ) की दूसरी पर | | घट |
| १४ | १२ | पाम्पा | पाम्बा |
| १५ | अंतिम | अन्नत | अनन्तो |
| १५ | | मिस्था | मिथ्या |
| १६ | ११ | उपारिया | उपारिया |
| १७ | ७ | तीरे | तभे |
| १७ | १० | गया | पया |
| १८ | १ | गयो | पयो |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १८ | २ | १८५० में | अठारा पचास में |
| १६ | १ | सम्रह्याजी | ने सम्रह्याजी |
| १६ | ६ | सुमेहणी | सि मेहणी |
| १६ | ६ | तुम | तू |
| २२ | १२ | समझेहो | समझे हो आप |
| २४ | १० | मिथ्यात | मिथ्यात |
| २४ | १२ | उच्छाह | उच्छह हो |
| २६ | ६ | पारसनाथा | पारसनाथ |
| २७ | ३ | तरी | तारी |
| २७ | ४ | सहस्त्र | सहस्र |
| २७ | १२ | आप | आण |
| २८ | १८ | हीजिरे | दीजिये |
| ३१ | ११ | अपना | आपना |
| ३२ | ३ | पण | तो पण |
| ३४ | २ | घर | धर |
| ३५ | ७ | आख डाली | आंखडली |
| ३५ | ७ | तुभ | तुम |
| ३६ | ३ | प्रात. प्रात | प्रात प्रात |
| ३६ | ८ | कपिलपुर | कंपिलपुर |
| ३८ | अंतिम | मृत्य | मृत्यु |
| ३६ | ३ | रया | रह्या |
| ४१ | १४ | चाओ | चावो |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४२ | ४ | देस | देस |
| ४२ | ७ | सिव्यात | मिथ्यात |
| ४७ | ६ | बिरमता | विपमता |
| ४५ | १० | अतियरणा | अति भया |
| ४६ | १ | कर | करे |
| ४६ | ७ | तपिरया | तपिया |
| ४६ | १५ | पू | पूज्य |
| ४६ | १० | पीपब | पीपाड़ |
| ५२ | २ | मोक्षलया | मोक्षम्या |
| ५२ | ४ | निरयनियों | निरयनियो |
| ५२ | ५ | कहता | कहतां |
| ५३ | ६ | क | के |
| ५४ | १२ | मीनवर | जिनवर |
| ५५ | १२ | रां | रा |
| ५८ | अंतिम | जग | जेगल |
| ६० | ७ | बाझियो | बाझियो हो |
| ६१ | १३ | आयो | आयो हो |
| ६२ | १२ | आमूपर्ण | आमूपण |
| ६३ | ७ | बणया | बणया |
| ६३ | ३ | करुणो | करुणा |
| ६३ | ५ | रस | रथ |
| ६३ | १० | पुन | पूत |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६४ | ४ | उतराध्यन | उतराध्ययन |
| ६५ | ४ | मह | महे |
| ६५ | १० | निखरी | निरखी |
| ६६ | १३ | मभी | समी |
| ६६ | १४ | दुधनी | दूधनी |
| ७० | ४ | काजेग | काजे |
| ७४ | २ | धर्म तणो | धर्म तणो तो |
| ७४ | १० | वैरतणी | वैतरणी |
| ७४ | ११ | जनमत | जन्म तैं |
| ८० | १ | ईद | इन्द |
| ८० | ८ | कुड | कूड |
| ८१ | ५ | हुआ | हुआं |
| ८५ | ६–७ | उपाद | उपाध |
| ८७ | ८ | तीरयो | तिरियो |
| ८७ | १० | आने | आवे |
| ८९ | ९ | चेलापति | चेलायति |
| ९१ | २ | सूख | सूस |
| ९१ | ५ | खढा | खड़ा |
| ९२ | १३ | चकढोल | चकडोल |
| ९४ | ५ | अन | अन्त |
| ९५ | ८ | शीघ्र | शिघ्र |
| ९५ | अंतिम | ढेटा | ढेठा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९६ | ९ | पहुँचे | पहुँचो |
| ९६ | ११ | आण्यो | आयो |
| ९६ | १६ | अपसरा | अपसर |
| ९६ | १९ | ऐसा | ऐसो |
| ९७ | ८ | भविसया | भविस्या |
| १०० | ९ | सिढी | सीढी |
| १०२ | ७ | नरपति | नरपति |
| ११४ | ४ | मारने | मारे ने |
| ११४ | १३ | धारे | धार |
| ११५ | ३ | ममर्मास | मदमांस |
| ११५ | ५ | समो | समो |
| ११५ | १० | अणपारो | अणपारो |
| ११५ | १२ | कूठ | कूट |
| ११५ | १५ | गरधंवो | गरजंतो |
| ११६ | ३ | पच्चखाण | पच्चखाण |
| ११६ | ४ | टुट | टूट |
| ११७ | ८ | रहो | रही |
| ११७ | ९ | विहरो | विहारो |
| ११७ | ९ | सारिवा | साहिवा |
| ११७ | १४ | सहिवा | साहिवा |
| ११८ | १ | सुमके | सुम के |
| ११८ | २ | ममारिवो | ममाविवो |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १२० | ८ | ज्यों भरियो | ज्यों जल भरियो |
| १२४ | ५ | देव | देवे |
| १२६ | १७ | जीवढला | जीवडला |
| १२७ | ८ | जीवडल | जीवड़ला |
| १२७ | १० | जलस | जलूस |
| १२८ | ४ | चढ | चढ़ |
| १२९ | १० | सभी | समी |
| १३९ | ५ | कगरया | करगया |
| १४९ | १० | केह | के |
| १५० | २ | धम | धर्म |
| १५४ | ७ | धरणी | घरणी |
| १५५ | १२ | छुटे | छूटे |
| १५७ | ११ | से | हसे |
| १५८ | ७ | म | में |
| १५८ | ९ | पायो | पायो हो |
| १५९ | शीर्षक | अविचन्ह | अविचल प्रेम |
| १६० | ३ | घामी | पामी |
| १६२ | ५ | ह्यरा | रह्या |
| १६३ | ४ | जहना | जेहना |
| १६५ | ३ | जाणया | जाणिया |
| १६७ | १ | दशन | दर्शन |
| १६८ | ७ | मर्म | भरम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १६८ | ८ | आंकूर | आंकूर |
| १७३ | शीर्षक | परिपिष्ट | परिशिष्ट |
| १७५ | ११ | क्यारो | क्यारी |

नोट:—अन्य मात्रा ह्रस्व दीर्घ आदि रह गये हैं जैसे मे का में हु का हूं का हूँ गयो का पयो आदि इन्हें शुद्ध करके पाठक पढ़ने की कृपा करें।

स्तु

ति

# स्तुति वि भा ग

भा

ग

श्री मोतीलालजी शान्तीलालजी गांधी
पीपाड़ वालों की ओर से सादर भेंट

( १ )

# महामंत्र महिमा

( तर्ज—जीवो तू शियल तणो कर संग )

जीवरे, तूं जाप जपो नवकार ॥टे०॥
ओर नाम असार है सघला, ए इज छे तंत सार॥जी०॥
चोंतीस अतिशय पेंतीस वाणी, सेवे सुर नर क्रोड़
चक्री हलधर अरु नरनारी, सेव करे कर जोड़ ॥जी०॥१॥
देव एक अरिहंत तेहीज, राग द्वेष क्षय कीन
प्रथम पद मांही ते वन्दु, टाले कर्म मलीन ॥जी०॥२॥
सिद्ध सोही जाय विराजिया, मुगति महल मझार
कर्म काया भर्म काटने, निरजन निराकार ॥जी०॥३॥
तीजे पद आचारज वंदू, गुण छत्तीसे सोभ
साधु साध्वी श्रावक श्राविका, निर्भय तिणथी होय ॥जी०४॥
चोथे पद उवज्झाय मुनिवर, ज्ञान तणां भंडार
चार संघने प्यार धरने, सूत्र ना दातार ॥जी०॥५॥
पांच में पद साधुजी नमे, पाले पंचाचार
दोषण टाले कर्म वाले, ले निर्दोषण आहार ॥जी०॥६॥
पंचही परमेष्टी समरूं, पंचम गति दातार
बोध कमल प्रबोध कारणे, ये छे दिनकार ॥जी०॥७॥

इन्द्रपी हुवे नर देव सुरपत पामीये रिद्ध वृद्ध
सुख करता दु:ख हरता, प्रकटे आठों ही सिद्ध ॥जी॥८॥
व्यास हुए मृपालळ* मारता मृगपत मृग समान
दोषी दुश्मन सज्जन हुवे, लहीये केवल ज्ञान ॥जी॥६॥
घोर अंध समान हुवे विष अमृत जेम
दु:ख दाई काम मांही, वरते कुशल अरु खेम ॥जी॥१०॥
शेष सहस जीभ करिने सुरपति आप विसेक
गुण गावे तो पार न पावे म्हारी जीभ छे एक ॥जी॥११॥
कोन गिणे अम्बर तारा मेरू कुण तोलंत
सर्व उदधी पार लहीय पिण तुम गुण पार न लहंत॥जी१२
पूज्य गुमानचन्दजी प्रसाद किधी ढाल रसाल
प्रात प्रात उठी नित सिंवरू नमो नमो त्रिभ्यल ॥जी१३॥
सवत अठारे वरस चोपने, पोस मास मभार
पडलू मांही शुक्ल पख में, संथप्यो नवकार ॥जी॥१४॥

---

## (२)
## गुरु प्रेम
(तर्ज—धनाश्री)

आपयो थांरो मान प्रभुजी, आपयो थांरो मान ॥टेर॥
गोतम अर्ज करे प्रभु सेती मन्यो इण प्रस्ताव हो ॥आ०॥१॥

---

*केमन दरद।

शिव नगरी कायम की विरिया, मोसुं कर गया डाव हो ॥जा२॥
बालक भाव करी तुम सेती, करतो नहीं अटकाव हो ॥जा॥३॥
एक रूखी प्रीत करे किम चेतन, इण में लाव न साव हो॥जा४
करी केवल निज रूप 'रतन' नित, मेट चपल चित्त चाव हो॥जा५

---

( ३ )

## भक्त प्रार्थना

( तर्ज—धनाश्री )

अब मोरी सहाय करो जिनराज ॥अब॥टेर॥
काल अनंत रूल्यो भव भव में, अब भेटिया महाराज॥अ॥१॥
ओ संसार दुःखां रो सागर, कर्म करे बेकाज
आपो भूल आप दुःख पावे, भूल न आवे लाज ॥अ॥२॥
कारण विन कारज सिद्ध नाहीं, तुम गुण कारण जहाज
भव दरियाव मांही बूडंतां, हाथे आई पाज ॥अ॥३॥
दीन, अनाथ, दुरबल जाणीने, राखीजो मुझ लाज,
'रतन' जतन सुध संजम गुण विन, सरे न एको काज ॥अ॥४॥

---

( ४ )

# सती का स्नेह

( तर्ज—निठुर भयो गोकुल मथुरा विच )

निठुर थयो साहिब सांवरियो, छिन में ही छिटकाई जी ।।टेर।।
मन की बात रही मन मांहीं, पूछ सकी नहीं कांई जी ।।नि।।१।।
जगत शिरोमणि यादव के पति, कृष्ण सरिखा भाई जी
तिनकी लाज रही कहो कैसे, यादव जान लजाई जी ।।नि।।२।।
जो कोई खून हुवे मुझ अन्दर तो देऊ साख भराई जी,
पिया जग में कहो न्याय करे कुण, जो होवे राय अन्याई जी।।३।।
जो विरक्त रस भाव विशेषे तो क्यों जान बणाई जी
पशुवन के सिर दोष दई गए, ये लागी कपटाई जी ।।नि।।४।।
तुमने सीख दिये कहो कैसी, कहलां होवे लघुताई जी,
सब सज्जन की सी रही सूधी, क्या देखी चतुराई जी ।।नि।।५।।
नेम बिना तो नेम जिहां लग, प्राण रहे घट मांहीं जी,
सज्जन भाव करी तुम सेती, कहुं छु वचन दुःखाई जी ।।नि६।।
एर समोरस बयणे गायो, ताकी ए अधिकाई जी
'रतनचन्द' कहे धन्य सतवंती जगत गिणयो सद्गु भाई जी।।नि७।।

( ५ )

## राजमती प्रार्थना

( तर्ज—काफी होली री )

नेमीश्वर मुझ अर्ज सुणीजे,
वालेसर मुझ अर्ज सुणीजे ४ ॥ने॥टेर॥
घर में हाण लोक में हांसो, एहवो काम न कीजे,
किम आए किम फिर गए पाछे, इनको उत्तर दीजे ॥ने॥१॥
त्याग तणो फल उत्तम जाणी, तिणसुं संजम लीजे,
मांग गयां सहु महातम बिगड़े, सो गिणती न गणीजे॥ने॥२॥
पशुअन पीड़ दया दिल धरने, जिण सुं रथ फेरीजे,
तो हूं अबला भूलूं अलवेसर, तिणरी गिणत न कीजे ॥ने॥३॥
अबला आश निराश किया सुं, छिनक छिनक तन छीजे,
निर्मोही के मोह न व्यापे, किणने जाय कहीजे ॥ने॥४॥
राजल एम विलाप कियो अति, मुख सुं कह्‌ न सकीजे,
'रतन' जतन सुध नेम निभायो, जिणसुं कीरत कीजे ॥ने॥५॥

---

( ६ )

## शांतिनाथ प्रार्थना

( तर्ज—प्रभाती )

प्रात ऊठ श्री शान्तिजिणंद को सुमिरन कीजे घड़ी घड़ी॥टेर॥
संकट कोटि कटे भवसचित, जो ध्यावे मन भाव धरी ॥१॥

जन्मत पाप जगत दुख टलियो, गलियो रोग असाध्य मरी
घट घट अंतर आनन्द प्रगट्यो, हुलसियो हियडो हरष भरी॥२॥
आपद व्यंत्र पिशुन भय भाजे, जैसे पेखत मृग हरी*
एकण चित शुभ मन ध्याता, प्रगटै परिचय परम सिरी ॥३॥
गये विलाय भ्रम के बादल, परमारथ पद पवन करी
अवर देव एरंड क्या रोपे, जो मन्दिर गुण-फल फली ॥४॥
प्रभु तुम नाम बस्यो घट अन्तर, तो सु डरिए कर्म अरी
रतनचन्द' शीतलता व्यापी, पातक ताप अमाप टरी ॥५॥

---

( ७ )

## शान्तिनाथ स्तुति

( तर्ज—प्रभाती )

तू धन तू धन तू धन तू धन शान्ति जिनेश्वर स्वामी
मिरगी मार निवार कियो प्रभु, सर्व भयो सुख गामी ॥१॥
अवतरिया अचलादे उदरे, माता साता पामी
शांति शांति जगत वरताई, सर्व कहे सिर नामी ॥२॥
तुम प्रसाद जगत सुख पायो, भूले मूढ हरामी
कंचन डार कांच चित दये, वाँकी बुद्धि में खामी ॥३॥

---

*सिंह।

अलख-निरंजन मुनि-मन-रंजन, भयभंजन विसरामी
शिवदायक लायक गुण खायक वायक है शिव गामी ॥४॥
'रतनचंद' प्रभु कछुअ न माँगे, सुन तू अन्तरयामी
तुम रहवन की ठौर बता दो, तो हूँ सहु भर पामी ॥६॥

---

## ( ८ )

## वीर वाणी

( तर्ज—राग काफी )

वाणी थारी वीरजी, मीठी म्हाने लागे हो ॥टेर॥
गणधर वाणी सुणी निज श्रवणो*, उभा ही घर त्यागे हो ॥
वा ॥१॥
मोह मिथ्यात्व की नींद अनादि, सुण सुण वाणी जागे हो,
मोह महीपत चोर लुटेरो, सो तो तत्क्षण भागे हो ॥वा२॥
रागद्वेष अनादि तणो मल, भरियो पूरण अथागे हो,
सो तुम वेण ओषध सुं तत्क्षण, निर्मल हुवे महाभागे हो
वा ॥३॥
ठाकर सबल जाणने चाकर, 'रतन' अमोलक मांगे हो,
इधकी रीझ रही अलवेसर, राखीजे निज सागे हो ॥वा४॥

---

*कानों से।

( ६ )

## जिनवाणी

म्हान अमिय समाणी लाग र जीव, श्री जिनवाणी ॥टेर॥
श्री जिनवाणी अमृत वाणी, परम पीयूष* समाणी रे जीव श्री॥१॥
क्रोध कषाय की लाय बुझावण निर्मल अमृत पाणी रे जीव श्री॥२॥
ज्ञान ध्यान शीतलता व्यापी, रोम रोम हुलसाणी र जीव श्री॥३॥
रोग असाध्य विषम ज्वर मटन, अमृत अहीय प्हाणी(समाणी) र जीव श्री॥४॥
करम मरम की घटिय विषमता, मन की तपत मिटाणी र जीव श्री॥५॥
अक्षय खजानो अगणित दौलत, घट ही में प्रकटानी र जीव श्री॥६॥
'रतनचन्द' धन्य सतगुरु वाणी घट गई दुमत पुराणी र जीव श्री॥७॥

---

*अमृत।

( १० )

# सच्ची आशा

एक आश भली जिनवर की ॥टेर॥

छांड़ कृपानिधि करुणा-सागर, कुण करे आश अवर की।
एक ॥१॥

अमृत छांड विषय जल पीवे, ज्यांकी अकल हिया की सरकी
टुक भर महर हुवे जिनजी की, तो पदवी देय अमर[1] की
एक ॥२॥

सूकर[2] कूकर[3] टुक के कारण, सेरी तके घर घर की
पेट भरे, न मिटे मन तृष्णा, अन्तर लाय फिकर की॥एक३॥

कुण पितु मात पिता भ्रात (सुत) जोरू, किणने लड़का लड़की
जम के द्वार तणां अगवाणी, तूं खोल हिया की खिड़की
एक ॥४॥

कृपा होय मो पर जिनजी की, निज संपत आकर[4] की
"रतनचन्द" आनंद भयो अब, चाह घटी पुद्गल की
एक ॥५॥

---

१ देवता २ गदसुग ३ कुत्ता ४ खजाना

## ( ११ )

## राजुल पुकार

( तर्ज—राग काफी )

इम किम छोड चले मोय, साहब दीन दयाल ॥टेर॥
छप्पन कोड यादव मिल आये, लाए आन रसाल ॥इम१॥
हिए हार कानों बिच कुंडल, गल मोतियन की माल॥इम२॥
सांवली सूरत मोहनी मूरत, इन्दचंद रया माल ॥इम३॥
देख पशुवन दया दिल उपनी, रथ फेरयो तत्काल ॥इम४॥
राजुल सुण मुरछागत पामी, जिम छेदी चम्पक नी डाल
॥इम५॥
सखी सहलियां लागी समझावी, राजुल पडीए जंजाल
॥इम६॥
खिण उठे, बैठे, खिण लोटे, खिण नभ[1] खिण पाताल[2] ॥इम७॥
बिन ओगुण मोय किम छिटकाई, बिलविले राजुल बाल
॥इम८॥
सखी कहे इम किम मुरझावे, अपर अपर[3] थाल ॥इम९॥
आप कथिर न ग्रहया करे इम, "रतन" अमोलख लाल॥इम१०॥
सहस्र पुरुष सु संजम लीधो, हुआ पद् आप प्रतिपाल
॥इम११॥

---

१ आकाश    २ पाताल    ३ के

घणी सखियां सु राजुल चाली, भेट्या जाय कृपाल ॥इम१२॥
नेम कंवर राजुल शिव पहुँच्या, जन्म मरण दुःख टाल॥इम१३॥
"रतनचन्द" धन्य नेम जिनेश्वर, पाय वन्दु त्रिकाल॥इम१४॥
पूज्य गुमानचन्दजी गुरु पाया, फलिय मनोरथ माल॥इम१५॥

---

( १२ )

## सतगुरु सेवो

सतगुरु मत भूलो एक घड़ी २ ॥टेर॥
बोध बीज भयो घर अन्दर, जीव अजीव री खबर पड़ी॥सत१॥
क्रोध कषाय री लाय बुझावण, दीधी एक संतोप जड़ी॥सत२॥
संजतिराय भेट्या सतगुरु ने, ततक्षण त्यागी राज सिरी॥सत३॥
पापी पूर हुतो परदेशी, केशी तार्यो हर्ष धरी ॥सत०४॥
"रतनचन्द" कहे सतगुरु सेवो, जो थे चावो मुगतपुरी ॥सत५॥

---

( १३ )

## गुरु दर्शन

आज नेण भर गुरु मुख निरख्यो, हर्ष हुवो मन मारो ए
माय ॥टेर॥
रोम रोम शीतलता व्यापी, उपसम रस नो क्यारो ए माय
आज ॥१॥

गुण भरियो दरियो सुख सागर, नागर नवल उजारो ए माय
पूरण गुण कह सके न सुरगुरु, जो होवे जीभ हजारो ए माय
आज ॥२॥
कामधेनु चिन्तामणी सुरगुरु, पुद्गल सर्व असारो ए माय
ऐसी चीज नहीं इण जग में, करिये गुरु मनुहारो ए माय
आज ॥३॥
मूल मिथ्यात अनादि वसी मर्म, घट में घोर अंधारो ए माय
परम उद्योत कियो इक छिन में प्रकट वचन दिनकारो ए माय
आज ॥४॥
क्रोध कषाय परम दावानल, भरीयो विषय विकारो ए माय
परम अहलाद कियो इक छिन में, वरस सघन घन धारो
ए माय ॥ आज ॥५॥
परम ज्योत प्रकटी समता की, हुओ हर्ष अपारो ए माय
निज गुण अचय सम्पत आकर्षी, यो मन गुरु उपकारो
ए माय ॥ आज ॥६॥
प्रेम प्रसाद कियो मुझ ऊपर, हूँ होतो निरधारो ए माय
थाकर वाख समग्र रिध सौंपी, छोड्यो, सर्व संसारो ए माय
आज ॥७॥
पूरण उदय हुवे इम गुरु सु, आगम में अधिकारो ए माय
गुरु पद कमल धरो शिर ऊपर, जो चावो निस्तारो ए माय
आज ॥८॥

मोती सा मलिन खांड सा खारा, आतम सम अपियारो ए माय
अल्प कर्मी गुण कर कर हर्षे, निरखे नहीं य गिवारो ए माय
आज ॥६॥
एक जीभ सूं गुण कुण गावे, कर कर बुध विस्तारो ए माय
"रतनचंद" कहे गुरु पद मुझ शिर, क्रोड़ क्रोड़ हूं वारो
ए माय ॥ आज ॥१०॥
आज नेण भर गुरु मुख निरख्यो, हर्ष हुवो मन मारो ए माय

---

( १४ )

## पार्श्वनाथ स्तुति

( तर्ज—रिडमल री देसी )

वामानन्दन पार्श्व जिनदजी प्रभूजी सेवे थांने सुरनर वृन्द ।।टेर।।
संयम लेई ने वन में आविया हो, हां ए दर्शन देवरो हे
हिया नो सेवरो हे पारसनाथ ।। हां ।।१।।
कोप्यो कमठ अति विकराल जी प्रभूजी आयो जहां दीनदयाल
हे काली काठल कर आभो छावीयो हे ।। हां ।।२।।
गाजे बादल विज चमकत, मेघ अखंडित धार वरसन्त
नदियां पुराणी पाणी मावे नहीं हे ।। हां ।।३।।
जल कर ढाकी प्रभूजी नी देह, तो पिण वरसत नहीं रहे मेंह
है मेरू अचल जिम मनसा स्थिर रहे हे ।। हां ।।४।।
धरणेन्द्र पद्मावति आविया लिधा थांने शीस चढाय

नाटक करती निरखे हर्ष आनन्द सु है ॥ हां ॥५॥
करतो कमठ आय लागो पांव जी श्री जिन धरबे शीस नवाय
भव भव संचित पाप निकंद सु है ॥ हां ॥६॥
तिणने दियो निर्मल ज्ञान जी, किधो आप इन्द्र समान
है हूं थाका चरणां रो चाऊ चाकरी है ॥ हां ॥७॥
लोहन करदे कनक¹ समान, वे पारस जग मांही पाषाण
हेतु पारस कर देव पदवी आखरी है ॥ हां ॥८॥
चिन्तामणी सु पारस रूप, मेटो म्हारा भव जल कूप
ह जग दु खां सु सेवक ने तारजो रे ॥ हां ॥९॥
गिरवा सागर गुणा रा गंभीर, राखो म्हाने चरणां री तीर
है 'रतनचन्द' री अब अब धारजो रे ॥ हां ॥१०॥
पाली में किधो सुख चोमासजी, पाम्या सहु हुल्लास जी
पे सवत अठारा ने वर्ष विहोतरे है ॥ हां ॥११॥

---

## ( १५ )
## नेमनाथ स्तुति

( तर्ज—थारी तो नीरू थर हा पणची रे, थाकी नागरवेल )

समुद्र विजय जी रा लाडला हो प्रभुजी यादव कुल सिणगार हो
सुखकारी जी, हांजी थां परनारी जी सांवरिया सायब
म्हारो है प्यारो प्राण अधार ॥टेर॥

---

१ सोना

तज राज संयम लियो हो प्रभूजी,चढ़िया गढ़ गिरनार ।।सु१।।
राजल मन इम चिन्तने हो प्रभूजी, एह वो लून न कियो होय
किम आव्या किम फिर चल्या जी हो प्रभुजी, येह अचरच
छः मोय ।।सु२।।
आशा अलुफी सखी हूँ रही हो प्रभुजी, गई मनोरथ माल हो
विन गुनहे वनिता तजी हो प्रभुजी थाजो छो दीन दयाल हो
।।सु३।।
संयम ले गिरवर चढी हो प्रभुजी, प्रतिबोध्यो रहनेम हो
कर्म खपावी सिद्ध गती लही हो प्रभुजी, पूर्ण किधो प्रेम।।सु४
मुगत वधु साहब वरी हो प्रभुजी, किरत रही जग छाय
"रतनचन्द" करे वन्दना, निचो शीस नवाय ।।सु५।।

---

( १६ )

## सद्गुरु वाणी

( तर्ज—रमो २ हे चले फड्या फुदा री डोरी )

मीठी अमृत सारखी सतगुरु की वाणी, उपजे हर्ष अपार
वारी हो सतगुरु की वाणी निर्मल धर्म दिखावियो मेट्यो
मिथ्यात अंधकार ।।वा१।।
शीतल चन्दन सारखी,सद्गुरु की वाणी, निर्मल खिरोदक नीर
काल अन्नते अद्ध ही सद्गुरु की वाणी, मेटी मित्था मत पीर
।।वा२।।

माईके रमधा गयो, सतगुरु की वाणी, मेट्या हो श्री मुनिराज
वाणी सुण वैरागियो, सतगुरु की वाणी, दीधो जग छिटकाय्या ॥वा३॥
पापी परदेशी हुँतो, किया जिन पाप अनेक
केशी गुरु मेट्या थका, सतगुरु की वाणी, पायो पूर्ण विवेक ॥वा४॥
चोर चिलापती चालियो, सतगुरु की वाणी, जिण छेद्यो कन्या रो शीस
वन में गुरु उपदेश थी, सतगुरु की वाणी, मेटी छिन मन री रीस ॥वा५॥
इन्द्रभूती अहंकार जी सतगुरु की वाणी, आया श्री वीर ने पास
संजम छेदी छिनक में सतगुरु की वाणी दीधो शिव ने मुक्ति आवास ॥वा६॥
मेघ मुनि मन डोलियो, थाम्यो चारित्र ने शूर
वीर वचन सुण बुझियो, सतगुरु की वाणी, हुवो सत्यवादी शूर ॥वा७॥
एम अनेक उधारिया, सतगुरु की वाणी, जिणरी आगम में साख
संगत शिव सुख दायनी, सतगुरु की वाणी, सुणिए मन ने दृढ राख ॥वा८॥
रूपनगर में विहोचरे, सतगुरु की वाणी आयो हो सेखे काल
"रतनचन्द" आनन्द में, सतगुरु की वाणी, किधी आढाल रसाल ॥६॥

( १७ )

# श्री चन्द्रप्रभ स्तुति

( तर्ज—बडे घर ताल लागी रे )

चन्दा प्रभु मो मन भावे रे, दूजो देव दाय न आवे रे ।।टेर।।
चंदपुरी नगरी भली रे, महासेण राय उदार ।
लिखमा राणी दीपती, ज्यांरी कूख लियो अवतार ।।चदा१।।
संसार ना सुख भोगवी रे, जाण्यो ससार असार ।
मन वैरागज आणनै, प्रभु लीधो सजम भार ।।चदा२।।
चंद आनंद सदा करे रे, पातिक जावे दूर ।
चद भजे संसार तीरे तो, जावे कर्म अंकुर ।।चंदा३।।
सुर नर असुर विद्याधरूरे, इन्द्र करे जांरी सेव ।
मोटा राणा राजवी ज्यांने, नमे असंख्याता देव ।।चदा४।।
अवर देव घणा देखिया, जठे घणा जीवां री घात ।
कहोजी कांकरो कुण लहे, ज्यांरे लागो चिन्तामणी हाथ।।चदा५
वाणी अमृत सारखी, जाणे खीर समुद्र को नीर ।
वाणी सुण हिया में धरे तो, उतरे भवजल तीर ।।चंदा६।।
चन्द्र सरीखो को नहीं, मैं जोयो सरब संसार ।
और डूबावे संसार में जी, मोने चंद उतारे पार ।।चंदा७।।
चंद प्रभु सरण आवियो, हाथ जोड़ करूं अरदास ।
किरपा करी सिव दीजिये, "रतनचंद" तुमारो दास ।।चंदा८।।

पूज्य गुमानचदजी गुरु मेरिया, गयो पाम्यो हरक हुलाम ।
समत १८५० मों कियो सापपुर शहर चौमास ।।पदा६।।

## ( १८ )
## श्री शीतलनाथ स्तुति
( तर्ज—करलला गीत नी देशी )

श्री शीतल जिन सायबा जी सुन सेवक अरदास ।
शिवदाता विरद तादरो सो दो शिवपुर वास ।।
जिनेश्वर वंदियेजी पोह ऊगंते सर जिनेश्वर वंदियेजी २ ।
पामे परमानंद जिनेश्वर वंदियेजी दुख टल जावे ।।
दूरक पाप निकंदिये जी, पामे सुख भरपूर जिनेश्वर वंदियेजी।।टेर।।
छेदन भेदन तर्जना जी, मैं तो सही अनन्त ।
इण दुसमी आरे आयने, अब भेट्या भगवन्त ।।जि०१।।
थारो श्री जिनराय जी, टालो म करो कोप ।
केवे सम्पो किम छूटसी जी, हिये विमासी जोय ।।जि०२।।
जैसे चन्द्र चकोर सु-जी, मेंह मगन जिम मोर ।
तुम गुण हृदा में बसे हैं, नितप्रत करू निहोर ।।जि०३।।
काम भोग नी लालसाजी, फिरता न भरे मन ।
पिण तुम भजन प्रताप थी, दासे दुरमतिवन ।।जि०४।।
लोह अडे पारस अडजी, सोनो न हुवे तेह ।
लोहनो सु बीगडे पिण, पारस पडे संदेह ।।जि०५।।

चिंतामणि संग्रहाजी, नर सुखियो नहीं होय ।
जद मनमें शंका पड़े, ओ रतन न दीखे कोय ।।जि०६।।
निशदिन सेवा सारता जी, साम सारे जो काम ।
जिणरी इधकाई किसी, पिण हुं तार्यां को नाम ।।जि०७।।
सेवक साहब ने कयांजी, काम न सारे कोय ।
चाकर ने सुमेहणी, पिण मोटा ने होय ।।जि०८।।
बालक जो हट ही करे, जी तो हारे माईत ।
हूँ बालक तुम आगले, बोलु छुं इण रीत ।।जि०९।।
चेतन तु ही तारसी जी, तुम परमेश्वर रूप ।
पिण प्रभुना गुण गावता जी, प्रगटे निज स्वरूप ।।जि०१०।।
संवत अठारे पंचावने जी मेदनीपुर मुझ ठोर ।
पूज्य गुमानचंदजी प्रसाद सें,"रत्न"कहे कर जोर।।जि०११।।

---

( १९ )

## श्री महावीर स्तुति

( तर्ज—निंदड़ली बैरण )

सुज्ञानी नर वंदो श्री महावीर ने, जिनराज ।।टेर।।

हांजी प्रभु चम्पानगर समोसरया, जिनराज,
हांजी थाने कोणक वंदन जाय ।
हांजी प्रभु नरनारी मेला थया, जिनराज,
हांजी थांरे लुल लुल लागे छे पाय ।।सु१।।

प्रभुजी रो आनन[1] नयन[2] निरखिय, जिनराज,
हांजी काई सरद पूनम को चंद ।
हांजी प्रभु भविक चकोर विकसे हियो,
जिम भवरो पिये मकरंद[3] ॥सु२॥
प्रभुजी रा नयन कमल दल पांखड़ी, जिनराज,
प्रभुजी री कनक बरण[4] सम देह ।
हांजी प्रभु शुभ पुद्गल सहु जगत ना, जिनराज,
हांजी काई खांच लिया सहु तेह ॥सु३॥
प्रभुजी रे चांवर चार चारू ढिले, जिनराज
हांजी थारे छत्र रया सिर छाय ।
हांजी प्रभुजी इन्द्र नरेन्द्र सुख आगले, जिनराज
हांजी काई चाकी खुली म गुलाब ॥सु०४॥
प्रभुजी रा शिष्य मुक्ताफल सेहरा, जिनराज
हांजी केई गुण रत्नारा निधान ।
हांजी केई पूरबधर दृष्टि धरा, जिनराज
हांजी कोई पाम्या है केवलज्ञान ॥सु५॥
हांजी प्रभु नायक लायक तुम भला, जिनराज,
हांजी काई टाल दे वैर विरोध ।
हांजी भव भव तपत मिथ्यपणा, जिनराज
उपनो है प्रबल पयोद[5] ॥सु६॥

---

१ मुख २ नेत्र ३ फूलों का रस ४ सोना ५ मेघ

प्रभुजी ने देख देख हरषे हियो, जिनराज
हांजी थांरी सांभल अमृत वाण ।
प्रभुजी रे गणधर गौतम नित कने, जिनराज
हांजी थारा वचनारे परमाण ।।सु७।।
प्रभुजी थे श्रेणिक ने कर दियो सारखो, जिनराज,
मेघ[1] ने लियो समझाय ।
प्रभु थाने दुःख दिया, ज्याने तारिया, जिनराज
हांजी थारी महिमा रही महकाय ।।सु८।।
हांजी प्रभु हूँ चाकर चरणां तणो, जिनराज
हांजी तुम सम मिलिया नाथ ।
हर्ष आनंद हुओ घणो जिनराज
हांजी जिम बिछड़ियो मिले निज साथ ।।सु९।।
प्रभुजी रो वर्णन उवाई उपांग में, जिनराज
हांजी थारा गणधर किया गुण ग्राम ।
"रतनचन्द" गुण गाविया, जिनराज
हांजी कांई भडलू ग्राम मझार ।।सु१०।।

---

१ श्रेणिक के सुपुत्र मेघकुमार

## ( २० )

# भगवद् वन्दना

( तर्ज—म्हारा मोहे जाी गा बाप्पो )

भवजीवां हो वन्दो भगवन्त ने ॥टेर॥

दोष अठारा परिहरे, ते आप्यो हो एक देव जगदीश ।
पूर्व पुण्य प्रकाश सु, ज्यांरे हुवे हो अतिशय चौतीस॥भव१॥
रोग रहित जिनवर हुवे, माम लोही हो चले मधुर सफेद ।
आहार निहार दीसे नहीं, सासोस्वास हो चले सुरभि[1] देह ॥
॥भव२॥
ये अतिसय गृह धाम में, कर्म चूरिया होय जे प्रकटे इग्यार ।
योजन क्षेत्र मांहो रहे, कोड़ा कोड़ी हो सुर-खग[2]-नरनार ॥
॥भव३॥
रोग वैर दुर्भिक्ष मरी, नहीं होवे, हो चले साढ़ू ईत ।
अल्प वर्षी निरना नहीं, स्वचक्र परचक्र भीत ॥भव४॥
ए नव न हुवे सौ कोस में, सहु समझे हो आपरी भाषा ।
घनघाती कर्म क्षय किया, अतिशय हो एकादस भाषा ॥भव५॥
चक्र–चामर सिंहासने, तीन छत्र हो भाम करे अहङ्कार ।
कनक-कमल मामंडले, गढ तीने हो सुर-दु दु भि नाद॥भव६॥

---

१ सुगन्ध  २ पक्षी

सिर अशोक सुहावणो, पूठ लारे हो हुवे वाय सुवाय ।
पंखी करे प्रदक्षिणां, छहुँऋत हो वरते सुखदाय ॥भव७॥
पाखंडी क्रिष्ट होई नमें, फूल पाणी हो वरसे निर्जीव ।
कंटक सहु ऊंधा पड़े, ऐसी दीधी हो शुभ पुण्यरी नींव॥भव८॥
नख केश अशुभ वधे नहीं, सुर पासे हो थोड़ा तो एक क्रोड़ ।
ये उगणीस पुण्य प्रकृत्यां, सब मिलिया हो चोंतीस ॥भव९॥
गुण पेंतीस वाणी तणां, शुभ लक्षण हो एक सहस्र ने आठ ।
पुद्गल-छवि सुखकारणी, प्रभु संच्या हो बहुपुण्य रा ठाठ ॥
॥भव१०॥
निज-गुण अलख लखे नहीं, भववासी हो समझे व्यवहार ।
नियत न्याय कर निरखतां, जिन न्यारा हो पुद्गल विस्तार ॥
॥भव११॥
कारण सूं कारज हुवे, भवि पावे हो निरखी प्रतिबोध ।
भक्तवच्छल जिनराजजी, सहु मेटे हो प्रभु वैर विरोध॥भव१२
अष्टादश बहोतरे, चोमासो हो कीधो अजमेर ।
"रतनचन्द" करे विनती, म्हारा दीजो हो प्रभु कर्म निवेर ॥
॥भव१३॥

( २१ )

## महाविदेह महिमा

( तर्ज—मिजुड़ा री देशी )

हो सुखकारी हो जिनजी, धन धन क्षेत्र विदेह ॥टेर॥

आप विराजो आजे अत्र सुहावणो रे लाल, वाणी अमिय भरेय,
मानो पावस रितु ना बादल बरसना रे लाल, मिलिया सुर
नरनार ॥हो१॥
देवांगना मिल गाव धवल मनोहरू रे लाल, नाटक ना
झनकार हो ।
केसर क्यारी खिल रही, हर्ष सहु धरे रे लाल ॥हो२॥
सिर पर वृक्ष अशोक हो सु० षड्रितुनो सुखदायक वाय
झकोरतोरे लाल,
सुर सब आवे देवलोक हो मु० मूल मिथ्यात्व नो दम
दिया नो खोलवा रे लाल ॥हो३॥
भी मन अधिक उच्छाह सुखकारी० वाणी सुधा-रस पिऊ इम
भरी हियो रे लाल,
मेटू भव भव दाह, हो सुखकारी० एह मनोरथ फलशी लेखे
अब जिणो रे लाल ॥हो४॥
धन धन से नरनार हो सुखकारी० दरशन देखी इम करी
नेतर भरे रे लाल,

भव निध अगम अपार हो सुखकारी,
तुमची आण प्रमाणकरी छिनमें तिरे रे लाल॥हो५॥
जग तारण जिनराज हो सुखकारी,
म्हारी विरिया आलस साहेब किम करो रे लाल।
६ राखो अविचल लाज हो सुखकारी,
परम कृपाल दयाल भरोसो आपरो रे लाल॥हो६॥
"रतनचन्द री अरदास हो सुखकारी,
चरण समीपे राखो तो सफली चाकरी रे लाल।
दीजो शिवपुर वास हो सुखकारी,
चन्द चकोर ज्यूं चाऊं सेवा आपकी रे लाल॥हो७॥

---

( २२ )

## श्री पार्श्वनाथजी का स्तवन

पास प्रभू आस पूरो, देवो शिवपुर वास ॥ टेर ॥
त्रास गर्भावास मेटो, हूँ चरणारो दास
उठत बेठत सोवत जागत, बसरह्या हृदय मझार, माने ॥ १ ॥
मात तात अरु नाथ तूंही, तूं खाविंद किरतार।
सज्जन वल्लभ मित्र तूंही, तूंही तारणहार प्रभु ॥ २ ॥
कई पर्वत पहाड रु खाल तरवर, सरवर न्हावत गंग।
माने तो तन मन वचन करने, एक तुमसूं रंग माने ॥ ३ ॥

हूँ मतहीन लेलीन जगमें, पुद्गल ने परपंच ।
अनगुण भरियो देख साहिब, आप मांही संच । माने ॥४॥
भवसागर में बहुविध भटक्यो, पुद्गल पूर अनेक ।
छेदन भेदन बहुत पामी, अब तो साम्हो देख । माने ॥ ५ ॥
शरण आतां जेश कितनी, जो साहिब शिर हाथ ।
लोह कंचन होत छिनमें, फरस्यां पारसनाथ । माने ॥ ६ ॥
काष्ठ फाडी नाग काढ्यो, सम्भलायो नवकार ।
धरणीन्द्र पद्मावती हुवो, ओ प्रभुनो उपकार । माने ॥ ७ ॥
गरीबनवाज बिरुद ताहरो, ताहीजो महाराज ।
सेवक निज शरण आयो, आपने अब लाज । माने ॥ ८ ॥
कमठमान भंजन सुखदाता, भय-भंजन भगवंत ।
"रतनचन्द" करजोड विनय, नीचो नमावी शीष । माने
॥ ६ ॥

---

( २३ )

## सांवलिया सु प्रार्थना

सांवलियो साहब सुखदायक, सुणजो अर्ज हमारी ॥ टेर ॥
जगमागर करागर सरिखो, शिवसेती मोप) सारी ॥ १ ॥
ननमत नयन कमल दल निरखी, हर्षी है महतारी ।
पिता परमसुख पायो प्रभुको, सूरत मोहनगारी ॥ २ । सा ॥

जोबन वयमें जोर दिखायो, विस्मय थयो [1]मुरारी ।
सब सज्जन मिल व्याह मनायो, मोह दशा मनधारी ॥सा ३॥
व्याह विरुद्ध मे जीव छुड़ाए, तरी राजुल नारी ।
सहस्त्र पुरुष से संजम लीनो, आप रहे ब्रह्मचारी ॥सा० ४॥
प्रजन सात्र कुंवर को तारी, आठ कृष्ण की नारी ।
पांडव पांच को लिया उवारी, जादव वंश सुधारी ॥सा० ५॥
सहस्त्र अनेक पुरुष निस्तारी, पहुंता मुक्ति मझारी ।
"रतनचन्द" कहे अबतो आई, आज हमारी बारी ॥ ६ ॥

---

( २४ )

## मैं चाकर प्रभु तेरो

सांवलियो साहिब है मेरो, मैं चाकर प्रभु तेरो ।
भवसागर में बहुविध भटक्यो, अब तो करो निवेरो
॥ सा० १ ॥
आठ कर्म मोय विकट दबायो, दियो झटक घन घेरो ।
साहिब मेहर नजर कर मोपर, वेगी आप विखेरो ॥ २ ॥
चौरासी की फांसी गालो, टालो भव भव फेरो ।
सेवक ने साहिब हिवे दीजे, मुक्ति महल मे डेरो ॥ ३ ॥
भोलो हंसराज नहीं समझे, देत है काल दरेरो ।

---

१ कृष्ण

अविचल सुखरी चाह करे तो, ले शरणो जिन केरो ॥४॥
जगमें नाम चिन्तामणि तेरो, सो मैं काढ्यो हेरो।
"रत्नचन्द" कहे नित नित जिनको लीजे नाम सबेरो ॥५॥

---

( २५ )

राग —गुजराती गीत

प्रभुजी थारी चाकरी रे ॥ टर ॥

श्री अभिनन्दन स्वाम न रे, सिंघरू शिव रमणीरा कन्त।
इन्द्र चन्द्र आनन्द सु रे, हाजिर रहे एकत ॥ प्रभुजी १ ॥
सुर नर असुर विद्याधरो, हांरे सबै श्री जिनवरजी रा पाय,
प्रभु जी
आमुरन-चन्द्र विलोकने रे, हांरे रहे नेण कमल लोभाय
॥ प्रभुजी २ ॥
आनन्दघन जिनराज जी रे, बरसै अमृत निर्मलवान
प्रभुजी
मोघरथ शुद्ध प्रकट र, हांरे रह नेण कमल लोभाय
॥ प्रभुजी ३ ॥
भव भव भटकत भटिया रे, तिरण तारण जिनदेव, प्रभुजी
भव भव भाहिर दीजिए, हांजी चाई तुम चरणांरी सेव
॥ प्रभुजी ४ ॥

शिव सुख दायक सायबा रे, हांजी थे तो तीन भवन सिर
मोड़ प्रभुजी
चरण समीपे राखजो रे, हांजी प्रभु "रतन" कहे कर जोड
॥ प्रभुजी ५ ॥

---

( २६ )

## चरण शरण में

तर्ज—जैवतीनी देसी

प्रभुजी दीनदयाल, सेवक शरणे आयो ॥ टेर ॥
भव सागर में बहुविध भटक्यो, अब मैं छेडो पायो
॥ प्र० १ ॥
क्षेत्र विदेह विराजे स्वामी, श्रीमन्धर स्वामी,
हूँ चरणे आवी नहीं सकतो शूं छे मुज में खामी ॥प्र० २॥
निज चाकर निभाव करणने, सहु जन दीसे वाला,
सेवक ने सायब नहीं तारे, इम वरते अवहेला ॥ प्र० ३ ॥
शुक्ल पक्षी गंठी भव भेदी, जद तुम दरशन रुच जागी,
रात दिवस सुपनान्तर मांही, तुम सेती लिव लागी ॥प्र०४॥
कुगुरु कुदेव कुधर्म नी लिवल्या, हिवे सर्वथा में तोड़ी
तारक देव सुणी तुम सेती, पूरण प्रीत मैं जोडी ॥प्र०५॥
हूँ जड़ आतम कारज संगी, पुद्गल सूं बहुप्रीत,

पिया सोनो करे पृथ्वी थी, चतुर कारीगर रीत ॥प्र०६॥
वारि बिंदु पड़े कदल-पत्रे, लहके मुक्ताकार,
त पराक्रम नहीं श्रोम बिंदु में, 'रस-पत्र उपकार ॥प्र०७॥
तेहज सूत्र पड़े 'पदया नहीं, त मिर सेहरो सोहे,
ते पराक्रम नहीं रूत-सूत्र नो, माली महिमा मोहे ॥प्र०८॥
नीर असुच पड़े गगा में, ते गंगोदक बाजे,
हूँ अवगुण दरियो पूरण भरियो, पिया मेटयो जिनराज ॥प्र०६॥
व्यसन इन्द्री करम ने भेदी, आरम सम्वत (१८७५) सुहावे,
पूज्य गुमानचन्दजी प्रसादे, 'रतनचन्द' गुण गावे ॥प्र०१०॥

१ कदली पत्र २ सूत।

( २७ )

## राजुल विलाप

तर्ज —भैरवी

रहो रहो रे सांवलिया साहिब, बोलत राजुल राणी ।
बिन परनारय छोड़ चले मोय, प्रीत तुम्हारी जाणी
॥ रहो० १ ॥
बहुत बरात बनाय के आये, साथ 'सारंग-पाणी ।
तोरण सु रथ फेर चले जब, आदम मान सुजाणी
॥ रहो० २ ॥
सहु की आशा करी निराशा, एमी बात सयाणी ।

१ बल भद्र

पशुअन के सिर दोष दियो पीण, काढी रीश पुराणी

॥ रहो० ३ ॥

रही मनोरथ-माला मनमें, इम उभी पिछताणी ।
तुम छोडी पिण में नहीं छोडू, ए हमची अधिकाणी

॥ रहो० ४ ॥

किये विलाप अनेक विविध पर, मोह दशा मन आणी
धन धन नेम जिनेश्वर साहिब, राख्यो [1]मन्मथ ताणी
नेम संजम सुण लीधो संजम, पामी पद निर्वाणी ।
"रतनचन्द" कह धन सतवंती, अविचल प्रीत मडाणी

॥ रहो० ६ ॥

---

१ काम

---

( २८ )

( तर्जः— निजर हजो ए देशी )

वीरजी सुणो ॥ टेर ॥

त्रिशला-नंदन साहिबा, सांभल दीन दयाल ।
विरद विचारी ने किजिये, सेवक नी संभाल ॥ वी० १ ॥
आप अपना दासनी, सहु कोई पूरे आश ।
मैं शरणो लियो आपरो, करसो केम निराश ॥ वी २ ॥
दुःख देई थांने तिरिया तो हूँ तो जोरी रह्यो हाथ ।
दर्शन किम देस्यो नहीं, आ अचरज की वात ॥ वी ३ ॥

नयणे मैं निरख्या नहीं, रही मोटी अन्तराय । श्री ॥
रागद्वेष माहरे कने मिलसुन दे महाराय ॥ श्री ॥ ४ ॥
पण सुनजर साहिब तणी, ये स्यूं करसी कगाल । श्री ॥
मन मान्या मेह वरषतां, जावे दूर दुष्काल ॥ श्री ॥ ५ ॥
कजली वन नहीं वीसरे, जठों रहयो गजराज । श्री ।'
इण विध हूं परवश पड्यो, पिण चित चरणां रे मांय । श्री ॥
६ ॥
पिण पुद्गल परचो गणो, निज गुण सु विपरीत । श्री ॥
निरमल विन तू नहीं मिले, मैं जाणी म्हारी रीत ॥ श्री
॥ ७ ॥
क्यूं पराक्रम सबक तणो, क्यूं साहिब नो साथ । श्री ॥
गरीब अनाथ ल निरखहा, थे छो गरीबनवाज ॥ श्री ॥ ८ ॥
मात मात अरजा करी, कर कर मन विश्वास । श्री ॥
महरवानगी अधिकी नहीं, पिण आणजो आपरो दास ॥ श्री
॥ ९ ॥
चरण समीप राखजो, मैं अरपाया सहु थोक । श्री ॥
दुखल-भूत तो बाहले, गजी बड़े सहु लोक ॥ श्री ॥ १० ॥
जाधाणा में पमर आय लियो विश्राम ।
'रतनचन्द्र कहे वीरन, कोड़ां कोड सलाम ॥ श्री ॥ ११ ॥

( २९ )

## समवसरण महिमा

( तर्ज—श्री गोतमस्वामी में गुण घणा )

जिनराज सदा ही वंदिए ॥ टेर ॥

श्री सिद्धार्थनन्दजी प्रभु भगवन्त श्री महावीर
उपसम संजम आदरिया हुवा सूर वीर ने धीरजी ।
ज्यांने दीठा हर्षे हीरजी, प्रभु सायर जेम गंभीरजी
हुवा छः काया रा पीरजी ।

देव तिहां त्रिगडो रचे, प्रभु चार कोस अनुमान,
भूम थकी ऊंचो कह्यो, गाउ अढाई को ज्ञानजी,
घणो ऊंचो ने असमान जी, जिणमें ध्यावे आतम ध्यान जी
पाखंडी मूके मान जी ॥ जि ॥ १ ॥

सिर अशोक-छाया करे, प्रभु मांजरी लुल लुल जाय,
वीर विराज्या तिण तले, झक झोले शीतल वायजी
ज्यांने दीठां आनन्द थायजी, ज्यांरी सोवन वरणी कायजी
प्रभु पाप पटल टल जायजी ॥ जि ॥ २ ॥

स्फटिक-सिंहासन विराजिया, प्रभु छत्र धरावे सार
भामण्डल झलके भलो, रलियावणो रुप अपार जी,
नहीं जग में इण आकारजी, ज्यांरे चमर वींजंता चारजी
ज्यांने दीठां उपजे प्यार जी ॥ जि ॥ ३ ॥

गगन में गाजे दुन्दुभि, प्रभु अमर भखे आकाश
त्याव गामी नर तुमे, आवो इहाँ धर हुल्लास जी,
हाथ जोड करो अरदास जी, थांरी सफल करे प्रभु आशजी
थांने देवे शिवपुर-वास जी ॥ जी ॥ ४ ॥

देव मिल्या नभ-मारगे, प्रभु देख्यां क्रोडा क्रोड
गगन विमान खड़ा किया, कोई अलगा ने कोई ओड जी
इम अरज करे कर जोड जी, कई भव सागर थी छोड जी
म्हारी टालो भवतणी खोड जी ॥ जि ॥ ५ ॥

भविक-कमल प्रतिबोधवा, प्रभु उदया चल जिम सूर
अमित-पदार्थ युत गिरा, वाणी गंगाजल जिम पूरजी
सुणतां दुःख जावे दूरजी, प्रभु कर्म किया चकचूरजी,
इन्द्र चन्द्र मुनि है हजूर जी ॥ जि ॥ ६ ॥

ए संसार असार छे, भवि चेतो चेतो नरनार
भवसागर में भटकतां, पाम्यो मानव नो अवतार जी
हिवे आदरो संयम भारजी, ज्यो भावक ना व्रत धार जी
ज्यों पामो भवजल पार जी ॥ जि ॥ ७ ॥

राजगृही नगरी मझे, प्रभु जिनवर कियो वखाण
वाणी सुण जिनराजरी, कई उठ्या चतुर सुजाण जी
संयम लीयो हित आणजी, केई पहुँचा विजय-विमानजी
कई पामिया पद निर्वाण जी ॥ जि ॥ ८ ॥

कर्म-खपाय मुगते गया, प्रभु जग वरत्या जयजय कार
पूज्य गुमानचंद जी प्रसाद थी, "रतनचंद" कहै सुविचार जी
घणी मीठी राग मल्हार जी, कीनो रियां गांव मझार जी
सुण हरष्या बहु नर नार जी ।। जि ।। ८ ।।

---

( ३० )

## श्रीमन्धर स्तवन

( तर्ज —कृपा करो श्री वालेसर ए देशी )

श्री सीमन्धर सुण अलवेसर, तुम दरशण की वलिहारी ।।
टेर ।।
ललाट-पाट कपाट है सोहन, नासा उत्तिंग[1] है सुख कारी
।। श्री ।। १ ।।
पूनमचंद विराजे आनन,[2] आंखड़ाली तुभ अणियारी[3] ।।श्री
।। २ ।।
छत्र तीन छाजे सिर ऊपर, चामर की छवि है न्यारी ।। श्री
।। ३ ।।
सिर अशोक विराजे नीको, भामण्डल झलके भारी ।। श्री
।। ४ ।।

---

१ ऊंचा २ मुख ३ शोभनीय, सुन्दरकारी

इन्द्र–चन्द्र–नागेन्द्र–मुनिंद सब, सुरनर ते तुम चरणें प्यारी
|| श्री || ५ ||
सुर-नर-असुर विद्याधर–किन्नर, अहो निश सेव करे थारी
|| श्री || ६ ||
चरण आय सहू नहीं साहिब, प्रातः प्रातः वन्दना म्हारी
|| श्री || ७ ||
"रतनचन्द" कहे देव निरंजन, भवसागर वेगो तारी ||
श्री || ८ ||

---

( ३१ )

## सतगुरु वाणी

( तर्ज— वेकर सोमा की द वैरी )

वाणी सतगुरु की, सुणो सुणो हो भविक मन लाय || वा
|| टेर || ||
मीठी आणो अमृत-धार, मटे मिथ्यात अंधार – वा –
सुणतां समकित घट उद्योत¹, वले प्रकटे आतम ज्योत || वा
|| १ ||
कंपिलपुर नो सजति राय, नित जीव-मारण ने जाय – वा
मृग हन्नी ने मारयो तीर, वींध्यो तास शरीर || वाणी ||२||

---

१ प्रकाश

दाख-मंडप वैठा मुनिराय, आय पडयो तिण ठाम – वा –
हरिण लेतां देख्या मुनिराय, में तो कीधो वड़ो अकाज ॥
वा ॥ ३ ॥
हाथ जोड पडियो ऋषि पाय, निज–अपराध खमाय – वा -
बोल्या नहीं गर्दभाली साध, तद जाण्यो कोप अगाध ॥
वा ॥ ४ ॥
कोपियो रिख वाले सहु लोग, म्हें तो कीधो कर्म अजोग-वा
डरतो देख वोल्या रिख राय, मोसुं अभय तोने महाराय
॥ वा ॥ ५ ॥
तूं पिण मत हण जीव अनाथ, यो राज न चलसी साथ-वा
मात पिता नारी परिवार, थांरे कोइयन चलसी लार ॥ वा
॥ ६ ॥
रंग–पतंग संसार स्वरूप, यो तो कपट कूड नो कूप – वा
इन्द्र–जाल सुपना नो ख्याल, तुमे मत भूलो महिपाल
॥ वा ॥ ७ ॥
निर्मलज्ञान सुण्या ऋषि वेण, तद खुलिया अन्तर नेण–वा
तत्क्षण त्याग दियो संसार, शुद्ध लीधो संयमभार ॥ वा
॥ ८ ॥
ज्ञान पूरव आज्ञा उरधार, हुआ एकल–मल अणगार–वा –
क्षत्रिय राजऋषीश्वर भेट, सहु संशय दीधा मेट ॥ वा ॥९॥
भरतादिक हुआ भूप अनेक, शुद्ध संयम धरियो विशेख – वा

धरजो शुद्ध समकित भाकर, रहिजो पाखंड मत स्यू दूर ॥ वा
॥ १० ॥
सील सुधी शुद्ध धर वैराग, अंत मुगत गया महा-भाग-वा-
उतराध्ययन में यह अधिकार, श्री वीर कियो विस्तार ॥
॥ वा ॥ ११ ॥
जयपुर में कीधो चोमास, सहु पाम्या हर्ष-उल्लास – वा –
"रतनचन्द्र" ए कीधी ढाल, वराणु दीपक माल
॥ वा ॥ १२ ॥

---

( ३२ )

## जिनेश महिमा

( तर्ज —सारङ्ग राग )

जिनराज की महिमा अति घणी, कोई कहीय न आवे मोमणी
॥ टेर ॥
सुर नर असुर विद्याधर किन्नर, सबा सार तुम तणी ॥
जि ॥ १ ॥
काम धेनु चिन्तामणी, सुरतरु में छायो चिन्तामणी ॥
जि ॥ २ ॥
अमर देव सह कौन बरोबर, तू छे हीरारी कणी ॥
जि ॥ ३ ॥
मृत्य, पाताल के मांही, तुम जिन काने सुणी ॥ जि ॥ ४॥

ध्यान तुमारो सहु नर ध्यावे, ज्ञानी ध्यानी ने महामुनी
॥ जि० ५ ॥
रात दिवस तुम वस र्‌या मन में दरशन होसी कर्म हणी
॥ जि० ६ ॥
सेवक नी यह अर्ज सुणी ने, टालो मरण जरा अणी
॥ जि० ७ ॥
"रतनचन्द" कहै तारो साहेब, तूं तारक त्रिभुवन धणी
॥ जि० ८ ॥

---

( ३३ )

## गुरु गुण महिमा

( तर्ज—जय बोलो पार्श्व जिनेश्वर की )

मिलिया गुरु ज्ञान तणा दरिया ॥ टेर ॥
सुण उपदेश रेस गई तन की,
भव भव के पातक झरिया ॥ मि ॥ १
सुमत गुपत चित्त दृढ कर राखे,
पाले शुद्ध निर्मल किरिया ॥ मि ॥ २
सप्तवीस गुण पूरण घट में,
चरण करण शुद्ध गुण भरिया ॥ मि ॥ ३ ॥
परम अह्लाद कियो घट अन्दर,

दख देख नेत्र ठरिया ॥ सि ॥ ४ ॥
"रतनचंद" कहै गुरु पदपंकज,
मेट भई भवजल विरिया ॥ ५ ॥

( १४ )

## गुरु वचन अमीरस

मन सतगुरु सीख कहा भूले ॥ टेर ॥

काल अनाद लयो मानव भव,
धर्म बिना आगे कहा खुले ॥ मन ॥ १
अचल अखेपद आवे छिन में,
सतगुरु वच के कुण तुले ॥ मन ॥ २
पुद्गल फंद रचियो इस जग में,
देख देख चित कहा फूले ॥ मन ॥ ३
"रतनचंद" गुरु वचन अमीरस,
आतमराम सदा झूले ॥ मन ॥ ४

( ३५ )

# उपकारी गुरु

गुरु सम कुण जग में उपकारी ॥ टेर ॥

मेट मिथ्यात कियो चित्त निर्मल,
ससिशिरोमण सुखकारी ॥ गुरु ॥ १

आतम ज्ञान अपूर्व पायो,
भर्म मिथ्या मेटी सारी ॥ गुरु ॥ २

इन्द्रिय चोर किया ठग ठावा,
मन महिपत लीधो मारी ॥ ३ ॥

आगम वेद कुरान पुराण में,
गुरु महिमा सुविस्तारी ॥ ४ ॥

गुरुगुण कहतां जिन पद लहीये,
क्रोड क्रोड़ जाऊं वारी ॥ ५ ॥

गुरु गुण लोप लियो कुण शिवपुर,
अपछन्दा जे अहंकारी ॥ ६ ॥

शिवपुर चावो तो सत् गुरुसेवो,
रात दिवस हृदय धारी ॥ ७ ॥

गुरु गुरु करत जगत सहु भूल्यो,
सेवो गुरु शुद्ध आचारी ॥ ८ ॥
"रतनचन्द" कहे सतगुरु दर्शन,
देख देख लू बलिहारी ॥ ६ ॥

( २६ )

## गुरू वाणी

( तर्ज-राग सोरठ गिरनारी )

म्हाने रूड़ो लागे छे जी गुरु उपदेश ॥ टेर ॥
सत्य वचन सुधारस[1] प्रकटे, कूड़ नहीं लवलेश ॥ म ॥१॥
मूल मिथ्यात्व-तिमिर[2] दुख टालण, गुरू उपदेश दिनेश[3]
पुदगल-रुची विषम-ज्वर मेटन, समकित रस प्रकटेश
॥ म ॥ २ ॥
आठ कर्म को घाम विषमता, टाले सकल क्लेश ।
भ्रमत भ्रमत पुद्गल सहु पूरे, अब सुख लियो विशेष
॥ म ३ ॥
धन-धन ग्राम नगर पुर पाटन, धन सुन्दर उपदेश,
जहां सद्गुरु सिंहासन बैठी, आपे दया-धर्म रेश ॥ म ४॥

१ अमृत २. अन्धकार ३. सूर्य

निरखत नयण भविक-जन हरसत, पामित सुख असेस,
गुरू वायक सुण खायक भावे, पावे मुगत अवेस ॥ म ५ ॥
कामधेनु चिन्तामण सुरतरु, सद्गुरु वचन अजेश
'रतनचंद' कहै गुरु चरणांबुज, मुझ मस्तक प्रवेश ॥ म ६ ॥

---

( ३७ )

## –सांवलिया साहिब–

( तर्ज–माँ मेटो हमारी ममता देशी )

सांवलिया सुरत थांरी, प्रभु मो मन लागे प्यारी ॥ टेर ॥
समुद्र विजय सुत नीको, जादव कुल मंडन टीको ॥सा १॥
थांने राणी सेवा देवी जाया, थांरे इन्द्र महोत्सव आया
॥ सा २ ॥
प्रभु रूप अनूपम भारी, देखत रीझत नर नारी ॥ सा ३ ॥
प्रभु तोरणथी रथ वाल्यो, प्रभु जीव–दया व्रत पाल्यो
॥ सा ४ ॥
प्रभु करुणा रस मन धारी, थे छोडी राजुल नारी
॥ सा ५ ॥
प्रभु तप जप खप बहु कीनी, थे शिव रमणी वर लीनी
॥ सा ६ ॥

हूँ रात दिवस मन ध्याऊं, हूँ दरशन तुम थो पाऊं
॥ सा ७ ॥
महर करो महाराजे, म्हारा सारो वांछित काजे ॥ सा ८ ॥
तारक तुम बिन नहीं कोई, में स्वर्ग मृत्यु लियो जोई
॥ सा ९ ॥
हे प्रभु विरुद तुम्हारो पालो, हिवे तारक म करो टालो
॥ सा १० ॥
म्हारी लिव साहिब सु लागी, सहु भ्रान्ति मिथ्यात री भागी
॥ सा ११ ॥
गुरु गुमानचन्दजी सुखकारी, मोलख बताई तुम्हारी
॥ सा १२ ॥
चौपन बैसाख में गायो, "रतनचंद" आनन्द सुख पायो
॥ सा १३ ॥

---

( १८ )

## वीर जन्मोत्सव

( तर्ज—"हिरणी जब चरे ललना पृ बेरी )

धन्न सिद्धारथ राजवी ललना,
लाडली हो धन त्रिसला दे मात
जिनवर जनमियो ललना ॥ टेर ॥

दसमा स्वर्ग थी चवकरी ललना, ललाजी हो उपना गर्भ मॅझार ॥ जि १ ॥

ईति, भीति दूरे टली ललना, ललाजी हो मिट गई जगतनी पीर ॥ जि २ ॥

शुभ लगन सुत जनमियो ललना, ललाजी हो नाम दियो महावीर ॥ सा ३ ॥

छपन कुमारी मिल करी ललना, ललाजी हो गावे गीत रसाल ॥ जि ४ ॥

घर घर रंग वधावना ललना, ललाजी हो घर घर मंगल गान ॥ जि ५ ॥

इन्द्र पांच रूपे करी ललना, ललाजी हो मेरु शिखर ले जाय ॥ जि ॥

आठ सहस्त्र चौसठ घड़ा ललना, ललाजी हो प्रभुजी ने दिया न्हवाय ॥ जि ४ ॥

देव घणो महोच्छव करे ललना, ललाजी हो, थई थई शब्द उच्चार ॥ जि ॥

बाजा बाजे अतिघणा ललना, ललाजी हो मादलना धोंकार ॥ जि ५ ॥

ठम ठम पग ठमका करे ललना, ललाजी हो घम घम घुग्घर बाजंत, जि०

महोत्सव कर देवता घणा ललना, ललाजी हो माजी पास सार्गत ।। जि ६ ।।
दास लीना दीधी घणी नम्मना, नम्माजी हो परणिया एकत्र नार, जि०
तीस वर्ष घर में रह्या ललना, ललाजी हो लीधो संजम भार ।। जि ७ ।।
तप तपिर्या अति आकरा ललना, ललाजी हो ध्यायो[1] निर्मल ध्यान। जि०
घातकर्म[1] चकचूर ने ललना, ललाजी हो पाम्या केवल ज्ञान ।। जि ८ ।।
जिन मारग दीप्यो घणो ललना, ललाजी हो किधो घणा उपकार ।। जि०
नर नारी तार्या घणा ललना, ललाजी हो पहुँता मुक्ति मैंझार ।। जि ६ ।।
पू गुमानचंदजी परसाद स्यु ललना, ललाजी हो 'रतनचंद' करे अरदास, जि०
समत् अठारे पचास में ललना, ललाजी हो पीपाड़ किधो चौमास ।। जि १० ।।

---

[1]–घातीक कर्म–ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय मोहनीय अन्तराय

( ३६ )

## श्री वामाजी रा नंद

( तर्ज–निलारी देशी )

वणारसी नगरी सुन्दर अति सोभे हो, वामादेजी रा नंद
वामादेजी रा नन्द ॥ टेर ॥
परदेशी लोग वटाऊ तणा, मन मोहे हो जिनंद ॥ वा १ ॥
भू-भामण[1] सिर तिलक अश्वसेन राया हो वा० राणी सुख
दायक पुत्र रत्न जिन जायो हो जिनंद ॥ वा ॥
इन्द्र चन्द्र मिल प्रभुजी नो महोछव कीधो हो, वा०
संसार असार तज सजम मारग लीधो हो ॥ जि० ३ ॥
मोर चकोर जलधर द्विजराज ने ध्यावे हो, वा०
पास जिनंद आनन्द सदा मन भावे हो ॥ जि० ४ ॥
जगतारण जोगीसर तुम सुखदाई हो, वा०
कामधेनु चिन्तामणी सूं अधिकाई हो ॥ जि० ५ ॥
भव भव नाम तुम्हारो ही आडो आवे हो, वा०
नाम थकी शिव मोक्ष तणा सुख पावे हो ॥ जि० ६॥
गुणवंत ज्ञानी ध्यानी तणा मन मोहे हो, वां०
हंस, इंदु सुरस्मय इकी सोहे हो ॥ वा ७ ॥
पूज्य गुमानचंद जी पुण्य जोगे पाया हो, वा०
"रतनचन्द" मन हूंस धरी गुण गाया हो जिनंद ॥वा ८॥

१–पृथ्वी रूपी स्त्री

( ४० )

## श्री शान्ति जिन महिमा

( तर्ज करसाणी वेरी )

शान्ति जिनेश्वर सोलवाँ
शान्ति करो शान्तिनाथजी
तुम सम जग में कोई नहीं, थे तीन भवन का नाथजी
॥ शां १ ॥

विश्वसेन राजा दीपतो अचलादे थाँरी माय जी।
सर्वारथ सिद्ध थी चवी करी, थे उपना गर्भ में आयजी
॥ शां० २ ॥

शांति नाथ प्रभु जन्मिया, शान्ति हुई सहुलोक जी।
दुःख दोहग दूरे टल्या, मिट गयो जगनो शोकजी
॥ शां० ३ ॥

चोसठ सहस्त्र रमणी परिहरिया, आयो समता-भाव जी।
संसार नां सुख भोगवी, संजम लियो धर चावजी ॥ शां ४ ॥

एक मास छद्मस्थ रया, थे ध्यायो निर्मल ध्यान जी।
चार कर्म चकचूर ने, थे पायो केवल ज्ञानजी ॥ शां० ५ ॥

शान्तिनाथ साता करे, आपद् जावे दूर जी।
मन-वांछित सुख सम्पदा, रहे भंडार भरपूरजी ॥ शां० ६ ॥

भूत-व्यन्तर राक्षस जिके, डाकण साकण चोर जी।

पृ० ४८ का शेष—गाथा सं० ६ से आगे ।

नामथकी आपद टले, मिटे शत्रु को जोर जी ॥ शां. ७ ॥
शान्ति समान संसार में, अवर न बीजो देव जी ।
तिरण तारण जिनराज जी, हूँ सेव करू नितमेव जी ॥ शां० ८॥

सवत अठारे इक्कावने, पीपाड शहर चोमास जी ।
पूज्य गुमानचन्दजी रे प्रसाद थी, 'रत्नचन्द' करे अरदास जी
शां० ॥ ९ ॥

( ४१ )

# श्री मंधर महिमा

( तर्ज—पन्नारी देशी )

श्री मन्धर जिनदेव, प्रभू म्हारो दरसण देखण हिवडो उमगेजी । जि०
सारे थांरी सुरनर सेव-प्र० चोसठ इन्द्र उभा ओलगे जी ॥ जि० १ ॥

सुण सुण अमृत बाण-प्र० निर्मल पाणीजी वाणी आपकी जी ।
प्रकटे समकित रयन प्र० ततक्षण नासे मनसा पापरी जी ॥ जि० २ ॥

प्रभू गुण गहर गंभीर प्र० दरसण देखी ने हरखे आंखडी, जी । जी०
हुलसे हिवड़ो जी हीर प्र० विकसे काया कमलनी पांखड़ी जी ॥ जि० ३ ॥

जग तारण जिनराज प्र० हूँ पिण चाऊं जी चरणा री चाकरी जी ।
सारो म्हारा वंछित काज प्र० लहर मिटावो हो मो मद छाकरी जी ॥ जि० ४ ॥

प्रभु सुख सुर विकस प्र० पाप पणासे हो भासे
शुभ मती जी । जि०
राखो मोने चरणा रे पास प्र० "रतनचन्द" री याही विनती जी
॥ जि० ५ ॥

---

( ४२ )

## सेवक की अरदास

( तर्ज—मनोला मंवरजी हो लाहिब म्हारो दर्द घर प्राण )

साहिब सांभलो हो प्रभूजी, सेवक नी अरदास ॥ टेर ॥
पु डरिकनी नगरी भली हो, प्रभूजी श्रेयांस राय उदार ।
माता थारी सत्यकी हो, प्रभूजी रुक्मण नामे नार
॥ सा० १ ॥

ससार ना सुख भोगवी हो, प्रभूजी, लीधो संजम भार ।
केवल ज्ञान प्रकाशियो हो, प्रभूजी दव मिथ्या, विदार
॥ सा० २ ॥

आप बसो विदह में हो प्रभूजी, हूँ पडू अति दूर ।
विच में संगी मडी पयी हो, प्रभूजी किम कर आऊँ हजूर
॥ सा० ३ ॥

सुरनर तुम सेवा करे प्रभूजी, नर नारयां ना ठाठ ।
हूँ आवीसकतो नहीं हो प्रभूजी, विच में विपमी वाट
॥ सा० ४ ॥

श्री सीमंधर साहेबा हो प्रभूजी, अर्ज करूं कर जोड़ ।
भवसागर भटक्यो घणो हो प्रभूजी, अब बंधन थी छोड़
॥ सा० ५ ॥

नरक निगोद में हूँ भम्यो जी हो प्रभुजी, कुगुरु तणे संग बैठ
सुख रति पाम्यो नहीं हो प्रभूजी, हिंसा धर्म में पैठ
॥ सा० ६ ॥

ओ दुःखमी आरो पांचमो हो प्रभूजी, घणा फैल फितूर ।
मैं धर्म पायो आपरो हो प्रभुजी मिथ्या मत कियो दूर
॥ सा० ७ ॥

रतन चिन्तामणी नाखने हो प्रभुजी, कांकर कुण ले हाथ ।
अटवी मांहीं कुणे भमे हो प्रभुजी, छोडी सखरो साथ
॥ सा० ८ ॥

अमृत भोजन छोड़ने हो प्रभुजी, तुसिया कहो कुण खाय ।
देवलोक ना सुख देखने हो प्रभुजी, नरक न आवे दाय
॥ सा० ९ ॥

मन वचन काया करी हो प्रभुजी, तुम चरणे रयो राच।
अवर देव में ओलखया हो प्रभुजी, मणी मेलीने काच
॥ सा० १० ॥

निरधनियों भमियो घणो हो प्रभुजी, कबहूं न आवे पार।
अबतो शरणो आपरो हो, प्रभुजी दीजो पार उतार
॥ सा० ११ ॥

तारक धर्मज आपरो हो प्रभुजी, पर मन में आधार।
ये बिरदा में राखसी हो प्रभुजी, जिथरो खेवो पार
॥ सा० १२ ॥

संवत अठारे सेपने हो प्रभुजी, नागौर शहर चौमास।
पूज्य गुमानचंद जी ग प्रसादथी हो प्रभुजी, "रतन" करे
अरदास ॥ सा० १३ ॥

( ४३ )

## श्री धर्मनाथ प्रार्थना

( तर्ज—शंकर चले रे कैलाश में )

म्हारो मन लाग्यो धर्म जिनंद सु रे ॥ टेर ॥
धर्मतीर्थ वरताय रे, भविक-जीव प्रतिबोधने रे।

मुगत-महल में जावे रे ॥ म्हा० १ ॥

विजय-विमान थी चव करी, रतनपुरी शुभ ठाम रे ।
भानुराय सुव्रतामातजी, जन्म लियो अभिराम रे
॥ म्हा० २ ॥

राणी परण्या अति सुलक्षणी रे आण्यो मन वैराग ।
तन धन जोवन जाण्यो कारमो, ततक्षण दीनो छः त्यागरे
॥ म्हा० ३ ॥

शुभ परिणामें पदवी प्रकटी रे, हुआ तीर्थंकरराय रे ।
सुर असुर मिल्या सहु देवता, लुल लुल लागे हो पाय रे
॥ म्हा० ४ ॥

तेज प्रताप तिहुँ लोकज मेरे, रयो तीन छत्र में फाब रे ।
परखदा सोभे जिन मुख आगले रे, वाड़ी खुली है गुलाब रे
॥ म्हा० ५ ॥

सिर अशोक छाया करे रे, शोक न रहे लिगार रे ।
धोली तो धारा जाणो गगनरी रे, चंवर वीजें ज्यांरे चार रे
॥ म्हा० ६ ॥

सोहन कमल रचे देवता रे, जठे धरे प्रभु पाय रे ।

जिन नयणे[1] निरंज[2] निरखियारे, अवर न आवे दायरे
॥ म्हा० ७ ॥
रूप अनूपम अधिक विराजतोरे, दीठां अधिक सुहात रे ।
तुम सम सुत नहीं जनमियोरे, अवर अनेरी कोई मात रे
॥ म्हा० ८ ॥
वाणी तो मीठी अमृत सारसीरे, लागे सुभ पियारा रे ।
सुणता तो तृपत थावे जीवड़ोरे, अवर सुहावे नहीं बात रे
॥ म्हा ६ ॥
कंचन नो खंड अने किहां मणिरे, किहां तारा किहां चन्द रे
विषने अमृत रस नी आंतरोरे, तिम अन्य देव जिनंद रे
॥ म्हा १० ॥
घणा जीवने जीनवर तारनेरे, मुक्त गया महाराज रे ।
अब हूँ सरणों साहिब आपरेर, सारो वंछित काजरे
॥ म्हा ११ ॥
सवत अठार' बप चोपनेरे, मोटो शहर नागोर रे ।
पूज्य गुमानचद जी प्रसाद थी रे "रतन" कहै कर जोड़ रे
॥ म्हा १२ ॥

---

१ नेत्र २ कालिमा

( ४४ )

# श्री युग मंधर स्तवन

( तर्ज-कांइय तारीफ करु हो )

श्री युगमंदिर साहिब केरो, चित्त नित दरशण चावे हो
॥ टेर ॥

निर्धन रे एक धननी इच्छा, भाग विना किम पावे हो
॥ श्री० १ ॥

नन्दन-वन सुख छोड़ स्वर्ग थी, तुम दरशण आवे हो,
अमृत वाणी कर इन्द्राणी, तुम गुण मंगल गावे हो
॥ श्री २ ॥

छत्र धरे सिर चामर वींजे, सुरनर सहु हरसावे हो ।
वर्षा काल प्रबल घन प्रगटयो, भव भव तपत मिटावे हो
॥ श्री ३ ॥

भविजन मोर निहोर करी, धुन सन्मुख आन बधावे हो
वाणी रां तरंग जग प्रकटी, सूत्र सिद्धान्त सुणावे हो
॥ श्री ॥ ४ ॥

निरखण नयन[1] मनोरथ म्हारे, पिण पूरण किम थावे हो,
सज्जन वल्लभ सुर मित्र न म्हारें, तुम सुं आन मिलावे हो
॥ श्री ॥ ५ ॥

---

१ नेत्र

"रतनचन्द" चरणारो चाकर, तुम दरसण ने ध्यावे हो
पूज्य गुमानचंदजी गुण सागर, तुम पथ शुद्ध बतावे हो
॥ श्री ॥ ६ ॥

(४५)

## दर्श पिपासा

तर्ज सुन्दर सोवणी पहेरी

मनडो उमायो दरसण देखवा, चपल होय रयो चित्,
हृदय सरोवर हो उलटे रे नीसरे, भावना बादल नित
॥ म ॥ १ ॥

आपने म्हारे हो छेटी अति घणी, पिण बस रया मुझमन,
नाम तुमारो हो राखू तापत नी परे, तरूण पुरुष जिम तन
॥ म ॥ २ ॥

चंद चकोरा हो मेघ ध्यावे सखी चातक जलधर जेम ।
प्यासो पाखी हो हंस सरोवरां, जिम तुम देखण प्रेम
॥ म० ३ ॥

राग ने द्वेष हो दोष माहा घणा, प्रबल चारों कषाय ।
पंच प्रमादज[१] हो रोग अगाध छे किस बिध मेलो थाय
॥ म० ४ ॥

१ मदिरा ( मद्य ), विषय कषाय, निद्रा और विकथा

पुद्गल सेती हो रूच नहीं उतरे, जिन गुण थोथा रंग ।
निर्मल संजम हो दुक्कर आराधना, अष्टवैरी[1] मुझ संग
॥ म० ५ ॥

संशय म्हारा हो सारा ही टाल सूं, गाल सूं मोह मद छाक
नयणे निरखी हो चरणज भेट सूं, मो मन यह अभिलाख ।
॥ म० ६ ॥

मन हिलोला हो जल किल्लोलसा मांडे जी खेचा तान
तरूण पुरुप रे हो सिर जिम केवडो, ज्यूं थारा वचन प्रमाण
॥ म ७ ॥

महर निजर कर मुझने निहाल जो, टालजो मत महाराज
सेवक चिन्ता हो साहिब ने छे, राखजो अविचल लाज
॥ म० ८ ॥

पीपाड माही हो वर्पंज साठ में, सुखे कियो चोमास
जिनवर ध्यावे हो "रतनचन्द" यों कहे तिणने छे शाबास
॥ म० ९ ॥

---

१ आठ कर्म

## ( ४६ )

# सेवक की विनती

( तर्ज लियालारी )

प्रभु म्हारी विनतड़ी अवधार के दरसण दिजीए ए राज ॥टेर॥
सहु सुख दायक स्वामी जगत ना अन्तर जामी
प्रभू म्हारा कृपा कर महाराज के शरणे लिजिए जी राज
॥ द० १ ॥

क्षेत्र विदेह विराजिया जी श्रीमंधर जिन देव
सुख माणी अविशय भली, थांरी सारे सुरनर सेवके
॥ द० २ ॥

पारस फरस्या थी हुवे जी लोहो कंचन रूप
तुम दरसण थी साहबा, रंक हुवे पद भूप के ॥ द० ३ ॥
सिद्धरस मिलो हो रयो जी, निस पद थी प्रतिकूल
भेद पाया भावट मिटे, कटे कर्म को मूल क ॥ द० ४ ॥
मृग भुरे मद कारणे जी, आपो लखे न आप
सायर में तिरस्यो रहे जी, पोते जिणरे पाप के ॥ द० ५ ॥
निज-गुण संपत ना लखे जी, रहे रांक नी रीत
पड़े फजीती जग में, पर सु करता प्रीत के ॥ द० ६ ॥

आगम अरथ पावे नहीं, वाक जाल ने भूल
रहे भगुल्या पात ज्यों, सहे भर्म की शूल के ॥ द० ७ ॥
नरक निगोद नी वेदना, भव-भ्रमण में कीध
वसु वरगणा हल्की पड़ी, तरे अबके ओलख लिध के
॥ द० ८ ॥
तुम दरशण विन सायवाजी, लही न आत्म सोध
भ्रम जाल में भटको कांई, जिम रोही को रोज के ॥द० ६॥
सहु अर्जी नी एक छः जी, सांभलजो महाराज
जिम तिन कर निरभावसी, राखो निज पद लाज के
॥ द० १० ॥
अष्टादस छियांसियेजी, महामन्दिर चोमास
"रतनचन्द" साहिब विना, मिटे न गर्भावास के ॥द० ११॥

---

( ४७ )

## श्री नेमीश्वर जिनराज

( तर्ज—उमादे भटियाणी-श्री आदेश्वर स्वामी हो )

नेमीश्वर जिन तारो हो, तुम तारक शरणे आवियो,
थे मोटा देव महंत,

पर उपकारी आया हो, काया थांरी दिप दिप करे,
थांरी घरम सरकी कंद[1] ॥ ने० १ ॥
समुद्रविजय घर राखी हो, मीठी वाणी बल्लभ घणी,
सेवादेवी सुख कन्द
माता पिता सुख पाया हो, सांवलियारी सूरत देखने,
मुख पूरण पुनमचन्द ॥ ने० २ ॥
तोरण थी रथ वालियो, दया पाली रथ छोड़ने,
थे लीघो संयम भार
सहस्त्र पुरुष संगाते हो प्रभु दीक्षा लिघी दिपती,
लारे निकली राजुल नार ॥ ने० ३ ॥
चोपन दिन में नेमीस्वर हो, साहब छद्मस्त पणे रया,
थे ध्यायो निर्मल ध्यान,
चार कर्म चकचूरी हो, निवारी आभरा आमा,
प्रभु पाम्या केवलज्ञान ॥ ने० ४ ॥
एक हजार वर्ष री हो प्रभु, आयु परजा पालने,
थे चढ़िया गढ गिरनार,
पांच से छत्तीस हो मुनि दीसे सूत्र पाठ में,
थे पहुँचा मुक्त मझार ॥ ने० ५ ॥

१ अग्नि

अन्तरजामी स्वामी हो, शिवगामी सांभल सायबा,
म्हारो जीव तुमारे पास,
दया करी शिव दीजे हो, प्रभू लिजे हाथ संभायने,
सफल करो मुजआश ॥ ने० ६ ॥
मोहन गारो प्यारो हो प्रभू ज्ञान तुमारो पामीयो,
म्हारो चित्त चकवो करे केल
जोगीश्वर अलवेश्वर हो, जिनेश्वर साहिव सांभलो,
मोने शिव रमणी रंग मेल ॥ ने० ७ ॥
प्रीतडली तुम ऐसी हो, छेती ऐती किम सायवा,
पिण तुम छ मन नहीं कोय,
म्हांरे तो तुम सरिसो हो, जग में कोई नर दिसे नहीं,
स्वामी सेवक सामो जोय ॥ ने० ८ ॥
आस करी हूँ आयो, सुख पायो वाणी सांभली,
म्हारो मन हुवो प्रसन्न,
अविनाशी अविकारी हो, जगतारी महिमा थांयरी,
सहु कोई करे धन धन ॥ ने० ९ ॥
तुम नाम थकी सुख लहिया हो, सही पामे शिवपुर संपदा,
पातक सव जावे दूर,

मन वांछित सुख पायो हो तुम नामे वंछित सायबा,
रहे भंडार भरया भरपूर ॥ ने० १० ॥
संवत अठारे गुणपच्चास हो चोमासे मिलाडे रया,
सहु पाम्या हर्ष हुलास,
पूज्य गुमानचंदजी प्रसाद हो जोड़ करी शुभवसु,
"रतनचंद" तुमारो दास ॥ ने० ११ ॥

---

( ४८ )

## नेम नगीनो रे

( तर्ज—कजली मांडमोरे, साधुजी करे बखाण सुणजी सांवरो रे )

नेम नगीनो रे तोरण थी रथ फेर संयम लीनो रे
॥ ने० टेर ॥
समुद्र विजय जी को नन्दन नीको, सांवल वरण शरीरो रे,
छप्पन क्रोड़ में शोभरयो जिम, सोवन मुद्रा मे हीरो रे
॥ ने० १ ॥
सिर पचरंगी पाग बिराजे आभूषण अंग सोहेरे ।
हरी हलधर सा मानी बनिया, इन्द्र तमासो जोवेरे
॥ ने० २ ॥

गज[1] घटा उमडी चऊं दिश थी, अश्व[2] अनोपम भारीरे,
रथ थर विकट बणया चऊं कानी, पैदल बहु नर नारी रे
॥ ने० ३ ॥

इण परवारे परवरयो स्वामी, पशुवारी सुणी छ पुकारो रे,
फरी करूणां रस पाछा वलिया, लीधो संजम भारोरे
॥ ने० ४ ॥

राजुल सुण मुरछागत पामी, बोले मधुरी वाणी रे,
आठ भवारो नेह हुँतो जे, तोड़ी प्रीत पुरानी रे ॥ ने० ५ ॥
जो तुम मन संजम लेबण रो, तो किम जान बणाई र,
तुम सा पुत पनोता होई ने, जादव जान लजाई रे
॥ ने० ६ ॥

मोह कर्म वश राजुल एहवा, बोले वचन सरागी रे,
हरी हलधर ना वचन सुणी ने, ततक्षण संसार दियो त्यागीरे
॥ ने० ७ ॥

गढ गिरनार चली वन्दन कुं, उसरियो जलधारो रे,
वस्त्र भिजाणां सति तणा जब, पैठी गुफा मझारो रे
॥ ने० ८ ॥

१—हाथियों का समूह २—घोड़ा

वस्त्र रहित देखी ते बाला, रहनेमी चित चलियो रे,
ज्ञान वचन सतीना तत्वस्त, धर्म में सेंठो अति करियो रे
रहनेमी नेमीश्वर राजुल, तप जप खप बहु किनी रे,
उत्तराध्यन अध्ययन बावीस में शिव रमणी वर लीनीरे
॥ ने० ६ ॥

समत अठारे वर्ष तेपने, नागोर शहर चोमासो रे,
पूज्य गुमानचन्द जी प्रसाद "रतन" करे अरदासो रे
॥ ने० १० ॥

---

(४६)

## दर्श पिपासा

(तर्ज—मुज रही निज हो मेवासा लोमी)

सुख करी हो जिनजी महर करी ने दरशन दीजिए ॥ टेर॥
मनडो उमायो हो दरशण देखवा, जैसे चन्द चकोर हो, सु०
तुम गुण डोरी मुझ मन बस कियो, जिम चकरी बस डोर हो
॥ सु० १ ।

दूर दिसावर भारो अति घणो बिच में संगी मझा हो, सु०

मन सुं तो अन्तर मूल राखूं नहीं, पिण मोटो मोह कर्म
पहाड़ हो ॥ सु० २ ॥

श्री मंधर गुणनिधि जल भरया, मुनिवर हंस अनेक हो,सु०
मुक्ताफल निर्मल गुण ग्रह, कर कर बुध विवेक हो
॥ सु० ३ ॥

रींझ अमोलक सायब आपरी, कर देवो आप सरीखो हो, सु०
म्हारी तो इच्छा साहिब एहवी, नित रहूँ आप नजीक हो
॥ सु० ४ ॥

वाणी सुधारस जोजनगामिनी, बरसे अमृत वेण हो सु०
रूप अमोलक निरखी आपरो, सफल करे निजनेण हो
॥ सु० ५ ॥

काल अनन्त दुःख मैं भोगव्या, तुम गुण सम जिनराज हो सु०
पूर्व पुण्य थी आवी मिली, भव जल तारण जहाज हो
॥ सु० ६ ॥

काल विषम, सर्वज्ञ को नहीं, इण ही भरत मंझार हो, सु०
पिण दुःख मेटन तुमने भेटवी, जिनवाणी आधार हो
॥ सु ७ ॥

महर नजर किजो मोपरे, थें छो दीनदयाल हो, सु०

बिरद बिचारी ने शिवसुख दीजिये, ज्युं निज गुण दीपक
माल हो ॥ सु ८ ॥
संवत अठार वर्ष[1] तिहोत्तरे, चोमासो किशन दुरंग हो,
"रतनचंद" री याहीज विनती, नित रहूं आपरे संग हो
॥ सु० ६ ॥

( ५० )

## वर्धमान स्तुति

श्री सिद्धार्थनंद जिनसर, जगपति हो लाल ॥
लीघो संजमभार, तजी जिण रिद्ध क्षयी हो लाल ॥ १ ॥
उपन्यो केवल ज्ञान, त्रिगडो देवता कियो हो लाल ।
भेटे जिनवर पाय, हरखे सुरनर हियो हो लाल ॥ २ ॥
दे जिनवर उपदेश, घराउ गाजीयो हो लाल ।
मोह मिथ्यातरी तपत के, सगलो भाजीयो हो लाल ॥३॥
उमटी भक्ति असराल, माची जलधर सभी हो लाल ।
मीठी धुधनी वाल, भविक जन मन गमी हो लाल ॥ ४ ॥
बरसे अमृत रस मेन, सुखी सहु हरखीया हो लाल,

१ मेघ

ठर रया दोनूं ही नेण, जिनेसर निरखिया हो लाल ॥५॥
भूख तिरखा जावे भाग, हियो हर्ष घणो हो लाल ।
सुख वेदे वनमाहिं के, नंदन वन तणो रे लाल ॥ ६ ॥
सुणसुण जिनवर वेण, आशा मन आसता हो लाल ।
ले ले संजमभार, पाम्या सुख सास्ता हो लाल ॥ ७ ॥
मोर ध्यावे एक मेघ, चकोर ज चंद ने हो लाल ।
रात दिवस मन मांय, मैं ध्यावुं जिनंद ने हो लाल ॥८॥
तारक सुण जिनराज के, शरणे आवियो हो राज ।
मेटीयो दुःख जंजाल, परमसुख पावीयो हो राज ॥ ९ ॥
डेह ग्राम मझार के, ढाल किधी भली रे लाल ।
पूज्य गुमानचन्दजी प्रसाद, सहु पुन्यरली हो लाल ॥१०॥
"रतनचन्द" अरदास, साहिब अवधारजो हो लाल
भवसागर थी वेग हिवे, मोय तारजो हो लाल ॥ ११ ॥

---

स्तुति विभाग समाप्त

# औपदेशिक विभाग

( १ )

# सुमति की सीख

( तर्ज—राग काफी होली री )

अरजी सुणो एक हमारी, विनवै सुमता नारी ॥ अ० टेर ॥

सुमत सखी करजोड़ कहत है, हूँ छूं दासी तुमारी

आप विरह इथको दुःख पाऊं, मत राखो मुझ न्यारी

॥ अ० १ ॥

आज्ञा लोप चलूं नहीं उवट, हूँ नित आज्ञाकारी,

अपछंदी अविनीत कुपातर, कामण 'कुमत' लिगारी

॥ अ० २ ॥

मोह महामद पाय अभागण, ठगिया सहु संसारी,

ऊंडी देत नरक की नींवां, कर कर घोर अंधारी ॥अ० ३॥

मोसु केल मेल सुख करतां, जग कहसी ब्रह्मचारी,

"रतन" सीख सुमती की धरतां, शिव रमणी छें त्यारी

॥ अ० ४ ॥

( २ )

## परस्त्री-निषेध

( तर्ज—होरी )

मत ताको नार बिरानी[1], हेरी आ नरक निशानी

॥ म० टेर ॥

परनारी छे काली नागण, के विष-बेल समानी ।
तेज पराक्रम पीलण कारण, एपर मही घानी,
क गुण-धन बालण छानी ॥ म० १ ॥

रावण राय त्रिखंड को नायक, सीता हरी घर आणी,
राम चढ्यो दल बादल लेकर, मारयो सारंग-पाणी,[2]
-ये जग में प्रकट कहानी ॥ म० २ ॥

पद्मोतर निज-राज गमाई, कीचक मीच लहानी,
मणिरथ मोहयो मेंणरया पर, अपजस लियो अनाणी,
कथा आगम में आणी ॥ म० ३ ॥

गौ-ब्राह्मण ने बाल हत्या रिख, नार हत्या पिण आखी,
तिणथी पाप अधिक कह दाख्यो, मारयो कवल नाखी,
अनत दुखांरी खानी ॥ म० ४ ॥

---

१—पराई, २—लक्ष्मण श्री

"रतन" जतन कर मन थिर राखो, छोडो कुमत पुराणी.
मुगत महल की सहल अचल सुख, मुगत रमण सी राणी,
या वीर जिणंद वखाणी ॥ म० ५ ॥

साल छिंयासी महामन्दिर, में शील कथा सु वखाणी,
शील विना सहु जन्म अकारथ, क्या राजा क्या राणी,
शील जस उत्तम प्राणी ॥ म० ६ ॥

---

( ३ )

## परस्त्रीगमन निषेध

( तर्ज—राग–घट )

चंचल छैल छबीला भॅवरा, परघर गमन न कीजे रे
॥ चं० टेर ॥

जिण पाणी थी, माणक निपजे, सो पर–घर किम दीजे रे,
लोक हंसे अरू सिर बदनामी आव' घटे तन छीजे रे
॥ चं० १ ॥

संकट कोटि सहे जग जेता, आगमवेण सुणी जे रे।
अमृत रूप ये विष हलाहल, सो रस कबहु न पीजे रे
॥ चं० २ ॥

---

१—इज्जत

परनारी को संग किया सु, पापे पिंड भरीजे रे।
छ ही ढेर नरक की निखरी, जिण में जाय पड़ीजे रे
॥ चं० ३ ॥
"रतन" जतन कर शील आराधो, मन वांछित सुख लीजेरे,
मुगत महल की सहल अचल सुख, अविचल राज करीजे रे
॥ च० ४ ॥

---

(४)

## कर्म फल

(तर्ज—राग परजया जगती)

कर्म तणी गत न्यारी, प्रभुजी, कर्म तणी गत न्यारी
॥ प्र० टेर ॥
अलख निरंजन सिद्ध स्वरूपी, पिण होय रयो संसारी
। प्र० १ ॥
कबहुक राज्य करे मही-मण्डल, कबहुक रंक भिखारी,
कबहुक हाथी समचक होता, कबहुक खर[1] असवारी
॥ प्र० २ ॥

---

१—गधा

कबहुक नरक निगोद बसावत, कबहुक सुर अवतारी,
कभहुक रूप कुरूप को दरसन, कबहुक सूरत प्यारी
॥ प्र० ३ ॥

बड़े बड़े वृक्ष ने छोटे छोटे पतवा[1], बेलड़ियांरी छवि न्यारी,
पतिव्रता तरसे सुत कारण, फुहड़ जण जण हारी
॥ प्र० ४ ॥

मूर्ख राजा राज करत है, पंडित भए भिखारी,
कुरंग[1] नेण[3] सुरंग बने अति, चूंधी पदमण नारी
॥ प्र० ५ ॥

"रतनचन्द कर्मन की गत को, लख न सके नरनारी,
आपो खोज करे आतम वश, तो शिवपुर छे त्यारी
॥ प्र० ६ ॥

---

१-पत्ता, २-हरिण, ३-नेत्र

## जन्म गमायो

( सर्व-बिहाग राग )

( ५ )

जीवड़ला यों ही जनम गमायो ॥ टेर ॥
धर्म तणो मरम न जाण्यो, भ्रम में दिवस गमायो ।
कर्म कठिन कर नरक पहुँचो, बहुत कष्ट तन पायो
॥ जीव० १ ॥
नरक मांहि जम दोला फिरने, मालासु अधर उठायो ।
पकड़ टांग शिला पर पटकी, चिहुँ दिस मांहि ममायो
॥ जीव० २ ॥
सर्प, स्वान,[1] सिंह रूप करीने, पकड़ पकड़ तोने खायो ।
ऊँधे माथे कुम्भी[2] मांहि, अग्नि मांय होमायो रे ॥जी० ३॥
तोड़ी-राध भरी वैतरणी[3], तिण मांहि तोने डूबायो ।
मिनख जनमवो पायोरे मूर्ख, हाथ कछुयन आयो
॥ जीव० ४ ॥
धर्म-ध्यान गुरु ज्ञान न मान्यो, आतम ज्ञान गमायो ।
तारण-धर्म जिनेश्वर केरो, हाथ कछूना आयो ॥ जी० ५ ॥
धन धन धर्म करे जग मांहि, मिनख जनम भल पायो ।
कहत "रतन" धन जगत सिरोमणि, जिन धरमे चित
लायोरे ॥ जी० ६ ॥

१-कुत्ता, २-पायी, ३-नदी

( ६ )

## समझ का फेर

( तर्ज– )

बडो समझ को आंटो[1] जगत में, बड़ो समझ को आंटो
|| टेर ||

सुण सुण धर्म, शर्म नहीं उपजत, विषम कर्म को कांटो
|| ज० १ ||

संवर त्याग, उपावत आश्रव, कष्ट करे उफराटो ।
मन वच काय कमावत सावज्ज[2], पड़ रही भूल निराटो
|| ज० २ ||

जग दुःख टाल हिये सुख माने, रूक्यो ज्ञान गुण घाटो ।
आपो भूल पड़यो इन्द्रियवश, मिटे न मोह को फाटो[3]
|| ज० ३ ||

श्री जिन-वचन दिवाकर[4] प्रकटया, उड्यो भर्म को टाटो ।
"रतनचंद" आनन्द भयो अब, लख्यो साररस लाटो
|| ज० ४ ||

---

१–फेर, २–पाप करणी, ३–पगड़ी, ४–सूर्य ।

## ( ७ )

## कपट का भेष

( सर्व विहाग राग )

भेष धर यूं ही जनम गमायो ॥ टेर ॥

लच्छन त्याग, सांग धर सिद्ध को, खेत लोकों[1] को खायो
॥ भे० १ ॥

घर घर कपट निपट चतुराई, आसव छद[2] भ्रमायो,
मतर भोग, योग की बतियां, जग भोली छल छायो॥भे०२॥

कर नर नार निपट निज रागी, दया धर्म मुख गायो ।
सावद्य-धर्म सपाप[3] परूपी, जग सघलो भरमायो ॥भे०३॥

वस्त्र-पात्र-आहार-थानक में, सबसो दोष लगायो ।
संत दशा बिन संत कहायो, जो कोई कर्म कमायो ॥भे०४॥

हाथ सुमरणी, हिये कतरणी, खटपट होठ हिलायो,
जप तप संयम आतम गुण बिन, गाडर सीस मुंडायो॥भे०५॥

आगम वेद अनूपम सुणने, दया-धर्म दिल भायो,
"रतनचन्द" आनन्द भयो अब, आतम राम रमायो ॥भे०६॥

---

१-दूसरों का, २-भवकूप, ३-पाप सहित ।

( ८ )

## लगन की पीड़ा

( तर्ज—राग काफी )

कठिन लगन की पीर[1] रे, कोई लागी सो जानी ॥ टेर ॥
बाहिर घाव कबहु नहीं दीखे, दाझत हिवडो[2] हीर रे ॥१॥
संकट पड्यां निकट कुण आवे, सुख में सहु को सीर,[3]
नेम कृपाल दयाल के उपर, सद के उवारुं शरीर ॥ २ ॥
परभव प्रीत करी पीतल सी, कंचन रेख कथीर,
अबला केवत जी अलवेसर, क्या हम में तकसीर ॥ ३ ॥
राजा राम विलाप किए अति, विकल भाव अधीर,
त्याग सुणी वैरागण हुयगी, ओढ "रतन" शुद्ध चीर ॥ ४ ॥

---

( ९ )

## निन्दक उपकार

( तर्ज— )

निंदा मोरी कोई करो रे, दोष विना सोचन कोय ॥ टेर ॥
निर्मल संजम सुद्ध परणामें, कासुं कहसी लोय ॥ नि० १॥
आप तणा गुण कर कर मैला, निर्मल करदे मोय,

---

१—पीड़ा, २ हृदय का हीर-सार, ३—हिस्सा

निंदक सम उपकार करे कुण, अंत करे ना जोप
|| नि० २ ||

बिन साबुन रुजगार दियां बिन कर्म मैल दे धोय ।
"रतन" जतन कर मन शुद्ध राखो सोने काट न होय
|| नि० ३ ||

---

( १० )

## विषयासग का परिणाम

( तर्ज- )

मत कोई करियो प्रीत, दुःख के फंद परेला ॥ टेर ॥
प्रीत वशे वश प्राण दिया मृग, हिरण सुण सुण गीत
|| म० १ ||

दीप पतंग पड़े नेणा वश, मधुकर[1] मरे हरीत,
रस रसना वश मीन[2] मरत है, कुंजर[3] होय फजीत
|| म० २ ||

दुश्मन पांच जोरावर जोधा, कपटी करे हरीत,
"रतन" जतन कर जो वश राखो, मोह कर्म ल्यो जीत
|| म० ३ ||

---

१-भवरा २-मछली ३-हाथी

( ११ )

# भ्रमना छोड़ो

( तर्ज–मुखड़ा क्या देखे दर्पण में )

तूं क्यों ढूंढे वन वन में, तेरा नाथ वसे नैनन में ॥ टेर ॥
कई यक जात प्रयाग वणारसी, कइयक वृन्द्रावन में
प्राण वल्लभ वसे घट अंदर, खोज देख तेरा मन में
॥ तूं० १ ॥

तज घर वास वसे वन भीतर, छार[1] लगावे तन में,
धर बहु भेष रचे बहु माया, मुगत नहीं छे इन में
॥ तू० २ ॥

कर बहु सिद्धि, रिद्धि, निधि आपे, वगसे राज बचन में,
ये सहु छोड़ जोड मन जिनसुं, मुगति देय इक छिन[2] में
॥ तूं० ३ ॥

मूल मिथ्यात मेट मन को भ्रम, प्रकटे ज्योत "रतन" में,
सद गुरु ज्ञान अजब दरसायो, ज्यों मुखड़ा दरपण[3] में
॥ तूं० ४ ॥

---

१–राख २–क्षण ३–मुख देखने का कॉच

## ( १२ )
# राजुल विलाप
( तर्ज— )

रूप, स्वरूप, अनूप, अमूरत, मोही रया ईद चंदाजी
नेम जिणदा मोने, विन अपराधे छोडी जी
॥ टेर ,। ने० १ ॥
सखी बरात मिलेर ने चाल्या, ये सालक ना छंदाजी'
॥ ने० २ ॥
पूर ओलमो कहन सकी जी, समुद्रविजयजी ना नंदाजी
॥ ने० ३ ॥
पूर सताप मरि प्रमदा हु , कही न सके दु ख इन्दाजी
॥ ने० ४ ॥
पशु नो पाप देखी परमेश्वर, छुट रच्यो ये फंदाजी
॥ ने० ५ ॥
राजुल एम विलाप किए अति, मोह कर्म मत मंदाजी
॥ ने० ६ ॥
"रतनचंद" धन्य नेम जिणेश्वर, छोड दिया सब फंदाजी
॥ ने० ७ ॥

---

१—टोला

१३

# प्रतिज्ञा पालन

तर्ज—

घर त्याग दिया जब क्या डरना ॥ टेर ॥

कर केसरिया रण उतरिया, पूठ दिखाय के क्या फिरणा
॥ घर० १ ॥

सन्मुख आय अडे रण जोधा, कायर होकर क्यों मरणा ।
कायर हुआ पिण गरज न सरसी, लाजसी सतगुरु का शरणा
॥ घर० २ ॥

वचन कही पलटे पल पल में, ते नर पशु पद में गिणना ।
सत पुरूपा को वचन न पलटे, सुख दुःख ले निज अनुसरणा
॥ घर० ३ ॥

चहुँ गति मांही भटक दुःख पायो, अब झाल्या सतगुरु
चरणा ।
'रतन' जतन कर सत सुध राखो, जग सागर सुख सु तिरणा
॥ घर० ४ ॥

१४

## कर्म फल

( तर्ज—राग काफी )

म्हारा प्रभूजी हो, कर्म गत जाय न जाणी ॥ टेर ॥

जग में चावी चन्दनबाला, सतियां में इधकाणी
पापक हाथ पड़ी परवश जब, चोहटे हाट बिकाणी
॥ म्हा० १ ॥

पतिव्रता सीता सतवन्ती, जग सघला में जाणी
अग्निकुण्ड नाखी रघुपतजी, ततक्षण हो गयो पाणी
॥ म्हा० २ ॥

त्याग वनिता पर वश भमियो, बेची सुतारा राणी,
हरिश्चंद्र राजा महा सतवतो, नीच घर भरयो पाणी
॥ म्हा० ३ ॥

मुञ्ज भूप धारा धिप[1] कहीजे, गोली प्रीत लगाणी,
ठीकरा हाथ ले फिर्‌यो घर घर में भली मोंत सहाणी
॥ म्हा० ४ ॥

बरस दिवस अन्न पाणी न मिलियो, आदि जिनेश्वर नाणी

१ धारा नगरी का स्वामी

घारे वरस वीर दुःख पायो. जग में प्रकट कहानी
॥ म्हा० ५ ॥

नगर द्वारिका करी सोवन मय, इन्द्र तणो अगवाणी.
कृष्ण देखतां सुर दीपायन, वाल करी धूलधाणी
॥ म्हा० ६॥

'रतनचन्द' कर्मन की गतिका, अनंता अंनत कहाणी.
आपो खोज करे आतम वश, तो ले पद निरवाणी
॥ म्हा० ७ ॥

---

१५

## सांची सीख

तर्ज—

थारे जीवा भूल घणी रे ॥ टेर ॥

आल पंपाल मांही रहे रातो, तज जिनराज धणी रे
॥ थारे२ १

कुमत कुपातर महा दुःख दायक, ते कीनी निज घरणी रे
सुमत सखी रो वचन न मांने, आ भूल अनादि तणी रे
॥ था० २ ॥

अल्प सुख ने दुःख बहुतेरो भाखित¹ श्री वीर भणीरे
परमाधामी सखत मार सु, पींचे एक अणी रे
॥ अ० ३ ॥

पुद्गल प्रीत करे तू निश दिन, आ नर्क तणी करणी रे
राग द्वेष छोड़े तन मन सु, तो हाजिर शिवरमणी रे
॥ आ ४ ॥

विषय तणां सुख कारमा काररा, हारे "रतन" भणीरे
सुमत सीख माने नहीं मूरख, कुमत बधू परणी र
॥ आ ५ ॥

---

१६

## रसना इन्द्रिय निग्रह

तर्ज—

रसना विगर विचारी मत बोल ॥ टेर ॥
विगर विचार्यां वचन वदूयां सु, घटसी थारो तोल
॥ रसना० १ ॥

वचन दुधार चतुर नर करसे, मान सही को मोल

१ भाखित—कहा

आल पंपाल वदे अविचार्यो वाजे अपजस ढोल
|| रसना० २ ||

बीजा में एक दोष दोय तोमें[1], खाय बिगारे अमोल
जो कोई धर्म वने मुख बोल्यां, झट दे तालो खोल
|| र० ३ ||

जो कोई आण उपाद उठावे, वचन वदे डमडोल
तो तूं जाण उपाद करे नर, देत कर्म झकझोल
|| रस० ४ ||

सतगुरू वचन कुठार करीने, कर्म काठ को छोल
"रतनचन्द" कहे इतनो में तोसूं, कर लीधो छे कोल
|| रसना० ५ ||

---

१७

## विषय विडंबना

( तर्ज—पूर्ववत् )

विषया वश जन्म गयो रे ४ ||टेर||

सूखो करक* श्वान सुख मानत, अमृत आहार लह्यो रे,
अपनो रुधिर आप सुख मानत, मूरख राच रयो रे ||वि||१||

---

१—तेरे में *सूखी हड्डी ।

रावण आवे तो घर लूटे, मग में कुवास लयो रे,
खर पाड़े वसि मस्तक मूंडे, फिट फिट सर्व कह्यो रे॥वि२॥
जलतो थम्भ करे जम राजा, घर हर कंप रयो रे,
परनारी प्यारी कर धारी, परवश दु:ख सह्यो रे ॥वि॥३॥
"रतन" जतन कर शील अराधो, नीठ नीठ मग लह्यो रे
अब के चूक पड़ी जीव तो में, तो विरथा जन्म भयो रे॥वि४॥

---

१८

## सुमति विचार

(तर्ज—राग खमाच)

विनवे सुमता नारी घर आवोनी प्यारा ॥ टेर ॥
कुमत कुपातर कुटिल सरी संग छोड़ो नी सेय हमारा
॥ वि० १ ॥
राग द्वेष दोष कुवर कुपातर, मधिया करे विकारा ॥वि० २॥
नरक निगोद री सेज सुटावे, कर कर घोर अंधारा
॥ वि० ३ ॥
सुमत सखी सुविनीत सुकोमल, निज सुख अमृतधारा
॥ वि० ४ ॥

समकित सेज संतोप सुलाई, ज्ञान दीपक उजियारा
॥ वि० ५ ॥
कीजे सहल महल शिवपुर की, सहु जग दास तुम्हारा
॥ वि० ६ ॥
"रतनचंद" कहें सीख सुमतकी, मानो नी अकन कुंवारा
॥ वि० ७ ॥

---

१६

## कर्म गतिका

( तर्ज— )

कर्म तणी गत न्यारी कोई पार न पावे ॥ टेर ॥
पुंडरीक तीरयो तीन दिवस में, कुंडरिक नरक सिधावे
॥ क० १ ॥
गुरु वेमुख थयो गोशालो, अंते समकित आवे
॥ क० २ ॥
संजति राय आहेडा करता, जनम (जामण) मरण मिटावे
॥ क० ३ ॥
चार हत्या कर चोर प्रहारी, देव विमाने जावे ॥ क० ४ ॥
"रतनचन्द" कर्मन की गतका, अनंता अनंत कहावे
॥ क० ५ ॥

---

२०

## मानव भव पाया

( तर्ज— )

मानव को भव पाय ने मत जाय रे निरासा
आतम ज्ञान अनूपम सागर, सद्गुरू देवे दिलासा
|| मा० १ ||

तन धन योवन पल में पलटे, ज्यों पाणी बीच पतासा
|| मा० २ ||

मात, पिता, तिरिया, सुत, बन्धव, ज्यूं पंखी तरु वासा
|| म० ३ ||

हाथी हसम घोड़ा चकडोला, सजिया है महल निवासा
|| मा० ४ ||

क्षमा समुद्र में पस ने प्यासा, रहता है वो हासा
|| मा० ५ ||

सुख सागर की लहर सजीने, किम करे जमघर वासा
|| मा० ६ ||

"रतनचन्द" कहे धर्म आराधो, ज्यूं सफल फले मन आशा
|| मा० ७ ||

२१

## समता रस

( तर्ज— )

समता रस का प्याला, पिवे सोई जाणे ॥ टेर ॥
छाक चढी कबहू नहीं उतरे, तीन भवन सुख माने
॥ पी० ॥ १ ॥
एह सम अवर नहीं रस जग में, इम कहे वेद पुराणे
॥ पी० ॥ २ ॥
सकल क्लेश टले एक छिनमें, जो समता घट आणे
॥ पी० ॥ ३ ॥
चोर चेलापति समता रस कर, पायो अमर विमाणे
॥ पी० ॥ ४ ॥
"रतनचन्द" समता रस प्रकट्यां, लहि केवल ज्ञाने
॥ पी० ॥ ५ ॥

---

## २२

# चेतनता

(तर्ज—)

ओळो जनम जीवयो थोड़ो, चेतन मनमें करिये रे
॥ ओ० टेर ॥

चेत चेत रे चेत चतुर नर, आतम कारज करिये रे
॥ ओ० १ ॥

कर सिणगार नार सुख आगल, लेकर ओड़ी ऊभी रे।
व्यापी पीड़ चटकदे चाल्यो, बिगड़ गई सह खूबी रे
॥ ओ० २ ॥

चढ़ चकडोल खोल चर कसकी, मोहन माला गलमें रे
भऊँ दिश महक रही खुशपुर, पिया छोड़ चल्यो इक पलमें रे
॥ ओ० ३ ॥

रूप सरूप अनूप अनोपम, कंचन वरणी कायारे
दर्पण निरख निरख सुख पावे, पिया चलमारी कायारे
॥ ओ० ४ ॥

लाख क्रोड़ रोकड़ धन मेल्यो, कर कर कपट कमाई रे
रात दिवस दाड़ धन कारण, ए पिण भूत[१] मिठाई रे
॥ ओ० ५ ॥

१—भूत की मिठाई जैसे मात्र हसने को होती है।

कर पय-पान खान रितु रितु ना, दिन दिन मांस अआयो रे
सूंख वरत पच्चखाण न दीसे, काल अचिन्तयो आयो रे
॥ ओ० ६ ॥

मोती कड़ा किलंगी ने कुंची, शीश मुकुट नग जड़ियारे
चऊं दिशी कटक खढा दे भोला, तेह अचानक पडियारे
॥ ओ० ७ ॥

"रतनचन्द" आनन्द सुधारस, प्रेम पियाला भरिये रे
अमृत जड़ी सुगुरू की सेवा, तिण सेती निसतरिये रे
॥ ओ० ८ ॥

---

## २३

# अभिमान त्यागो

तर्ज —

कर गुजरान गरीबी सुं, मगरूरी किस पर करता है ॥टेर।
ओछो रिजक अल्पसी पूंजी, क्यों पग चौड़ा धरता है
॥ कर ॥ १ ॥

बांकी पाग छिटकता छोगा, मौज करी मन हरता है,
लागी लपट निपट करमन की, घर घर दाना चुगता है
॥ कर ॥ २ ॥

लगा सुगमोय, नजर कर जोडी, नार पराई तकता है,
कर्म मान कर दीधो म्होलो, जिस जिस आगल मगता है
॥ कर ॥ ३ ॥

मणी हद–सेज हेम कर सुन्दर, महल मला मन गमता है,
गिट गयो काल उठ्यो इस राजा, मिटी न माया ममता है
॥ कर ॥ ४ ॥

मोह अंग होडे पद घोड, जौबन जोर दिखाता है,
निरखे नार मचक्र पड़ी धरखे, उठ अचानक चलता है
॥ कर ॥ ५ ॥

अवध सुवध रोकड धन भेल्यो, माया माया धर मरता है,
इसजग अस्त राव लेलेवे, हाय हाय कर मरता है
॥ कर ॥ ६ ॥

षट षकडोल करे रंग रोला, मोह करी मन रचता है,
उकलरही काल की हडिया, आय पडे सोई पचता है
॥ कर ॥ ७ ॥

करी उपदश जोड जयपुर में, भविक हर्ष कर सुनता है,
"रतनचन्द" गुरुवचन सुधारस, मेट सर्वा दुःख मिटता है
॥ कर ॥ ८ ॥

२४

# परिग्रह त्याग

तर्ज—

हेरिए जग जंजाल सपन की माया, इस पर क्या गरभाणा रे
॥ टेर ॥

घट गई आयु रहन नहीं पावे, क्या राजा क्या राणा रे ॥हे॥१॥

कर में काच राख मुख निरखे, रूपदेख हरपाणा रे
सुन्दर नार खडी मुख आगल, सेवट वास मसाणा रे
॥ हे ॥ २ ॥

गादी वेस गर्व अति तोले, बोलें मगज भराणा रे,
अन्दर ज्ञान इतो नहीं सोचे, आपद निकट पयाणा रे
॥ हे ॥ ३ ॥

कर कर कपट निपट धन मेल्यो, संच संच इक दाणा रे,
मद छकियो मन में नहीं सोचे, सेवट माल विराणा रे
॥ हे ॥ ४ ॥

थोड़े दिवस कर्म वहु बांध्या, कर कर ने कमठाणा रे
पोढण काल पहुँचो परभव में, ठाली पड्या ठिकाणा रे
॥ हे ॥ ५ ॥

भूला पुण्य शीस तल छाया, आये भमर पग भराया रे,
उड़ गई नींद सुखी दो आंखिया, अन्त छायां का छाया रे
॥ ६ ॥ ६ ॥

सपन राज लह्यो सह जग का, सिर प छत्र धराया रे,
जाग्यां पत्र छत्र की भाग्यां, मांग मांग मन लाया रे
॥ ६ ॥ ७ ॥

*"रतनचन्द" जग देख अस्थिरता, निजगुण मन ठहराया रे*
अलख लख्यो सद्गुरु के वचने, पुद्गल भर्म मिटाया रे
॥ ६ ॥ ८ ॥

---

२१

## नश्वर काया

तर्ज

थांरी फूल सी देह पलक में पलटे क्या मगरूरी राखे रे
आतम ज्ञान अमीरस तजने, जहर सढ़ी किम चाखे रे
॥ था ॥ १ ॥

काल बली थांरे लारे पड़ियो, ज्यों पीसे त्यों फाके रे,
जरा मजारी छल कर बैठी ज्यों मूसा पर ताके रे
॥ थां ॥ २ ॥

सिर पर पाग लगा खुशबोई, तेवडा छोगा नाखे रे,
निरखे नार पार की नेणे, वचन विषय किम भाखे रे
॥ था ॥ ३ ॥

इन्द्र धनुष ज्यों पलक में पलटे, देह खेह सम दाखे रे,
इण सूं मोह करे सोई मूरख, इम कहे आगम साखे रे
॥ था ॥ ४ ॥

"रतनचन्द" जग इवर्था, फंदिए कर्म विपाके रे,
शीव सुख ज्ञान दियो मोय सतगुरु तिण सुख री अभिलाखे रे
॥ था ॥ ५ ॥

---

२६

## बलवान काल

( तर्ज— )

इण काल रो भरोसो भाइ रे को नहीं,
किण विरियां में आवेरे ॥ टेर ॥

बाल जवान गिणे नहीं, ओ सर्व भणी गटकावे रे ॥ इ १ ॥

बाप दादो बैठो रहे, पोतो उठ चल जावेरे,
तो पिण ढेटा जीवने, धर्म री बात न सुहावे रे
॥ इ० २ ॥

मन्दिर महल ने मालिया, नहीय निवास न नालो रे
स्वर्ग मृत्यु पाताल में, कठेई न छोड़े कालो रे ॥ इ० ३ ॥
घर नायक खामी करी, रंगा करे मन गमती रे,
काल अचानक ले चल्यो, धोकर्या रह गई भिलती रे
॥ इ० ४ ॥

रोगी उपचारण मणी, वेद विचक्षण आयो रे
रोगा ने ताजो करे, अपणी खबर न पायो रे ॥ इ० ५ ॥
सुन्दर जोड़ी सारखी, मनहर महल रसालो रे
पोढ़या ढोल्या पे प्रेम सु, आण पहुँचे कालो रे
॥ इ० ६ ॥

राम करे रलियामनों, आयो इन्द्र अनूपम दीसे रे
वैरी पकड़ पछाड़ ने, टांग पकड़ ने घीसे रे ॥ इ० ७ ॥
मन्मथ बालक देखने, मांडी, मोटी आसो रे
पलक मांही परभव गयो, रह गयो आप निराशो रे
॥ इ० ८ ॥

नार निरख ने परणियो, आयो अपमरा ने अनुहारो रे
छल उठने चल दियो, उभी देखा पावे रे ॥ इ० ६ ॥
नटवो चढ़ियो नाचवा, दाम लेवबारो कामी रे
पग छिटकी पड़ियो तल, एसा काल अस्तामी रे
॥ इ० १० ॥

चेजारो चित चूपसु, करी इमारत मोटी रे।
जीमण उतरतो पड्यो, खावरमें सकियो रोटी रे
॥ इ० ११ ॥

सुर नर इन्द्र किन्नरसे, कोई न रहे निशंकारो
मुनिवर कालने जीतिया, जे दिया जुगतमें डंकारे
॥ इ० १२ ॥

किशनगढ में सतसठे, आयो सेखे कालोरे
"रतनचन्द्र" कहे भविप्राणी, कीजे धर्म रसालोरे
॥ इ० १३ ॥

## कथलो छोडो

(तर्ज—नवरसानी देसी)

कथलो मांड्यो रे साधुजी करे विकथा सुगतों छांड्यो रे
॥ टेर ॥

कोई कहे म्हारो अरट्यो भागो, होथ अंगुलिया सुनीरे
बालक बल धीन्यो तकलीमें, कातन सकी एक पुणीरे
॥ क० १ ॥

एक कहे गोबर नहीं ल्यावी, फिर फिर आवी खाली रे,
एक कहे राते सीत सतावी, ओढन ने नहीं राली रे
॥ क० २ ॥

एक कहे म्हारी भरियां बिगड़ी, सूख धयेरो नाक्यो रे
एक कहे पापड़ खावथीयां, खीम न भावे धास्यो रे
॥ क० ३ ॥

एक कहे म्हारे पूत नहीं घर में, छेरधारी सास्यों टूटी रे
एक कहे अस पियो कलकल्स शो, कोरी मटकी फूटी रे
॥ क० ४ ॥

कोई कहे इन्द मिरच बिन फीकी, नीकी नहीं तरकारी रे
कोई कहे पिरंको पक्यो खाली, मिले नहीं पणियारी रे
॥ क० ५ ॥

कोई कहे म्हार सिर पर न टिके, ओढनो मिलियो कठोर
एक कहे नहीं कछुक सखरो, साबटो फेट्यो फटोर
॥ क० ६ ॥

कोई कहे म्हारो पूत न परणयो, बहुभर पाय न लगाई रे
एक कहे म्हारी पुत्री न हुई, पुरुयो नहीं जमाई रे
॥ क० ७ ॥

एक कहे म्हारी बेटी मोटी, देखो अजय न परणी रे
एक कहें पइसो नहीं घर में, आई छ आगरणी रे
|| क० ८ ||

एक कहे हूँ पेटनी दाभी, हालरियो नहीं दीधोरे
एक कहे बहु घर में लाय ने, पूत परायो कीधोरे
|| क० ९ ||

एक कहे म्हारी विछुडिया भागी, लंगर दीधा राली रे
कोई कहे चूंपा नहीं दांत में, नाक में सादी वाली रे
|| क० १० ||

कोई कहे तिमणियो नहीं पहरयो, गलो अडोलो दीसेरे
कोई कहे घर मिल्यो भाड़ारो, नितका टोकरा घॉसेरे
|| क० ११ ||

कोई कहे अलतो नही घरमें, मूल न मेंदी राची रे,
एक कहे छाणां नहीं घरमें, रोट्या रह गई काची रे
|| क० १२ ||

कोई कहे म्हारे चूड्याँ बधगई, रंग बिना चूडो नहीं सोवेरे

मतलब तणो भाई मिलकर बैठी, पर ना रोवणा रोवे रे
|| क० १३ ||

"रत्नचन्द" कहे कपटी छोड़ो, कहूँ केने हूँ थाने रे
सीख ये धर्म सुधारो पावो, तो श्रीमली ने मत राखो रे
|| क० १४ ||

२८

## सुकृत की सीख

(तर्ज—साजन सीख करूं गो)

सुकृत करलो रे सू जी, थारी पड़ी रहेला पूंजी || टेर ||

कूड़ कपट करने चतुराई, घणी कमाई पेढी
भोला टीलां कपट करोला, मती निकली सिढी
|| सु० १ ||

कूड़ कपट कर माया भेली, नीठ नीठ कर संचली
पाव पलक में परभव पहुँचो, पड़ी रही सब खरची
|| सु० २ ||

मखिको होवे भोलो बोले, बोले मधुरी बानी

एंडा मारे धर्डी उडीवे, करे अन्तर काणी
॥ सु० ३ ॥

धर्मादान अकारज करने, धन मेल्यो नवि खूटे
कुलजग कोला सबले लेवे, अंध कोयांना छूटे
॥ सु० ४ ॥

निखरी खाय पहरे पण निखरो, सुख भर नींद न सोवे
नर सुखियो दीठो नहीं इणसुं, तो पिण इणने रोवे
॥ सु० ५ ॥

पीपल-पान कान कुंजर को, डाभ अणी जल जाणो
इणसुं मोह करे सो मूरख, अन्तर-ज्ञान पिछाणो
॥ सु० ६ ॥

कमला-पतनी कमल हुई, एतो गणिका नारी
रावण काज अकाज करे नर, कर कर वात दगारी
॥ सु० ७ ॥

कोड थकी कपिल नहीं धायो, आठमो चक्री देखो
लागी लाय कदे नहीं धापे, जो मिले काठ अनेको
॥ सु० ८ ॥

दवो दान पाड़ोसी देखी, मूं डो करदे कालो
उलटो दुःख आवे हृदय में, अहो लोभ को पालो
॥ मु० ६ ॥

राजा मुदता ने मांडलिया, हरि हलधर महाबलिया
माया नारी कामणगारी, कृष्ण कृष्ण मिनख न छलिया
॥ मु० १० ॥

संवे कवल कृपामय नगरे चैत महीने आया
"रतनचन्द" कहे मू खी मिनखे, सेंठी पकड़ी माया
॥ मु० ११ ॥

---

२६

## शिवनगरी और सिद्ध

[ तर्ज—]

नगरी खूब बणी छेजी, जिणरा सिद्ध धणी छेजी ॥ टेर॥
दरशण हूंस घणी छेजी, आगम वैद्य सुणी छेजी
॥ नगरी० १ ॥

सम भूतल थी ऊंची अलगी, सात राज परमाणे

लाख पैंतालिस योजन चहुंदिश, ज्ञान बिना कुण जाणे
|| न० २ ||

स्फटिक रतन हार मोत्यांरो, संख समुज्जल दाखी
अर्जुन सोना मांहि मनोहर, वीर जिणेश्वर भाखी
|| न० ३ ||

दस दरवाजा हिवड़ा जड़िया, पांच रहे नित खूटा। (छूटा)
करो किल्लो कायम इक छिन में, आठ कर्म सूं छूटा
|| न० ४ ||

सुरनर असुर इन्द्रथी इधका, मुनिवर ना सुख जाणो
तिणसुं अनंत अखे[1] सुख तिणमें, कर्म हणीने माणो
|| न० ५ ||

तिरखा भूख सुख दुःख पुदगल, मूल न दीसे कोई
एक नहीं पिण रहे अनंता, नहीं बस्ती नहीं रोई
|| न० ६ ||

तिण नगरी में बसे धनवंता, चहुं दिश हुन्डियां चाले
माल खरीद लेवे चहुं गतनो, मूल न पाछो घाले
|| न० ७ ||

१—अछे पाठ भी मिलता है।

शुभ अशुभ एक नहीं कीजे, सो जग छोटो मोटो
जीते कासी अनंत व्योपारे, नफो, न दीसे टोटो
[illegible]

होवे नहीं रहे जग थिरता, दाता नहीं सिष-दायक
जावे छे पिया न आवे पाछा, सेवक नहीं कोई नायक
॥ नं० १०॥

काया माँही पिण अटल अवगाहना, श्वास नहीं पियासे
धर्म पाप तो मूल न दीसे, खाग भोग नहीं एके
[illegible]

महिपुर में शिवपुर ने गामोर मायो परम आनंदा
''रतनचन्द'' कहे तिण नगरी बिन, कटे नहीं, दुख फंदा
॥ नं० ११॥

इकसठ साल रसाल नगर में, मल भादरवे गायो
काल अनंत रूल्यो चिहु गत में, अब तो मारग पायो
॥ नं० १२॥

( ३० )

## सत संगत, महिमा

तर्ज—पूर्वत

संगत खूब मिली छेरे,
चेत चेत रे चेत, चतुर नर वात भली छेरे ॥ टेर ॥

भवसागर में भटकत भटकत, मिनखा देही पाई ।
शुद्ध आचारी सतगुरु मिलिया, प्रकटी वडी पुन्याई
॥ सं० १ ॥

हीरा, मोती, लाल, पिरोजा, वार अनंती मिलिया ।
निरलोभी गुरु अबके भेट्या, भव भव फेरा टलिया
॥ सं० २ ॥

इण जग में बहु कपट निपट है, मंडी पैम की पासी ।
सदगुरु शब्द हिये नहीं धारियो, तो अेल जमारो जासी
॥ सं० ३ ॥

कुगुरु सुगुरु ने सम मत जाणो, बुधवंत कीजो निरणो ।
गाय दूध सुं तृपति होसी, आक दूध सुं मरणो
॥ सं० ४ ॥

वस्तर, पातर, अहार ने थानक, दोषीला आदरिया ।
बेला तेला, तप अट्ठाई, सर्व गमाई किरिया ॥ सं० ५ ॥

निरपिंड मोल लयो क्ले लावे, माया कर्मी लाय ।
उत्तराध्ययन सूत्र में देखो, मरने दुरगति जावे ॥ स० ६ ॥
मूल मिथ्याती दुरगत साथी, जग में बहु पाखंडी ।
पक्ष-समाय करी भव जीवां, कुगुरू संग तुयो छांडी
॥ सं० ७ ॥

काया माया बादल छाया, एक सरीखी भाखो ।
विषय-विकार खार सम खाखी, मन में ममता म्हाखो
॥ सं० ८ ॥

सुध गुरू बिन सुध ज्ञान न पावे, हिये बिमासी जोयो ।
साधु असाधु बरोबर गिणने, हीरो जन्म मत खोवो
॥ सं० ६ ॥

काल अनादि अनतो रुलतां, समकित रतनज लाधो ।
पांच प्रमाद टाल सहु भलगा, एकल चित्त आराधो
॥ सं० १० ॥

एकल पाट साठ में बरसे, चोमासो कियो पाली ।
"रतनचन्द" कहे सुणो भव जीवां, कुगुरू संग म्यो म्हाली
॥ सं० ११ ॥

---

( ३१ )

# समकित स्वरूप

तर्ज—

निर्मल शुद्ध समकित जिण पाई, जाके कमी रहे नहीं कांई
॥ टेर ॥

देव निरंजन गुरू निर्लोभी, धर्म दयामय जाणो ।
ने सिद्धान्त प्रमाण गिणीजे, जिणमें निर्वद्य वाणी
॥ नि० १ ॥

रंक थकी राजा पद प्रकटे, निर्धन थी धनवंत ।
समकित सुख रे जोड़े देतां, न आवे भाग अनंत
॥ नि० २ ॥

इण सम लाभ नहीं इण जग में, आगम वेद पुकारे ।
समकित विन. सहुकाज अकारज, जैसो लिपण छारे ।
॥ नि० ३ ॥

अंक विना जिम सुन्न इविरथा,[१] नाक बिना जिम काया ।
शील विना जिम रूप अकारथ, दान विना जिम माया
॥ नि० ४ ॥

१—व्यर्थ

समकित सूर्य उद्योत कियां थी, मिथ्या तिमिर नसावे ।
पूरब प्रीत घरे सो नरपति, रके नें कोटि मनावे
|| नि० ५ ||

समकित थी चारित्र होवे निर्मल, चारित्र थी सुख सारे ।
केवल मोच तणां सुख प्रकटे, जामण ( जन्म ) मरण
निवारे ।। नि० ६ ।।

पट खंड राय निधानि-रतन-धीर, सहस्र गेम धर्ग नारी ।
भरत निकाचित कर्मन बांध्यो, समकित नी पलिहारी
|| नि० ७ ||

कुवारी कन्या सिर छेदयो, चौर चिलातपति वन में ।
उपसम लह्यो प्रगीसर ( रखर ) वचने, पार पामिया छिन में
|| नि० ८ ||

कियो अघोर पाप परदेशी, सुखवी पिय मन धरके ।
समकित थी सुरनो पद पायो, शिव वासी अवतरके
|| नि० ९ ||

दस वरत पंन्चदशासन दीर्से, श्रेणिक कृष्ण वदीता
समकित थी जिनवर पद पाया, पाप प्रभावने जीता
|| नि० १० ||

गो ब्राह्मण ने बाल हत्यां और, मार हत्या पिण कीधी।
सम भावथी समकित फरसी, सुरनी पदवी लीधी
॥ नि० ११ ॥

एम अनेक ओपमा करने, भिन्न भिन्न वीर वखाणी
दोपण टाल समझ सुन करजो, रतन चिन्तामणि जाणी
॥ नि० १२ ॥

एकण घाट सित्तरमें वरसे, हर्ष सु शहर नगीने
"रतनचन्द" कहे समकित सेवो, जो चावो मुक्त रमणीने
॥ नि० १३ ॥

(३२)

## चतुर नर चेतो

(तर्ज—हारे नाजक गाडी वाला थारी गाडी)

चेत चेत रे चेत चतुर नर मिनख जमारो पायरे ॥ टेर ॥
आरज क्षेत्र उत्तम कुल श्रावक, आयु निरोगी कायरे
॥ चे० १ ॥

जिनवर वचन अमीरस तजने, ढील कियां दुःख पायरे।

रतन अमोलख धर्म पदारथ, आलस में न गमायरे
॥ चे० २ ॥
राग रीस खीजे नहीं किणपर, न करे क्रोध कसायरे ।
हस्तामल-पर सर्व पदारथ, देख रह्या जिनराय रे
॥ चे० ३ ॥
देव निरंजन अलख न लखिए, बाह्य¹-दृष्टि लगाय रे ।
मन वच काय ध्यावतां जिनवर, भवरन आवे दायरे
॥ चे० ४ ॥
गुरु गुरु करी जगत सहु दूषो, गुण बिन गुरु दुःख दायरे ।
धोलो बाथ सर्प पय पितां, श्रद्धा-मूल ख  वायरे
॥ चे० ५ ॥
निव पिंड मोल लखी नहीं शंका, भाषा कर्मी खाय रे ।
नरक निगोद में पड्या अनंता, साधु नाम धरायरे
॥ चे० ६ ॥
दृष्या टाल्त गाल मद माया, हो बैठ्या मुनिराय रे ।
ते गुरु वंद खंड सहु पंथा, सो शिवपुरनी पायरे
॥ चे० ७ ॥
अन्यमती जीव दया धर्म माने, खोटी युगत लगाय रे ।

१ चम चक्षु से

ते कर धर्म भर्म तज सघलो, न मरे जीव छः कायरे
॥ चे० ८ ॥

केवल पुंज पदारथ घट में, प्रगटे परचे पायरे
चंचल मेट करे चितथिरता, ते तूं धर्म संभाय रे
॥ चे० ६ ॥

देव गुरु धर्म पदारथ परखो, निरखो नैण लगायरे।
या तीनां में चूक पड्यां थी, धका नरक में खायरे
॥ चे० १० ॥

कुंजर-कान पान पीपल को, इन्द्र धनुष देखायरे।
काया माया बादल छाया, पल मे पलटी जायरे
॥ चे० ११ ॥

भटक्यो विविध परे सुख कारण, रंक जेम विललायरे।
अखै खजानो कृपा करीने, सतगुरु दियो बतायरे
॥ चे० १२ ॥

गमी वस्तु घर मांही मूरख, बाहिर जोवण जायरे।
ज्ञान गंगा प्रगटी घट अन्तर, राखे मेल वलायरे
॥ चे० १३ ॥

अड़सट साल पीठ पाली में, जेठ महीने आय रे।
"रतनचंद" भवियण हित कारण, दीधी ढाल बणायरे
॥ चे० १४ ॥

## सपने की माया

(तर्ज—बहुत मिजाज किया हो)

जगत सहु सपने की माया ॥ टेर ॥

तन धन जोबन पलक में पलटे, ज्यों बादल छाया ॥ ज० १ ॥

पुद्गल फंद सों बंध इसरया, मोला भरमाया ॥ ज० २ ॥

कंचन महल ने मोहन मूरत, ते सुत बिललाया ॥ ज० ३ ॥

निज मुख काच निरख मुख करते, सो छार करी काया ॥ ज० ४ ॥

चक्री वासुदेव थिर नहीं दीसे, क्यों मंडलिक राया ॥ ज० ५ ॥

परमेश्वर एक पल न सुमरियो, धंधो ही में ध्याया ॥ ज० ६ ॥

बन्धन बांध दु खोश मांडी, पिछे माया सी ही जाया ॥ ज० ७ ॥

'रतनचंद' मर्म देखे मथिरिता, सद गुरु परखे पाया ॥ ज० ८ ॥

( ३४ )

## ठगलगा तेरी लारे

तर्ज—

गाफिल केम मुसाफिर ठग लागा तेरी लार ॥ टेर ॥

एक बार ठगियो फिर न ठगावे, तूं ठगियो सौ बार
॥ गा० १ ॥

फल–विपाक विषय सुख सेवन, फांसी बहु परिवार
ठग वनिता जिम वनिता जाणो, करसी तोय खुवार
॥ गा० २ ॥

मोह महीपत महा जोरावर, चहुँगत वणीय कंतार
ज्ञान-दर्शन-चारित्र धन लूटे, समझे नहीं गिवार
॥ गा० ३ ॥

तूं सुख माने पुद्‌गल में, ते सुख दुःख अणुहार
निज सुख "रतन" अमोलक घट में, झट ले खोल किमार
॥ गा० ४ ॥

( ३५ )

## सप्तव्यसन निषेध

दोहा–श्रावक नाम धरावने, एहवा करे अकाज
तिणने समझू सरधता, मन में आवे लाज

तर्ज–१ छू सोले छिन सोवन परगा

अण्डा मारने चड़ियां उडावे, सुपरी वद करने दिखावे
त्याग नहीं पार की नारी, ते श्रावक किम उतरे पारी ॥१॥
परनारी ने रहे तकता, जिम ग्रहस्थ मांही फिरता मगता
वचन वदे अति विकारो ॥ ते० २ ॥
घृत खाय ने पेट भर, विस्वास देयने घात करे
लाजे धरम निंदे संसारो ॥ ते० ३ ॥
नीर अणछाणया मांही पड़े, भैंसा जिम पेस ने रोल करे
पछे पीवण रो नहीं परिहारो ॥ ते० ४ ॥
कन्द-मूल भखे ने तके मूला, बहु बीआरी रांध करे होला
बलि बारे भखे झट संहारो ॥ ते० ५ ॥
चले गर`-रम न बोले अकड़ता, परनारी तक रस्तु फिरता
सबस मिले तो खावे मारो ॥ ते० ६ ॥

१–होली का खेल

अछता कजिया मांहि मिले, कबड़ी साटे पेजार[1] चले
यो उत्तम रो नहीं आचारो ॥ ते० ७ ॥
हुक्को पीवे ने मनमांम भखे, रात्रि भोजन निश दिवस तके
खातां खातां पड़ जावे अधारो ॥ ते० ८ ॥
कुलरी कूडी रूढ ताणो, वलि खल गुड़ एक सयो जाणे
जिम मद छकियो कोई नरनारो ॥ ते० ९ ॥
गुरु मिल्या हीणाचारी, विरदाय[2] कियो आप इधकारी
चोर कुतिया मिल्या किणरो सारो ॥ ते० १० ॥
ग्राहक मिलियां सखरी दाखे, छल बल कर निखरी नांखे
कूडा सोंस खाय केई अण पारो ॥ ते० ११ ॥
कर्मादान करे पन्दरे, वलि पत्थर फोडायन विणज करे
वलि ऊंठ बलद रो लेवे भाडो ॥ ते० १२ ॥
चुगली खाय कहे अछती, पर घर बोवै (ले) नहीं सांच रत्ती
जाणो धर्मी ठग चुगला कारो ॥ ते० १३ ॥
वचन आडम्बर कहे अछतो, थोथो बादल जिम गरचतो
लोक नी लाज नहीं सिगारो ॥ ते० १४ ॥

---

१—जूती २—बढ़ावा देकर

परदोष न देख तिल जिसरो, पले भक्षतो आल देवे निसरो
पर निंदा रो नहीं पारो ॥ ते० १५ ॥
नहीं दस वरत पच्चखाण रती, तप मूल करे नहीं सगत छती
टट पक्ष्यो गावया लारो ॥ ते० १६ ॥
देव गुरु धर्म नहीं ओलखिया, मति थारम्भ में भाज मुखिया
पिख अन्तर गत मांही अन्धारो ॥ ते० १७॥
नौ तत्व तणो न कर निरणो, तिख अक्षतो मांड मेल्यो शरणो
किम उतरे भव जल पारो ॥ ते० १८ ॥
निसरा देव देवी पूजे, पिख अन्तर गत मांही नहीं सुभे
मांहि भ्रम तरण हारी ॥ ते० १६ ॥
इम सुखने ममता मेटो, एक देव निरंजन सुध भेटो
ओ भे चालो निस्तारो ॥ ते० २० ॥
भावक सीत्तनी इकवीसी, चोमासे अजमेर में निवसी
'रतन' कहे सुणो नरनारो ॥ ते० २१ ॥

---

( ३६ )

## सुमति विचार

तर्ज-

अब घर आवोजी

आवो आवो जी म्हारा मन-गमता[1] महाराज के

॥ अब० टेर ॥

सुमत सखी इम विनवे[1] साहिबा, लही समकित प्रस्ताव ।
राज अखंडित देखवारे साहिबा, मो मन अधिक उच्छावके
अब घर आवो ॥ १ ॥

हूं तो अल्हादी हो रहो रे साहिबा, देख तिहारो ढंग
दिन दिन तूं भीनो रहे रे साहिबा, कुमत कुपातर संगके
॥ अब २ ॥

पर-पुदगल रुचि मद पियोरे साहिबा, छकियो रहे दिन रात।
कुमत लपेटा ले रही रे साहिबा, कुण सुणे सुमत की बातके
॥ अब ३ ॥

दुःख विषम सुख अल्पता रे सहिबा, जैसो किंपाक ।
मही पुत्री[2] सिर नाखने रे साहिबा, न गिणे चढियो नर छाकके
॥ अब ४ ॥

तज मुक्ता गुंजा गहेरे साहिबा, जो हुवे मनुप अबूझ ।

---

१—प्रिय २—धूल

ज्यों कपटी मन्त्री मिलिया रे साहिबा, नहीं पड़े नृपने सुमके
॥ अब ५ ॥

काल अनत ममारियो रे साहिबा, तिखरी कृपालेह सुध ।
सो पिय तू समके नहीं रे साहिबा, बिगड़ गई थारी बुधके
॥ अब ६ ॥

जगत सिरोमणी शिवपुरी रे साहिबा, जिण में थारो राज ।
जो अमृत सुख अनुभवे रे साहिबा जहर विषम दुख काजके
॥ अब ७ ॥

जो मोह करे एकता रे साहिबा, तो भाजे सहु भ्रांत ।
निश्चल पद सुख भोगवे रे साहिबा, [१]भांगे सादी अनतके
॥ अब ८ ॥

सहु सुख पिंड करे एकठोर साहिबा, [२]वरगा वर्ग करंत ।
सो पिय थारा राज में रे साहिबा, नहीं आवे माग अनंतके
॥ अब ९ ॥

सुमत सखी हंस-राजणी रे साहिबा, मिलिया रूप अनुप ।
"रतनचंद" ते सुख मिलिया रे साहिबा, जग सुख आपद रूपके ॥ अब १० ॥

---

१—भाग ४ है । १- अनादि अनत २-अनादि शान्त ३-सादी अनत ४-सादी शान्त

२ —४ का ४ से गुणा करने से जो संख्या होती है उसे वग कहते है वर्ग का फिर वग से गुणा करने पर जो संख्या होती है उसे वर्गा वग कहते है ।

## ३७

# संसार असार

( तर्ज–गुजरो राग )

तू किणरो कुण थारो रे चेतनिया ॥
मात पिता तिरिया सुत बंधव मतलब केरा यारो रे
॥ चे० १ ॥
जो स्वार्थ पूरो नहीं इणको, तो तोड़े जूनो प्यारो रे
॥ चे० २ ॥
सज्जन बल्लभ न्याती गोती, है सब काल को चारो रे
॥ चे० ३ ॥
चार दिवस की है चतुराई, सेवट घोर अंधारो रे
॥ चे० ४ ॥
चेतन छोड़ चले जब काया, मिलगयो माटी में गारो रे
॥ चे० ५ ॥
"रतन" जतन कर धर्म अराधो, तो होसी निस्तारो रे
॥ चे० ६ ॥

३८

## कूच का नगारा

( तर्ज-राग प्रभाती )

ओबनियाँ की मोर्जा फोर्जा, वाय नगारा देती रे
चेत चेत र चेत चतुरनर, चिड़ियाँ चुग गई खेती र
॥ ओ०॥

छिनक छिनक में आयुष्य छीजे, क्यों कड़ियाबध एतीर
ओछा जीवण कारण चेतन, पके मुगल सु छेती रे -
॥ ओ० १ ॥

मात पिता प्रिया सुत बन्धव, मिली सम्पदा एती रे,
पलक पलक में सघली पलटे, ज्यों भरियो रेती रे
॥ ओ० २ ॥

काल की फोज घनी सिर उपर, फिरे लपटा लेतीरे
अविचल सुख की चाय हुव तो, प्रीत करो प्रभु सेती रे
॥ ओ० ३ ॥

जोबन लहर रंग पतंग सम, कई सियाणप केती रे
इण में 'रतन" दया सुख कारी, आराध्यां सुख देती रे
॥ ओ० ४ ॥

३६

# भ्रमवश पडयो रे

तर्ज—प्रभाती

उलटी चाल चल्यो रे जीवड़ला ॥ उ० टेर ॥

सांची सीख सुणे नहीं सरधे, मोह पिसाच छल्यो रे
॥ उ० १ ॥

स्वर्ग नी हूँस, नरक नी करणी, कर्म रे कीच कल्यो रे
॥ उ० २ ॥

आम नी हूँस धतूरो सींचे, कैसे आम फल्योरे
॥ उ० ३ ॥

कमर बांध लाग्यो आश्रव में, संवर भाव टल्यो रे
॥ उ० ४ ॥

"रतन" जतन कर धर्म अराधो, नीठ ओ जोग मिल्यो रे
॥ उ० ५ ॥

४०

# परनिन्दा निषेध

( तर्ज – चंचल चित्तड़ा तू गाफिल मत रह )

निंदा न करिए रे चेतन पारकी, जोजो हिए विमास ।
ओगुण छंडी गुण संग्रह करे, ज्यों मृग नाभ सुवास
॥ निंदा० १ ॥

पूठ न सूझे रे प्राणी आपकी, किम सूझे रे पर पूठ ।
मर्म न मोसो रे किण रो न भाखिये, लाख लहे मणीमूठ
॥ नि० २ ॥

आतम खोजीरे आपो वश करे, तो लहे ज्ञान रसाल ।
ओगुण करतां रे प्राणी पारका, तो कहिए कर्म चंडाल
॥ निं० ३ ॥

पर निंदा सम पातक को नहीं, हुवे समकित नो रे नाश ।
आगम मांही जिन ओपमा कही, खावे पूठ नो मांस
॥ निंदा० ४ ॥

सांची सीख ओगुण मत बाचजो, अवगुण आपरा देख ।
समकित "रतन" जतन कर राखज्यो, तो पास्यो सुख विसेख
॥ निं० ५ ॥

४१

## संत महिमा

तर्ज—राग कालगडो

समझ नर साधु किनके मित्त ॥ टेर ॥

होत सुखी जहा लहे वसेरो, कर डेरो एकन्त ।
जल सुं कमल रहे नित न्यारो, इण पर सन्त महन्त
॥ स० १ ॥

परम प्रेम धर नर नित ध्यावे, गावे गुण गुणवंत ।
तिलभर नेह धरे नहीं दिल में, सुगण सिरोमणि सन्त
॥ स० २ ॥

भगत जुगत कर जगत रिझावे, पिण नाशे मन भ्रान्त ।
परम पुरुष की प्रीत रंगाणी, जाणी शिवपुर पन्थ
॥ स० ३ ॥

"रतन" जतन कर सद्गुण सेवो, इणको एहिज तंत ।
टुकभर महर हुवे सद्गुरु की, आपे सुख अनंत
॥ स० ४ ॥

४२

## वृद्धावस्था की भयानकता

तर्ज—राग धमाल

बुढ़ापो वैरी आवियो हो ॥ टेर ॥

मात पिता सुत बन्धवा हो, सगा सनेही मीत ।
परणी नारी पदमणी हो, ते पिण नहीं देव चित

॥ बु० १ ॥

बोलतां जीभ लड़थड़े हो, कानां सुणे नहीं बैण ।
नाक न आवे वासना हो, मर रहया दोनों ही नैण

॥ बु० २ ॥

काया पड़गई भोम्भरी हो, पग पड़े नहीं ठांव ।
डांग पकड़ उभो हुए हो, आठी उठी गुड़ जाय

॥ बु० ३ ॥

दांत-सब खोसी पड़ी हो, टिर रया दोनूं ही होट ।
सारां सलके मुख थकी हो, आई पड़ी बरा वली पोट

॥ बु० ४ ॥

सायलपल खीयो पड्यो हो, सल पड़ गया रे शरीर ।

निकली हाड री पासली हो, हो गयो धोलो पीर
॥ वु० ५ ॥

सांस खास वदियो घणो हो, आवे मीट अपार
देहली होगई डूंगरी हो, सो कोसां थयो रे वजार
॥ वु० ६ ॥

वात कहै जो हित तणी हो, तो नहीं माने कोय
साठी वुध न्हाटी कहे हो, सुणावे सामो रह्यो जोय
॥ वु० ७ ॥

जरा तणां दुःख छे घणा हो, कहतां न आवे पार
"रतनचंद" कहै भविजनां हो, थे कीजो धर्म विचार
॥ वु० ८ ॥

---

४३

## सदगुरु की सीख

तर्ज—अब घर आवो हो लश्करिया

नीठ नीठ नरभव लह्यो रे जीवडला, तू पायो समकित रयण
सीख शुद्ध मानो रे सतगुरु की ॥ टेर ॥
गुण सागर गुरु भेटिया रे जीवडला, अब सुण सतगुरु का वयण
॥ सीख० १ ॥

भव भव मांही भटकियो रे सी०, जिम अरट तणी घटमाल।
जोग मिल्यो इस बोलनो रे सीवड़ला, सू अब तो सुरत संभाल
॥ सी० २ ॥

मात पितादिक मानजा रे सीवड़ला, प्यारो सगो सहोदर वीर।
मिल २ सघला बीछड्या रे सीवड़ला, कोई जीम अंजली नो
नीर ॥ सीख० ३ ॥

मांस भखे मद में छके रे सीवड़ला, पछी कुल मर्यादा मेट।
घोर-कुम्पां में ऊपनो रे सीवड़ला, तोन पिछाण्यो फाग्न्यां हेट
॥ सीख० ४ ॥

चहुं दिश खुशबोई खिली रे सीवड़ला, रहे सुधा में गर गांव।
रोग असाध्य जब ऊपनोरे सीवड़ला, तोने खिणमें किनो
खराब ॥ सीख ५ ॥

महल सहल इम्मत करे रे सीवड़ला, कोई मारी कमड़ा पहर।
काल अचाण्यो ले चल्यो रे सीवड़ला, अब कठै कसम[1] फिर्ग
पैर[2] ॥ सीख ६ ॥

आशा अनूपी कामनी रे सीवड़ला, कोई जण्यो मनोहर पूत।
पूत मरत परभव गई रे सीवड़ला, या बात बड़ी अद्भुत
॥ सीख ७ ॥

१—पति २—पत्नी–नारी

बेश बण्यो भूषण सिरे रे जीवडला, वले दर्पण में मुख जोय।
कोढ व्याप कीड़ा पड्या रे जीवड़ला, अब रही रूप ने रोय
॥ सीख ८ ॥

परनारी प्यारी करी रे जीवड़ला, वली डोढी निजर भिडाय।
भर मेले मोजां करे रे जी०, पिण काल बली गिट जाय
॥ सीख ६ ॥

कचन वरणी कामणी रे जीवड़ला, वली भर जोड़ी भरतार।
दिवस चार को चांदणों रे जीवड़ल, सेवट घोर अंधार
॥ सीख १० ॥

बेस बण्यो अंग ओपतो रे जी०, कांई कर कर घणी जलस।
सूल व्याप सटके चल्यो रे जी०, थांरी रही हियारी हूँस
॥ सीख ११ ॥

चढ चाल्यो सारां सिरे रे जीवड़ला, म्हे फोजा तणां किवाड़।
वैरी छल कर घेरियो रे जीवड़ला, तने मारयो पकड़ पछाड़
॥ सीख १२ ॥

जोम करी जोरे चढ्योरे जीवड़ला, मैं सघला में सिरदार।
लागी गोली गैब की रे जीवड़ला, तरे सती हुई घर नार
॥ सीख १३ ॥

घर म्हारो हैं घर तणो रे जीवड़ला, मोने मयणा द सन्मान ।
अंग मोड़ ऊभो रहे रे जीवड़ला, थई ग्रिम घोबी नो स्वान
॥ सीख १४ ॥

गादी पड़ मोजा करे रे जीवड़ला, चले पद गर्व ना मोल ।
कोप्यो नरपत बिगड़ियो रे जीवड़ला, अब तूर्यां सरोवर वोल
॥ सीख १५ ॥

सेज पखी कमये कनी रे जीवड़ला, चले बैठी पदमण पास ।
हाव भाव विभ्रम करे रो जीवड़ला, पिण गयो नरक दे सास
॥ सीख १६ ॥

सग सहेली सोमती रे जीवड़ला, या गावे सुरमर गीत ।
रसियाने रिझावती रे जीवड़ला, पिण पड़ी अचानक भींत
॥ सीख १७ ॥

पर रमणी घरणी करी रे जीवड़ला, ये लोक सकल की लाज।
आव घटी नरके गयो रे जीवड़ला, अब कूट रह्या जमराज
॥ सीख १८ ॥

चोरी कर चोरी करी रे जी०, तें लिया हमारा कोड ।
कोपे नरवत बिगड़ियो हो जी०, थारो माथो नाख्यो तोड़
॥ १६ ॥

निपट कपट छल बल करी रे जी०, तैं द्रव्य धरयो एक लाख ।
सुख विलसण के कारणे रे जी०, थारी हुई अचिन्ती राख
॥ सीख २० ॥

मन गमता भोजन करे रे जी०, तूं खट ऋतु मधुर पियूख ।
अनंत वेर मिसरी भखी रे जी०, थारी अजे न भागी भूख
॥ सीख २१ ॥

मन गमती मोजां करे रे जी०, कर शुभरमणी सूं हेत ।
ज्ञानदृष्टि सुं जोवतां रे जीवडला, थारी सेवट उड़सी रेत
॥ सीख २२ ॥

इन्द्रजाल सपना सभी रे जीवड़ला, या मिली वस्तु सब झूंठ ।
तो पिण तूं समझे नहीं रे जी०, थारी गई हियारी फूट
॥ सीख २३ ॥

हीणाचारी गुरु मिल्या रे जीवडला, तूं तजे न कुलरी रूढ ।
कुगुरु तणो संग वेसने रे जीवडला, अे गया अनंता बूड
॥ सीख २४ ॥

सुध पाले टाले मिरखा रे जीवड़ला, तू निर्लोभी गुरु सेव ।
मुक्त वधू परणावसी रे जीवड़ला, वली करे विमाणिक देव
॥ सीख २५ ॥

अष्टादस अठंतरे रे जीवड़ला, या करी पच्चीसी वेस ।
"रतनचंद" नागोर में रे जीवडला, कोई दीनों यो उपदेश
॥ सीख २६ ॥

४४

## काया पिंड काचो

(तर्ज—पेमालक्ष राग)

काया पिंड काचो राज काचो, छिनक में छीजे,
पलक में पलटे, मूढ मत राचो राज ॥ टेर ॥

फूटता वार नहीं लागे पल ज्यूं, मर्कं[1]—ईसको मांचो।
मोटा मलख सुपन के सौं छल, ते किम कर राख्यो सांचो
राज ॥ का० १ ॥

मकड़ी को जाल दिवाल धूम को, ज्यूं जल बीच पतासो।
काया होय गिरघ इम पूट में, ए मिर्थ बड़ो तमासो राज
॥ का० २ ॥

मल मूत्र दुर्गन्ध की क्यारी, दुख दावानल[2] आंचो।
सुन्दर वदन सोहे शशि ओपम, झूठ कथा मति वांचो राज
॥ का० ३ ॥

इम में "रतन" इसो हीत उत्तम, श्री जिनवरजी ने भांखो
लख चोरासी जगत जोन में, नटवा थई मत नांचो राज
॥ का० ४ ॥

---

१—भालके की लकड़ी की ईरा २—जगल की आग।

४५

## गढ़ वांको

( तर्ज—वेलाइल राग )

ओतो गढ़ वांको राज २, कायम करने शिव सुख चाखो राज
॥ ओ० ॥

आठ करम को घाट विषमता, मोह महीपत जाको ।
मुगतपुरी कायम की विरियां, विच २ कर रह्यो साको राज
॥ ओ० १ ॥

खांडे की धार छुरी को पानो, विषम सुई को नाको ।
कायम करतां छिन नहीं लागे, जो निजमन दृढ राखो राज
॥ ओ० २ ॥

जगत जाल की लाय विषमता, पुद्गल को रस पाको ।
रसकुं छोड नीरस होईजावो, जगसुख सिर रंज नाखो राज
॥ ओ० ३ ॥

"रतनचन्द" शिवगढ कुं चढतां, ऊठ ऊठ मत थाको ।
अचल अक्षय सुख छोड़ विषय सुख, फिर २ मत अभिलाखो
राज ॥ ओ० ४ ॥

४६

## अष्ट कर्मा को भ्रांटो

( तर्ज—राग वेलावल )

भ्रांटो कर्मा को राज भ्रांटो०, गाढो म्हारे पड़ियो ।
इद म्हारे पड़ियो सो तो अब काट्यो राज काट्यो ॥ भ्रां० ॥
पुद्गल जड़ मोय संग अनादको, हूँ चेतन शुद्ध साटो, ।
राग द्वेष न्याती इनही के, निश दिन करे मासु भ्रांटो राज
॥ भ्रां० १ ॥

समकित ज्योत उद्योत दवाइ, पंच विध कर पाटो ।
मोह मलेच्छ महा मदमातो, पेठ्यो निज गुण साठो राज ।
॥ भ्रां० २ ॥

वसु[१] कर्म वरगया[२] घेर लियो मोय, दाव्यो निज गुण घाटो
दिनकर प्रताप् प्रभु तुम पै, फर न रह याको फांटो राज
॥ भ्रां० ३ ॥

चहुँगतमांहि भम्यो चकरी जिम, निजगुण थर उपराटो । -
तिहुँ गुण "रतन" भये पर अन्दर कर्म कनक दल नाटो राज
॥ भ्रां ४ ॥

१—आठ २—समूह

## ४७

# कलि युग की छायां

तर्ज—

कूवे भांग पडी रे संतो भाई कूवे भांग पडी रे ॥ टेर ॥

सांची सीख सुणे नहीं सरघे, सहु में आण अडी रे
॥ सन्तो० १ ॥

कुल की कार मर्यादा लोपी, चाले मगज भरी रे
॥ सन्तो २ ॥

भला घरां री सुन्दर बाजे, वेश्यामांही मिली रे
॥ सन्तो ३ ॥

सतगुरु नाम धरावे सघला, इन्द्रियां वश न करी रे
॥ सन्तो ४ ॥

"रतनचन्द" सुघ धर्म न आराध्यो, तो आगे नरक खडी रे
॥ कूवे ५ ॥

# चारित्र विभाग

१

# धन्ना मुनि

तर्ज–

धन्ना हूँ वारी तो थांरी देह तणी छवि निरख धन्ना मैं वारी हो
॥ टेर ॥

छट छट[1] तप कर तन थयो खीणो, तपस्या दूकरकारी हो
॥ ध० १ ॥

फिर फिर हाड, नैन करे तिक तिक, प्रभात गगन मांही ताराहो
मांस रहित तन, हाड छवि वीट्यो दुर्गत ममता मारी हो
॥ ध २ ॥

भविक चकोर ज्यूं हरषे, सूरत सुरनर प्यारी हो ।
निरखी नैन श्रेणिक नृप वन्दे, वीर वचन उरधारी हो
॥ ध, ३ ॥

आतमज्ञान सुधारस[2] पीकर, निज आतम निस्तारी हो ।
"रतन" कहे धन धन्नों मुनिवर, क्रोड़ २ बलिहारी हो
॥ ध० ४ ॥

---

१—बैला की तपस्या । २—अमृत

४२

# गज सुकुमाल मुनि

वर्ज—

वन्द नित गजसुकमाल मुनीस ॥ टेर ॥

संजम ले शमशाने आया, मन में अधिक जगीश ॥ व० १ ॥

सोमल अगन करी उपसर्गों, परजाल्यो शिर शीश ॥ वं. २ ॥

खदबद खीच तणी पर सीज्यो, पिण नाणी मन रीश ॥ वं० ३ ॥

केवल लेय अमय पद पाम्या, अष्ट कर्म दल पीस ॥ वं ४ ॥

"रतन" कहे इम मन थिर कीना, ते सुख विसवावीस ॥ व ५ ॥

( ३ )

## धर्मरुचि अणगार

तर्ज—

मुनिवर धर्मरुचि रिख वंदूं ॥ टेर ॥
भव भव पाप निकाचित संचित, दुरमत दूर निकंदूं हो
॥ मुनि ॥

चम्पानगर निरुपम सुन्दर, उठे धर्मरूची रिख आया।
मास पारणे गुरु आज्ञा ले, गोचरियां सिधाया हो
॥ मुनि १ ॥

नीची दृष्टि धरण सूं राखे, मुनिवर गुणभंडारे।
भिक्षा अटन करंतां आया, नागसिरी घर द्वारे
॥ मुनि० २ ॥

खारो तूंबो जहर हलाहल, मुनिवर ने बहरावे।
सहज उकरड़ी आई हम घर, बाहिर कहो कुण जावे हो
॥ मुनि ३ ॥

पूरण जाणने पाछा फिरिया, गुरु आगे आय धरियो।
कुण दातार मिल्यो रिख तोने, पूरण पातर भरियो हो
॥ मुनि ४ ॥

नाना करतां मुझने वहरायो, भाव उलट मन आणी।
चाखी ने गुरु निरणो कीधो, जहर हलाहल जाणी हो
॥ मुनि ५ ॥

असुज्ज[1] अमोज कूल्फ सम त्यागे, जो मुनिवर तू यामी।
निर्बल कोठो जहर हलाहल, अकाले मरजा‍ी हो
॥ मुनि० ६ ॥

आज्ञा से परठ्यान पाम्या, निरवद्य ठोर निरखी आवे।
बिन्दू एक परठतां ऊपर, कीड़यां बहु मरजावे हो
॥ मुनि० ७ ॥

अन्न आहार थी एहवी हिंसा, सर्वथी अनरथ जाणी।
परम अमपरम भाव उलट्य धरी, कीड़ियां री करुणा आणीहो
॥ मुनि० ८ ॥

देह परहतां दया नीपजे, तो मोटो उपकारा।
खीर खांड सम जाणी मुनिवर, तत्क्षिण करगया आहारो हो
॥ मुनि० ६ ॥

प्रबल पीड़ शरीर में साली, आमण सगलि पाली,।
पादोगमन[2] कियो संथारो, समता दृढ़ता राखी हो
॥ मुनि० १० ॥

सर्वार्थ सिद्ध पहुँचा शुभ यागे, महा रमणीक विमाण।
चोसठ मण को मोती लटक, करणी न प्रमाण हो
॥ मुनि० ११ ॥

---

१—अकल्प्य २—वृक्ष की डाली की तरह लटककर संथारा करना

खबर करणने मुनिवर आया, गिरुजी कालज कीधो ।
धिक धिक हो इण नागसिरी, ने, मुनिवर ने विष दीधो हो
॥ मुनि० १२ ॥

हुई फजीती कर्म बहु बांधी, पहुँची नरक दुवार ।
धन्य धन्य धर्म रुचि मुनिवरजा, करगया खेवोपार हो
॥ मुनि० १३ ॥

पेंसठ साल जोधाणे मांही, सुखे कियो चोमास ।
"रतनचन्द" कहै तिण मुनिवर ना, नाम थकी शिव वास हो
॥ मुनि० १४ ॥

---

( ४ )

## भवदेव मुनि

तर्ज–

मोटी जग में मोहनी ॥ टेर ॥

भवदेव जागी मोहनी, तज आयो हो सद्‌गुरु के संग ।
नागला आई वंदवा, रिख जाणी हो मन धरि उमग
॥ मोटी० ॥

सुण सुन्दर सुखकारिणी, मुझ नारी हो इण शहर मंझार ।

असत्य वचन किम भाखिए, नहीं सुखिये हो मुनिवर ने नार
॥ मो० २ ॥

अवपरबी छोड़ायने मुझ पचव हो लज्जा में नाख ।
रात दिवस हिवड़े वसे, हूँ आयो हो मन धर अभिलाख
॥ मो० ३ ॥

सा नहीं थासी तुम मणी, किम होसी हो इक रगी प्रीत ।
मो विन सा दुःखणी होसी, हूँ जाणू हो म्हारा मन तणीरीत
॥ मो० ४ ॥

हूँ उमी तुम आगले, मुनिवर सी हो इम झूठ न बोल ।
निकुंच सुखारे कारणे, थां ढळता हो मनमा मत डोल
॥ मो० ५ ॥

सुरपादप उज शोभतो, कुण घाले हो बांवल ने बाथ
हिरक हार तज दिये सणो, कुण घाले हो विषधर मुख हाथ ।
॥ मो० ६ ॥

खीर खांड भोजन वमी, कुण दच्छे हो नर रांक गिवार
त्यागनकर संग्रह करे, तिण नर ने हो दीजे धिक्कार
॥ मो० ७ ॥

मगल[1] हजने मलपतो, कुण राखे हो रासभ री आस

१—हाथी

सुर सुख तजने नरक की, कुण मूरख हो मन करे प्रयास
॥ मो० ८ ॥

मद-मातो हाथी फिरे, अंकुश थी हो जिम आवे ठाम ।
वचन सुणी नागला तणां, मुनि किधा हो निश्चल परिणाम
॥ मो० ९ ॥

कर अनशन आराधना, रिख पाम्यो हो सुर नो अवतार
भव कर मुगत सिधाविया, एभाख्यो हो जिनवर विस्तार
॥ मो० १० ॥

अष्टादस वहोतरे, देवगढ में हो गाया मुनिराय
"रतन चंद" कहै मुनि तणा, पाय वन्दूं हो निज शीस नंवाय
॥ मो० ११ ॥

---

( ५ )

## सती चन्दनबाला

तर्ज—

धन धन धन सती चन्दनबाला ॥ टेर ॥

दधिवाहन पुत्री जाणी, जिणरी माता हुई धारणी राणी,
सती भणी गुणां ने रूप रसाला ॥ धन० १ ॥

अपसरा गौर जाणे इन्द्राणी, जिणसूं पण रूप अधिको जाणी

वही दीप ज्यिम दीपक माला ॥ धन० २ ॥
चम्पा सूरी ने सति भव गई, अठे सेठ धनावा माल लई
यह जोड़जो र कर्मविपाक चाला ॥ धन० ३ ॥
माता मस्तक मू डन दु:ख दियो, सती सु धरा माही तेलो कियो
सेठ आई ने काढी तत्काला ॥ धन० ४॥
सूपे छाज र बाकला उड़द तणा,
काई साधु आवेतो देऊ भावघणा
घणी भूख ने देही सुकमाला ॥ धन० ५ ॥
श्री वीरजिनंद निजर दीठा, सतीरे रोम रोम में लाग मीठा
सामो आपने हो रही उजमाला ॥ धन० ६ ॥
एक बोल घटतो जाणी, आंखियां मांहि नहीं दीठो पाणी
वीर पाछा फिर गया तत्काला ॥ धन० ॥
मैं पूर्वभव पातक करिया, जिन आय आंगण पाछा फिरिया
नयणा नार बह ज्यिम परनाला ॥ धन० ८ ॥
वीर पाछा फिर पारणो लीधो, अठ देवता आय मोहोत्सव कीधो
हाथ कड़या गल मातियन माला ॥ धन० ६ ॥
मूला सुन दोड़ी आई, म्हारा रतन रखे लूटया माई

जोयजो रे लोभ तणी झाला ॥ धन० १० ॥

माजी थे तो कियो उपकारो, तरे वीरजिनद लीधो आहारो

दुःख दीठा ते तो कर्मारा चाला ॥ धन० ११ ॥

पछे वीर जिनंद केवल पाया, जठे सती भणी देवता लाया

संयम ले छोड्या जंजाला ॥ धन० १२ ॥

छतीसहजार री हुई गुरूणी, सती उत्कृष्टी कीधी करणी

केवल ले काट्या करम जाला ॥ धन० १३ ॥

मृगावती जैवती जाणी, ज्यांरी चेल्यां हुई राजारी राणी

चेल्यां सहु रतनारी माला ॥ धन० १४ ॥

कर्म खपाय सती मुगत गई, जठे जन्म जरा और मरण नहीं

मेटी मोह मिथ्यात तणी झाला ॥ धन० १५ ॥

पूज्य गुमानचंदजी गुरू पाया, तरे सती तणा गुण मुख गाया

"रतनचंद" करी ढाल सुविशाला ॥ धन० १६ ॥

---

आयुष पूरण कर गया हो, बारहवें स्वर्ग मझार ।
धनने सुगति मिथावमी हो, यो सो आवश्यक विस्तार
॥ सु० १२ ॥

त्रेसठ साल चोमासे में हो, रीयां म धर्म नो प्रेम
"रतन चन्द" कहे श्रावकां हो, शुद्ध पौषध कीजो एम
॥ सु० १३ ॥

---

( ७ )

## विजय सेठ—विजया सेठाणी

धन धन श्रावक पुण्य प्रभाविक, विजय सेठ ने सेठाणी
॥ टेर ॥

शुक्ल-पक्ष विजया व्रत लीनो, सेठ कृष्ण पक्ष रो जाणी
॥ धन० १ ॥

सज सिणगार चढी पिऊ मन्दिर, हेज भरी हिये हरखाणी
॥ धन० २ ॥

तीन दिवस शुभ व्रत वर्त्यां छे, सेठ कहे मधुरी वाणी
॥ धन० ३ ॥

वचन सुणी नेणा नीर ढलियो, वदन कमल थई बिलखाणी
|| धन० ४ ||

शुक्ल-पक्ष व्रत गुरु मुख लीधो, अब परणो बीजी सहाणी
|| धन० ५ ||

अवर नार सहु बहन बरोबर, धन धीरज धारी जाणी
|| धन० ६ ||

हिये हार सिणगार सजा तन, काम घटा जिय उलटाणी
|| धन० ७ ||

एक सेज धर हेज प्रबल, तो पिण मन राख्यो ताणी
|| धन० ८ ||

वर्षाकाल विद्युत[2] घन[3] गाजे, चौधारा बरसे पाणी
|| धन० ९ ||

मन वच काय अखडित निर्मल, शील राख्यो समता आणी
|| धन० १० ||

षड् रितु वर्ष दुवादस निर्मल, सरस सम्बन्ध ए अधिकाणी
|| धन० ११ ||

---

१—सेठाणी २—बीजली ३—बादल

( ६ )

## राजा चन्द्रावतसक का पौषध

तर्ज—भविया वेला

शुद्ध पौषध प्रतिमा पालिए हो, टालीजे आतम दोष ।
निज आतम ने वश करो हो, ज्यों वेगी वे पावो मोष
॥ शु० १ ॥

पोतनपुरी नगरी भली हो, चन्द्रावतंसक ईश ।
दृढधर्मी दृढ आतमा हो, जिणमें पूरण गुण इकवीस
॥ शु० २ ॥

महल मनोहर सुन्दरु हो, निरवद्य जायगा जाण ।
पोसह धर काउस्सग कियो हो, दोय पग पर रह्यो महीराण
॥ शु० ३ ॥

दासी नाम मृणालिका हो, तन चाकर सरदार ।
दीपक कीधो महल में हो, रखे व्यापे घोर अधार
॥ शु० ४ ॥

जहां लग ज्योत बुझे नहीं हो, मोने त्यां लग पालवा ना नेम
दृढ धर मन तन वश कियो हो, जिम अभिग्रह कीधो एम
॥ शु० ५ ॥

पहर निशा बीती जिसे जी, बुझवाने हुयो तैयार ।
रखे तिमिर हुवे रायने, तिणसुं तेल भर गई नार
॥ शु० ६ ॥

टूटे नाड्यां पग थकी जी, छूटे छेः निज प्राण ।
ऊठे सरणा अंग में हो, पण राख्यो निश्चल ध्यान
॥ शु० ७ ॥

अर्ध निशा ने अवसरे जी, आवी फेर हजूर ।
तेल घटंतो देखने हो, वलि दीपक भर गई पूर
॥ शु० ८ ॥

व्यापी प्रबल वेदना हो, पीडित थयो शरीर ।
पग सूजे धूजे नहीं हो, पण अग अंग में पीर
॥ शु० ९ ॥

तन सेवा करवा भणी जी, आई तीजा पहर समीप
भगति भाव कर तेल सूं वलि, पूरण भर गई दीप
॥ शु० १० ॥

चोथा पहर नी वेदना हो, अनंत अनंती होय ।
गिरिया[1] गिरिवर टूंक ज्यों पिण, चल-चित्त न हुयो कोय
॥ शु० ११

१—पर्वत

विमल केवली करी प्रशंसा, ए दोनों उत्तम प्राणी
॥ धन० १२ ॥
सगर हुआं दोउ संजम लीधो, मोहकर्म कियो धूल धाणी
॥ धन० १३ ॥
"रतनचंद" पाय नितप्रति वंदे, केवल ले गया निरवाणी
॥ धन० १४ ॥
पूज्य गुमानचंदजी गुरु मिलिया, सेठ कथा ज्यांरि सुख आणी
॥ धन० १५ ॥

---

८

## अरणक श्रावक

तर्ज—

धर्म धर्मप्रिय रे, अरणक श्रावक जेम ॥ टेर ॥
चम्पा नगर थी चालियो जी, सागर में चढ जहाज
लोक अनेक सार हुवाजी, धन लाभण ने काज
॥ धर्म० १ ॥
इन्द्र प्रशंसा अति करी जी, सुर नर मिले अनेक ।

तो पिण अरणक नहीं चलेजी, तब चाल्यो सुर एक
॥ धर्म० २ ॥

दांतश्रेण खुरपा जिसा जी, लोयण[1] राता लाल।
भृकुटि[2] भाल[3] अशोभती जी, मुख थी मूके झाल
॥ धर्म० ३ ॥

मस्तक माला कंठमें जी, अहि[4]काने खड़ग हाथ।
रूप कुरूप डरावनो, जाणे अमावस्यारी रात
॥ धन० ४ ॥

दीर्घरूप आकाश में, देखे प्रवहण[5] लोक।
छोड धर्म तूं अरणका, केह देसूं जहाज डूबाय
॥ धन० २ ॥

माठा[6] लखणा रा धणी, तूं मान रे मूरख बात।
हरगिज आज छोडू नहीं रे, करसूं थारी घात
॥ धन० ६ ॥

अरणक अणसण उच्चरे जी, दृढ़ धर्मी धर प्रेम।
म्हारो धर्म म्हारे बसुजी, यो कहो करसी केम
॥ धन० ७ ॥

१-नेत्र २-भौंहें ३-ललाट -४सर्प ५-जहाज ६-अशुभ

चौथे मुगत सिधावस्यां जी, ज्ञाता में अधिकार।
"रतनचद" गुण गाविया जी, बीकानेर मझार
॥ धन० १४ ॥

गुण सट माघ शुक्ल पखेजी, पांचम ने गुरुवार।
समकित धरम आराधजो जी, साम्भल ए अधिकार
॥ धन० १५ ॥

---

९

## गज सुकुमाल मुनि

( तर्ज—साहिब सांभो अरनाथ अ० )

तुम पर वारी हूँ वारी जी वार हजारी, तुम पर वारी
॥ टेर ॥

देवकी नंद शिरोमणि सुन्दर, नेम तणी सुण वाणी।
तज समार संजम आदरियो, अतुल वैराग्य मन आणी
॥ तुम१ ॥

माता हाथ तणो कर भोजन, अन्य आहार नहीं लीधो।
आज्ञा ले श्री नेमजिनद नी, मुगत महल मन कीधो
॥ तुम २ ॥

रूप सरूप अनूप अनोपम, सज सोलह सिणगार ।
नख चख सिख सोहे सहु सुन्दर, हिये अमोलक हार
॥ सुण० ३ ॥

मन मोहन बैठा मंडप में, ए इम प्राच आचार ।
झुल झुल लटका मटक मीनवां, जोगो आंख उघार
॥ सुण० ४ ॥

परणी न परणी कर लाया, पल पूरी कियो ध्यान ।
कमर करी ने धर्मी होस्यो, कौन सिखायो थांने ज्ञान
॥ सुण० ५ ॥

मोह वचन महिला' मन गमता, सुणया श्रवण मंझार ।
कनकाचल सम काया कीनी, धन धन जम्बूकुमार
॥ सुण० ६ ॥

प्रभवो सुन्दर सहु समझावी, भेटया सुधर्मस्वाम ।
' रतनचन्द" कहे म मुनि वन्दू, पाम्या अविचल धाम
॥ सुण० ७ ॥

## ११

# जयवंती श्राविका

तर्ज--

म्हारा ज्ञानी गुरु नी वाणी हो अमृत सारखी जी ।
समझै नर उत्तम, जो होवे मानव पारखी जी ॥ टेर ॥
नगर कोशाम्बी उदाइ महाराय,
राज जी हो चरम जिनन्द समोसर्या ।
जेवंती भेट्या जिन पाय,
राज जी हो राज उज्जल निर्मल गुण भर्या ॥ म्हा० १ ॥
जेवती पूछे कर जोड़ राज-जी हो,
राज-भारी हुवे किम जीवडो । म्हा० ।
सेवे पाप अठारे अघोर राज-जी हो,
राज-जिण सूं न छूटे जगको छेवडो ॥ म्हा० २ ॥
भव अभव दोनूं ही रास राज जी हो,
राज-किण करणी सूं जग मे गिरती । म्हा०
रास अनाद स्वभावे विमास राज जी हो,
राज-किणे न कीधी कहै शासन धणी ॥ म्हा० ३ ॥

महाभस्म[1] समसान भ्याल[2] बहु, लाल भमर दिग दीसे ।
उज्वल मशल बले थे झिग झिग, तरू[3] तल रया मुनीशे
॥ तुम० ३ ॥

नेत्रदृष्टि मांडी अगुष्ठ, श्रेष्ठ सकल विध साज ।
राचे भावम-राम तथे रस, पूरव पातक भाजे
॥ तुम० ४ ॥

मुनिवर मेरू-शिखर जिम निश्चल, कर्म कटन महाबलियो ।
दखी गज मुनि श्यान[4] ज्यूं मोमस्त, क्रोध करी परजलियो
॥ तुम० ५ ॥

मस्तक पाल बांधी माटी री, मुनिवर ममता मरिया ।
झग झगता खेर ना खीरा, मुनिवर ने सिर धरिया
॥ तुम० ६ ॥

खदबद खीच तणी पर सीक, तड़ तड़ नासा टूटे ।
मुनिवर समता भाव धरी न, लाभ अनवो लूटे
॥ तुम० ७ ॥

अन्तसमय कवल उपराजी, त्याग उदारिक देह ।
अक्षय अमल अवगाहन करन, अनन्त चतुष्टय लेह
॥ तुम० ८ ॥

१—भयंकर –सप ३– वृक्ष के नीचे ४–कुत्ता

अल्पप्रव्रज्या ने अतुल परीमो, अन्तसमय गढ लीधो ।
ठाणायंग-अन्तगढ में देखो, उत्तम कारज कीधो
॥ तुम० ६ ॥

"रतनचद" कहे ते मुनिवर ना, नाम थकी निस्तारो
शहर नगीने जोड करी है, मधु-मासें गुरुवारो
॥ तुम० १० ॥

---

१०

## जम्बुकुमार

तर्ज—

सुण सुण सुन्दरू रे, भोग पुरन्दरू रे,
वहाला, म्हारी अचलानी अरदास ॥ टेर ॥

ऋषभदत्त ने धारणी अगज, नामे जम्बूकुमार ।
सुधर्मा स्वामी तणी सुण वाणी, सयम ने हुआ तयार
॥ सुण० १ ॥

आठों वाला रूप रसाला, परणी चढ्या आवास ।
ध्यान समाध लगायने बैठा, भामण रही विमास
॥ सुण० २ ॥

रूप सरूप अनूप अनोपम, सज सोलह सिणगार।
नख चख सिख मोहे मद सुन्दर, हिये अमोलक हार
॥ सुण० ३ ॥

मन मोहन चैत्र मंडप में, पे हम प्राण आधार।
लुल लुल लटका मटक नीनवां, दोनी आंख उघार
॥ सुण० ४ ॥

परणी न परणी घर लाया, पण पूर्ण कियो ध्यान।
कपट करा न धर्मी हारयो, कौन सिखायो ग्यान मान
॥ सुण० ५ ॥

मोह मगन महिला[1] मन गमता, सुण्या भवरा संसार।
कनकावस्त ६म काया कीनी, धन धन जम्बूकुमार
॥ सुण० ६ ॥

प्रभवो सुन्दर मद्द ममभावी, मेरगा सुधमस्वाम।
'रतनचन्द' कहे म मुनि वद्द, पाम्या अविचल धाम
॥ सुण० ७ ॥

---

१—स्त्री —सुनम् पर्वत

## ११

# जयवंती श्राविका

तर्ज--

म्हारा ज्ञानी गुरु नी वाणी हो अमृत सारखी जी ।
समझे नर उत्तम, जो होवे मानव पारखी जी ॥ टेर ॥
नगर कोशाम्बी उदाइ महाराय,
राज जी हो चरम जिनन्द समोसर्या ।
जेवंती भेट्या जिन पाय,
राज जी हो राज उज्जल निर्मल गुण भर्या ॥ म्हा० १ ॥
जेवती पूछे कर जोड राज-जी हो,
राज-भारी हुवे किम जीवडो । म्हा० ।
सेवे पाप अठारे अघोर राज-जी हो,
राज-जिण सू न छूटे जगको छेवडो ॥ म्हा० २ ॥
भव अभव दोनूं ही रास राज जी हो,
राज-किण करणी सूं जग मे गिरती । म्हा०
रास अनाद स्वभावे विमास राज जी हो,
राज-किणे न कीधी कहै शासन धणी ॥ म्हा० ३ ॥

सहु मवी पामसी मोक्ष राज, जी हो राज
मविनो विरहो थासी जगत में । म्हा०
जिन कहे जीव मरया सहुलोक राज, हो राज जी,
एक प्रदेश न खाय मोक्ष में ॥ म्हा० ४ ॥
घणो मलो क जागतो जीव राज, हो राज जी,
धर्म कमावे सो रूडो जागतो । म्हा०
विचार धार मिथ्यातरी नींद राज, हो राज जी
सूतो रूडो, नहीं पाप लगावतो ॥ म्हा० ५ ॥
आलस उद्यमी दुरबल दृढ शरीर राज, हो राज जी,
एहवा रीते मांहु जिया दाखिया । म्हा०
मींसे प्रान ने टाल सहु नी पीड राज, हो राज जी,
त तो रूडा श्री जिन भाखिया ॥ म्हा० ६ ॥
सेव इन्द्रिय विषय तेवीस राज, हो राज जी,
चार कषाय सु जग मांही रूले । म्हा०
दम कर इन्द्रिय जीते रागने रीस राज, हो राज जी,
त तो नर शिव सुख मिले ॥ म्हा० ७ ॥
सुण सुख वाणी पामी परम वैराग राज, हो राज जी,
केवल पामी थारो सध में, म्हा० ।

मुगत नगर पहुँची महाभाग राज, हो राज जी,

भाखी जिन दाखी भगवति अंग मे ॥ म्हा० ८ ॥

माल वयांसी जोधाणे चोमास, राज हो राज जी,

"रतनचंद" गुण गाविया म्हा० ।

जैवंती नो प्रश्न विलास राज, हो राज जी,

सांभल श्रवणे सहु सुख पाविया ॥ म्हा० ९ ॥

---

१२

## धन्ना मुनि

(तर्ज—नेण भकोले)

तुम पर वारी जी वीरजी वखाणी हो, मुनीसर करणी आपरी

॥ टेर ॥

नगरी काकंदी से मुनीश्वर आपज अवतरया, मेव्या श्री जगदीश

नार वतीसे हो मुनिश्वर अपसरसी तजी, सोनेय्या क्रोड़ वतीस

॥ तुम० १ ॥

उग्रतपस्या हो मुनिवर छट्टतप आदरयो,

आंबिल उज्झित अहार ।

समण वणीमग हो मुनीसर वंछे नहीं, धन्य थारो अवतार

॥ तुम० २ ॥

साम सु मीठ्या हो मुनीश्वर मांस लोही नहीं,
तन थयो पिंजर रूप ।
आंख्यां नी कीकी हो मुनिश्वर तारा टिकटिके,
पूछे श्रेणिक भूप ॥ तुम० ३ ॥
मुगति ने मारग हो जिनेश्वर सहु उद्यम करे,
इस में हुया श्रीकार
श्री मुख माखे हो नरश्वर तपस्या में सिर,
धन्य धन्ना अणगार ॥ तुम० ४ ॥
सुण सुख पायो नरश्वर आया रिख कने, नीचा नमाई शाम ।
आग नमाई हो नरेश्वर, दी प्रदक्षिणा, मेट्या मगवाधाश
॥ तुम० ५ ॥
गुण सिन्धु पूरा हो मुनीश्वर धरमसायर[1] जिसा,
मथाई रिखराम ।
कुमत मईंदा हो मुनीश्वर खंडो कर्म न, मारो वंछित काज
॥ तुम० ६ ॥
माम मथारो हो मुनीश्वर स्वार्थ सिद्ध रुड्यो,
कर्म भरम दिया तोड़ ।
चव विदेह में हो मुनीश्वर मुगत सिधावसो,
"रतन" कहे कर जोड़ ॥ तुम० ॥

---

१ धरम सूरमण समुद्र

१३

## देवानंदा का अविचन्ह

तर्ज-

ऋषभदत्त ने देवानंदा नार, रथ पर रे२ वेगीने वंदन संचरया रे ॥ टेर ॥

दीठोरे अति मीठो वीर दिदार, नायक रे २,
सुख दायक निर्मल गुण भर्या रे ॥ १ ॥

स्फटिक सिंघासण बैठा वीर जिणन्द, अनमिखरे २,
नेणो भर निरखे वीर ने रे ।

हुलसो रे अंग ऊपनो परमआनन्द, फूली रे २,
सुध भूली मगन शरीर में रे ॥ २ ॥

विकस्यो रे अंग छूटी कचुक डोर, झरिया रे २,
वलि लायो खीर[1] पयोधर[2] रे ।

पूछे रे गौतम गणधर कर जोड, बाई रे २,
बीजी नहिं कोइ इण परे रे ॥ ३ ॥

भाखे रे वच्छ ये छे मोरी माय, पूरव रे २,
नेहावश ए परवश थई रे ।

१ दूध, २ स्तन में

पुरब मन बांधी बहु अंतराय जिण कर रे २,
मुक्त मुख कर यू ही रही रे ॥ ४ ॥
समनेर निज भवसे भीमुख वैस, पामी रे २,
दुःख स्वामी मुख प्रयस पकी र ।
इसड़ा रे सुख दायक त्रिशल्या[1] सैण, अब तोरे २,
हिवे प्रीति करू अविचल अखीरे ॥ ५ ॥
सग तज रे देहु लीधो सजम भार, पाल्यो रे २,
दु:ख टालियो चउविह संघ में र ।
माम मंयारे पहुँची मुगत मभार, मास्यो रे २,
जिन दाख्यो भगवति अंग में र ॥ ६ ॥
जननी वच्छल सुख दायक महावीर, पहली रे २,
शिव मर्ती उर वासो बसी र ।
"रतनचंद" न राखो धरणा री धीर, पाली रे २,
बांमामो चरम कियो अर्मा रे ॥ ७ ॥

---

१ मिलिपा पाठान्तर

१४

# मंडूक श्रावक

तर्ज—

वीर बखाणयो हो श्रावक एहवो रे ॥ टेर ॥

नगरी तो राजगृही रा बाग में रे,

हारे कांई समोसर्‌या महावीर रे,

मडुवो तो श्रावक निरमल गुण धणी रे,

हां रे कांई चाल्यो भगवंत तीर रे ॥ वी० १ ॥

बिच में तो मिलिया बहु अन्य तीरथी रे,

हांरे कांई बोल्या इण पर बैणरे ।

पांच[1] अरूपी वीर वखाणिया रे,

हांरे काई तूं देखे निज नेण रे ॥ वी० २ ॥

अछता तो वीर कदे भाखे नहीं रे,

हांरे कांई देख्या श्री वीतराग रे।

विगर त्रिलोकी आगम वारता रे,

हांरे कांई किम भाखे महाभाग रे ॥ वी० ३ ॥

---

१—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय और काल।

शब्द गध न तीजो बायरो रे,
हांरे कांई स्वर्ग नरक नी बात ।
सुख दु ख जीव कर्म दीसे नहीं रे,
हांरे थांन भखूणां तो लागे मिथ्यात रे ॥ मी० ४ ॥
उगत न उपजी भस्म बोल्या दूसरा रे,
हांरे कांई किष्ट कियो मिथ्यात रे ।
धर्म दिपायो आयो हरख घ रे,
हांरे कांई मेट्या श्री जगनाथ रे ॥ मी० ५ ॥
भस्म दीठी दीठ मलीन जो दासता रे,
हांरे कांई होतो समकित नास रे
धारू संघ में तो बस भवि पामियो रे,
हांरे कांइ श्रीमुख दी शाबास रे ॥ मी० ६ ॥
एक मन तो करने मुगत सिधावसी रे,
हांरे कांई मास्यो वीर जिनद र ।
समत चोरासी पाली पीठ में रे,
हांरे कांई एम कहे "रतनचंद" रे ॥ मी० ७ ॥

१५

# पूज्य श्री गुमानचन्द जी महाराज

दोहा—गुणवंत गुरु रा गुण कियां, समकित होय उद्योत ।
ज्ञाता में जिनवर कह्यो, लहै तीर्थकर गोत ॥ १ ॥
अहना गुण अनेक छे, कहो कुण सकै जोड ।
पिण लवलेस इहां कहूं, पूरण मो मन कोड ॥ २ ॥

चाल—ईडर आवा आमली रे ॥

ढाल—सहर सुभट पुर शोभतो रे, मरुधर देश विख्यात ।
अखेराज कुल मेसरी रे, चैना नामे मात हो ॥ १ ॥
पूज्य श्री थे गिरवा ने गुणवन्त ॥ टेर ॥

वडी पुन्याई मातरी रे, जनम्यो पुत्र सुजात ।
करण मूहूर्त भल आवियोरे, हुतासन री रात हो
॥ पूज्य० २ ॥

पिडत जन ने तेडिया हो, लगन लियो तिण—वार
मोटी गादी जोग छै रे, विद्या रा भडार हो
॥ पूज्य० ३ ॥

बालवै लीला करी रे, सुन्दर वरण शरीर ।

आधाकर्मी मोल तणा तज्या जी, निज़र लागी एक मोष
॥ ध० ३ ॥

गाम नगर पुर पाटण विचरिया जी, ममता दृढता मेल ।
भविजन हरख निरखे नयन सूं जी, मूरत मोहन वेल
॥ धर्म० ४ ॥

वचन सुधारस वरसै वदन थी जी, सुखदाई मंगल माल ।
हृदय सरोवर थी गंग प्रकटी जी, जाणे सागर री परनाल
॥ ध० ५ ॥

हेतु दृष्टान्त जुगत मले घणी जी, वचन सुधारसा मीठ ।
निरखतां नयणा धापै नहीं जी, लोयण अमिय वैईठ
॥ ध० ६ ॥

वाणी गहरी गरजत मारकी जी, भविक मोर हरखाय ।
मूल मिथ्यात मेटे मन भरम रो जी, शिव पंथ शुद्ध बताय
॥ ध० ७ ॥

शहर मेड़ता कीधी विनती जी, आप रह्या चौमास ।
वेले वेले मोडयो पारणो जी, आणी हरख हुलास
॥ ध० ८ ॥

देश देश री आई विनती जी, सहु रे दर्शन री चाय ।
केई तो आटने चरण भेटिया जी, घणा रे रही मन मांय
॥ ध० ९ ॥

तपतज व्याप्यो आण शरीर में जी, पिण दृढता अणपार ।
कातिवद आठम सुरगति लही जी, च्यार पोहर संथार
॥ ध० १० ॥

मज्म आउखो पायो महामुनि जी, उत्तम पुरुष स्वभाव ।
पिण प्रश्न पूछण देखण तणो जी, रह्यो घणा रे चाव
॥ ध० ११ ॥

छत्रकेवली था भरत चेत्र में जी, मोटी पडी अन्तराय ।
कल्पवृक्ष कहो किम ठाहरे जी, मरुधर देश रे मांय
॥ ध० १२ ॥

पंडित मरण सुधार्‌यो महामुनि जी, कियो घणो उपकार ।
कुत्यावण री हाट समा हुआ जी, ज्ञान दान दातार

आधाकर्मी मोल तथा तज्या जी, निजर लागी एक मोष
॥ ध० ३ ॥

गाम नगर पुर पाटण विचरिया जी, समता हढता मेल ।
भविजन हरख निरखे नयन सु जी, मूरत मोहन वेल
॥ धर्म० ४ ॥

वचन सुधारस वरसे वदन थी जी, सुवर्ता मंगल माल ।
हृदय सरोवर थी गंग प्रगटी जी, ज्ञान सागर री परनाल
॥ ध० ५ ॥

हेतु दृष्टान्त युगत मले घणी जी, वचन मुहावणा मीठ ।
निरखतां नयणा कदे धापे नहीं जी, लोयण अमिय पैईठ
॥ ध० ६ ॥

थारी गहरी गरजव गारखी जी, भविक मोर हरखाय ।
मूल मिथ्यात मेटे मन भरम रो जी, शिव पथ शुद्ध बताय
॥ ध० ७ ॥

शहर मडते कीधी विनती जी, आप रह्या चौमास ।
पल वेल मांडयो पारखो जी, भाखी हरख हुलास
॥ ध० ८ ॥

देश देश री आई विनती जी, सहु रे दर्शन री चाय ।
केई तो आइने चरण भेटिया जी, घणा रे रही मन मांय

॥ ध० ९ ॥

तपतज व्याप्यो आण शरीर में जी, पिण दृढता अणपार ।
कातिवद आठम सुरगति लही जी, च्यार पोहर संथार

॥ ध० १० ॥

मज्झ आउखो पायो महामुनि जी, उत्तम पुरुष स्वभाव ।
पिण प्रश्न पूछण देखण तणो जी, रह्यो घणा रे चाव

॥ ध० ११ ॥

सूत्रकेवली था भरत क्षेत्र में जी, मोटी पडी अन्तराय ।
कल्पवृक्ष कहो किम ठाहरे जी, मरुधर देश रे मांय

॥ ध० १२ ॥

पंडित मरण सुधार्‌यो महामुनि जी, कियो घणो उपकार ।
कुत्यावण री हाट समा हुआ जी, ज्ञान दान दातार

॥ कलश ॥

इम पंडित मंडन, पाप खंडन, दीठां होय आनन्द है।
सुज्ञम सागर, ज्ञान आगर, गिरवा गुरु गुमानचंद है ॥
शरीर सुन्दर, बुद्धि निर्मल, शुद्ध कीध आचार है।
"रतनचन्द" दिन रयण सिमर, पूज्य रो उपगार है ॥

---

१६

## पूज्य श्री दुरगादासजी महाराज रा गुण

जिनै मूल जिनधर्म छे, मर्म पचासण घर।
फल प्रगट दिन दिनकर, बोध बीज अंकूर ॥ १ ॥
तीर्थंकर पद संपजे, गुरु गिरिवा गुणवंत।
आगम अर्थ विचारतां, एह प्रगट नो पंथ ॥ २ ॥

चाल—हांजी मोरा जनम मरण रा साथी० ॥

हांजी मोरा सतगुरु जी उपगारी, थांरी कोड़ कोड़ बलिहारी
गुरु बिना ज्ञान ध्यान नहीं प्रगटै, मिटै न मोह विकारी।
समकित मारग समापण काजे, सतगुरुजी चोपारी
॥ हांजी० १ ॥

मरुधरदेश में गांव सालरिया, अवतरिया अवतारी।
ओस वंस सिवराज पिता तुम, सेवा दे महतारी
॥ हांजी० २ ॥

तांघर जन्म लियो पट् समते, सुभ वेला सुभ वारी।
बाल लीला कीधी लघु वय में, मोहदसा मन धारी
॥ हांजी० ३ ॥

श्री मुख नैन नासिका सोहे, मूरत मोहनगारी।
वर्ष चतुर्दश दास दुरग रिख, होय रहे ससारी
॥ हांजी० ४ ॥

गुरु बहु निरख परख गुर भेट्या, कुल लग गुरु गुणधारी।
सुण उपदेश रहस्य धर घट में, निज आतम निस्तारी
॥ हांजी० ५ ॥

बुद्ध अतसुद्ध कला बहु फैली, भणिया अंग इग्यारी।
मूल छेद ने सप्त निखेपा, हुवा ज्ञान भंडारी
॥ हांजी ६ ॥

सुस्वर कंठ, विशाल वचनसुं, करै राग उपचारी।
श्रावक वर्ग सोहे मुख आगल, मानूं केसर क्यारी
॥ हांजी० ७ ॥

विचरया ग्राम नगर पुर पाटण, प्रतिबोधत नरनारी ।
समकित ज्ञान उद्योत दिवाकर, जग कीरत विस्तारी
॥ हांजी० ८ ॥

निरखी नैन भविक जन हरखत, परखे सुद्ध आचारी ।
''रतनचद'' उपदेश सुणी नै, लिया सीस गुरु धारी
॥ हांजी० ९ ॥

१७

दोहा–जिन आज्ञा अनुसार थी, उज्वल निमल सुद्ध ।
गुरु गुमान के ध्यान थी, कीधो उद्यम सुद्ध ॥
तर्ज—चाल—नाग्रकदा माहरा आवें ॥

श्री पूज्य तणा गुण भारी, नित सुमरो नर नारी रे ।
ए तो दुरगत विघी सुख कारी ॥ नित ॥ श्री पू० टेर ॥
वस्त्र अरु पात्र, आहार मने थानक, निरदोषण आदरिया ।
आगम अर्थ तणें अनुसारे, पाले निरमल क्रिया रे
॥ श्री पू० १ ॥

परिसा सहन सह्या बसुधा जिम, मेरु ज्यू अचल अडोले ।
कूड़ कपट दल छिद्र निवारी, वचन सुधारस बोले रे
॥ श्री पू० २ ॥

तप परभाव सुभावे अतसै, सन्मुख कोई नहीं मंडै ।
स्याद्वाद चरचा अनुसारे, पाखंडी मत छंडै रे
॥ श्री पू० ३ ॥

विचरै ग्राम नगर पुर पाटण, ज्ञान ध्यान का दरिया ।
निरखी नैन भविक जिन वंदे, ते भव सागर तिरिया रे
॥ श्री पू० ४ ॥

सहर सुमटपुर श्रावक सहु मिल, हित सूं करी अरदास ।
किरपा कर करुणा के सागर, आप रह्या चोमास रे
॥ श्री पूज्य० ५ ॥

वास इकांतर किया निरंतर, छट्ठ आठम वले टाणै ।
निज पिंड बल खीणो अवलौके, आप रह्या थिर थाणे रे
॥ श्री पू० ६ ॥

समत बयाली ने तणी चौमासी, सावण सुद ससि वारो ।
तिथ एकादसी अष्ट पोहर नो, कियो चोविहार सथारो रे
॥ श्री पू० ७ ॥

त्याग वैराग कियो नरनारी, काम तज्यो नर कामी ।
कीरत फैल रही सहु सुख थी, सरग विराज्या स्वामी रे
॥ श्री पू० ८ ॥

श्री गुरु वचन सुणी निश भवचे, ज्ञान सुधारस पीधो।
भविजन वर्ग मिली अति हरषे, मोक्षस इघको कीधो रे
॥ श्री पू० ९ ॥

गुरु गुण गूंथ सके कुण सुख थी, उणरवता कुण पाये।
युगत महल की सहस कमय नै गुरु चरणों सिर नाये रे
॥ श्री पू० १० ॥

वर्ष छिहंतर सुद भादवा, पामी गिण दुरगम।
"रतनचन्द" कहे गुरु कृपा थ, प्रगट्यो ग्यान विसेस रे
॥ श्री पूज्य० ११ ॥

चारित्र विभाग समाप्त

# परिशिष्ट

# कवियों की दृष्टि में आचार्य श्री

१

सेय श्री रत्नमर बखिय संपदा आठ लाल र
दरसस कीधा पुजरा असुभ करम जाय नाठ लालरे
॥ रतन० १ ॥

रतनमुनि महारे मन बसे, मोटो मस उपगार लालरे
काघो संसार क्लेश द्र, मीठा बचन उच्चार लालर
॥ रतन० २ ॥

दया मला धर्म देसणा, गरजे कहर जम लालरे
मद उतरे पाखंड नो बल न रहे गज जम, लालरे
॥ रतन० ॥

गायाँ रा टोला मध्ये, जेम भद्र क सांड लालरे ।
सोभे चतुर विध संघ में, घरम देशना मांड लालरे
॥ रतन० ४ ॥

बरसे श्रीमुख मेघ ज्यू, बचन धारा बारामास लालरे ।
फूल भविजन आपची, जरत मिथ्या तज बास लालरे
॥ रतन ५ ॥

कृतियासरनी दूकान मे, वस्तु चहै सो तैयार लालरे।
तिम श्री पूजने भेटीया, पावे वंछित सार लालरे
॥ रतन० ६ ॥

महिमा देस प्रदेस मे, फैली ठामों ठाम लालरे।
अतिसे पूज तणा इसा, पाखंडी करत प्रणाम लालरे
॥ रतन० ७ ॥

खत्री सेठ सेनापति, मुमदी उमराव लालरे ।
कायथ ब्राह्मण ने प्रजा, भेटे श्री पूज रा पांव लालरे ॥
॥ रतन० ८ ॥

केई वदत निंदत केई, तो पिण समता भाव लालरे ।
वसुधा जिम परिसा सह्या, एक मुगत रे चाव लालरे ॥
॥ रतन० ९ ॥

चौथा आश्रम उपनी, तन चरणा में खेद लालरे ।
तो पिण थाणे रह्या नहीं, करण विहार उमेद लालरे ॥
॥ रतन० १० ॥

गांव नगर पुर विचरता, करता धरम उपदेश लालरे ।
शहर जोधाणे पधारिया, हरख्या लोग विसेस लाल रे
॥ रतन० ११ ॥

सुर पादप सम पूज री, सेवा सही सुखकार सालरे ।
कहे "हमीर" रतनेस री, बलिहारी सोवार सालरे
। रतन० १२ ॥
—पूज्य श्री हमीरमलजी म०

२

राग काफीरी—किण बारीपिचकारी रे ।

रतनमुनि री वाणी रे, माने लागे प्यारी ॥ टेर ॥
पूज्य रतन सम भरतक्षेत्र में, विरला छ अणगारी रे
॥ मा० १ ॥
अंग उपग सूत्र उर धरिया, ये ज्ञान तणा भंडारी रे
॥ मा० २ ॥
सीतल चंदन स्यू अति अधिका, मेटे मिथ्यात्व पथारी रे
॥ मा० ३ ॥
श्रावक वृन्द फावे सुख मागल, मानो भ्रमर क्यारी रे
॥ मा० ४ ॥
चहुँ दिशा मांही कीरत पसरी, प्रतिबोध नरनारी रे
॥ मा० ५ ॥
हमीरमल' सद्गुरु वाणी पर, पलक पलक पर वारी र
॥ मा० ६ ॥
—पूज्य श्री हम्मीरमलजी म

३

ढाल—उज्जैन गढ म्हाने ले चालो-

रतनचंद मुनि दीपता, म्हारा सारे वंछित काज जी ॥रतन०।
भवि सारै आतम काज जी ॥ रतन० टेर ॥

पूज्य गुमानचन्दजी गुरु पाया, मिथ्या मत कियो दूर जी ।
जगत सुखा ने छाँड ने जी, भल हुआ सजम नै सूर जी
॥ रतन० १ ॥

स्वमति परमति सब घट भीतर, सप्त नयां चित्त धारजी ।
पाखंड मतिकुं खंडन करे है, घाले धर्म तंत सार जी
॥ रतन० २ ॥

क्रोध, मान, माया, लोभ पतलो, द्युति[1] षट्कर्म विडार जी ।
सप्तवीस गुण-धार शिरोमणी, मोटा मुनि अणगार जी
॥ रतन० ३ ॥

नेत्र, श्रवण, नासा अतिसुन्दर, देह पुण्य की खान जी ।
देखत नयन, लोचन नहीं धापै, चन्द चकोर ज्यूं जाण जी
॥ रतन० ४ ॥

१—काति

साधु सिरोमणि शोभे सुगुरु, जिम तारन विच चन्द्र जी।
चतुरसघ में दीपत स्वामी, निशशान में मेन आनन्द जी
॥ रतन० ५ ॥

सवत् अठारे वर्ष अस्सी में, नागौर शहर में आयजी।
"दौलतराम" चरणा रो चाकर, सुख सुख लाग थारे पायजी
॥ रतन० ६ ॥

—मुनि श्री दौलतरामजी मा०

४

चाल—चक्रस्यारे सुगण सुनार वेसर सोना की

ठेठी दिप दिप तन दिनद, बदन मोहे जिमचंद।
सतगुरु उपगारी ए, पूज्य रतन मुनि चैन ॥ सत० १ ॥
धन गरजारन वय अमोल, कौन सके गुण तोल
॥ सत० २ ॥
सावज्ञ गे कीधो परिहार, ल निरदोषण आहार
॥ सत० ३ ॥
धार मता कीधा निरदोष, निजर नर्गी ज्यांरी मोष
॥ सत० ४ ॥

पंच महाव्रत निरतिचार, सुमत गुपत सुख कार
|| सत० ५ ||

चाल भली गज हस्ती जेम, थांरे मुक्त रमण सुं प्रेम
|| सत० ६ ||

निरखत नैन धापे नहीं कोय, रतन सूरत मुख जोय
|| सत० ७ ||

सत गुरुजी री मैंमा विसेख, म्हारी जीभ छै एक
|| सत० ८ ||

समगत जोत उद्योत प्रकास, म्हारे कियो मिथ्यात रो नास
|| सत० ९ ||

'मंगतूला' मगनां मान मोड, वन्दै वेकर जोड़
|| सत० ९ ||

समत चोरासी नागोर सहर, आप राखो अविचल महर
|| सत० ११ ||

—सतीजी श्री मगतुलाजी, मगनाजी

५

ढाल—म्हारा नैण भर गुरमुख निरख्यो।

धन दिहाड़ो ने धुमरी घड़ी, हूँ रतन मुनि रे पाय पड़ी।
पूज्य रतनचन्दजी गुरु भेट्या, मारे समगत जोत उद्योत करी
॥ धन० १ ॥

पंच महाव्रत रूड़ा राखे, सुमत गुपत चित सुध धरी।
दोष बयालीस टाल सिरोमण, इम्रत वाणी पम मरी
॥ धन० २ ॥

सांवरी सूरत मोहनी मूरत, जनम जरा रोग सोग मरी।
भव जीवां ने सतगुरु तारे, निरखत पातक दूर टरी
॥ धन० ३ ॥

मरत खेतर में पूज रतन सम, फेइयक विरला साध सरी।
सुध अतिसुद्ध करता समझावण, मारो दरसण दिवड़ो नैण ठरी
॥ धन० ४ ॥

तेज प्रताप पूज रो मारी, पाखंडी सब थरक हरी।
देश प्रदेशां सतगुरु भैमा, सिख सोमे ज्यांरी मोत्यांरी लरी
॥ धन० ५ ॥

एक जीभ सुं गुण कुण गावै, दीधी एक मंतोप जरी ।
'मंगतूला' मगना री यह विनती, सतगुरु सरणे आन खरी
॥ धन० ६ ॥

—सतीजी श्री मंगतूलाजी

---

५

तर्ज—होरी

मूसा तोय नेक लाज नही आइरे ॥ म्मा० आंकडी ॥
दूंद दुंदालारा वाहण उंदरा, ते आ कांई कुबद कमाइरे
॥ मूसा० १ ॥

मूसी कहे सुणों नी वालम, हूँ नहीं थारी लुगाई ।
तिरण तारण है रतन मुनीसर, ज्यांरी ते एडी चाईरे
॥ मूसा० २ ॥

मूसो तो हिवे उठ बोल्यो, सुण हे मूसी लुगाई ।
भाई बाई मेलियो छो मोकूं, जब मैं जीभ लगाई
॥ मूसा० ३ ॥

भाई बाई तो इण विधि बोल्या, सुण रे मूसा भाई
अरजी फेर करां छां म्हे तो, पूज जी जेंपुर जाई रे
॥ मूसा० ४ ॥

चोग हुवो तुरत नही मिरको, कोसाणा गांव रे मांई ।
सिद्धनाथ जोवत है तोकूं, पकड पूंछडी बाई रे ॥मू० ५॥

६

राग–

शुभ गति शरण विहारो, हो रतन मुनि शुभ गति
शरण विहारो ॥ टेर ॥
भव सागर में उरझ रहा हूँ, मोह पकर मोहि मारो ॥र० १॥
मैं अति दीन दया निधि तुम हो, नयन उघार निहारो ॥र०२॥
संभुनाथ कू डोरां खेलो, तो आन् देव विहारो ॥ र० ३ ॥

७

राग–तेहीज

कब कर हो मन मेरो, ऐसो ॥ टेर ॥
तट दे तूटे नेह कुटब सौं, सायन मीष बसेरो
॥ ऐसो० १ ॥
मात पिता बांधव सुत नारी, धास रहया छै घेरो ।
संभुनाथ को अपनो करलो, रतन मुनि थांरो चेरो
॥ ऐसो० २ ॥

८

राग–तेहीज

रहो मन, रतन मुनी के पास ॥ टेर ॥
पाव पलक की खबर न नाहीं, निकल जायगा सांस
॥ रहो १ ॥

झूठे मात पिता सब झूंठे, झूठे महल आवास ।
संभुनाथ के सांचे सतगुरु, सांची है जिन आस ॥ रहो २ ॥

---

९

राग–तेहीज

सतगुरु कब आवै सुनरी ।
वाणी सुण्यां बिना रतन मुनी री, वृथा जनम ही जावे ॥१॥
दिन नहीं चैन, रैन नहीं निद्रा, भोजन मूल न भावे ।
संभुनाथ के स्वामि देख्यां बिनु, जिवडो अति दुःख पावे
॥ सत० २ ॥

---

१०

चाल–आजा रे घनश्याम

वारी हो रतनेम पूज, दैण सुखकारी,
मेटियो मिथ्यात भ्रम आपदा सारी ॥ टेर ॥
नैन बैन अैन सोभै सूरत है प्यारी,
कहा करूं गुण थोरी, बुध है जी हमारी ॥ वारी० १ ॥
अग उपंग मूल छेद, ग्यान भडारी,
नय निखेप भंग जाल, पूरै गुणधारी ॥ वारी० २ ॥
सप्तवीस गुण अगाध, मैंमा भारी,
पाखण्ड कुं दूर करण, आये अवतारी ॥ वारी० ३ ॥
पांच सुमत तीन गुप्त, सुध ब्रह्मचारी,
रात दिवस ध्यान एक, प्रभु सूं तारी ॥ वारी० ४ ॥

वस्त्र पात्र आहार थानक, निरदोषण धारी,
बयालीस दोष टाल, लेव है आहारी ॥ धारी ५ ॥
सुमत तीसदोष जीत, शुभ आचारी,
सिरउ सुविनीत इमीर, धागन्या (आज्ञा) धारी ॥ धारी ६ ॥
दरस इ एक हरख मन, गावे नर नारी,
विनुनाथ सतगुरु री, जाऊं बलिहारी ॥ धारी ७ ॥

११

रतनमुनि है प गुणधारी, ज्यांरी तो मति अविकारी
॥ रतन॰ टेर ॥
अनेक रवि जेष्ठ क ऊगे, पूज्य इ परत नहीं पूगे
॥ रतन० १ ॥
मूरत ज्यांरी माहनी कहिये, निहारत नैन छक रहिये ।
दरस्यां दुख दूर सब जाई, प्रभु की भक्ति ज्यां पाई
॥ रतन० २ ॥
देखे नहीं एसे मुनि नैना, अमी सम है ज्यांरा बैनां ।
जीवन इ एसे समझावे, सुणे सोई पार होय जावे
॥ रतन ३ ॥
ज्यांरे है शिष्य सुखकारी, ज्यांरी तो बुद्ध अति भारी ।
विनुनाथ चरन को चेरो, राखो प्रभु मोय अब नेरो
॥ रतन ४ ॥

# पूज्य श्री रतन चन्द जी म०
# के ५४ चौमासे

दोहा- कुल ब्रडजाती श्रावगी उपना श्री रतनेश ॥
भव्य जीवां तारण तिरण, चात्रा देश विदेश ॥ १ ॥
संजम चवदे वर्ष का, लीधो जग सुख त्याग ॥
चौमासा चौपन किया, ते दाखू वर राग ॥ २ ॥

ढाल- तर्ज-मोटी हो जग में मोहनी ।
साहपुरे बडोदरे, मीलाडे हो दोय तीन चोमास ।
कीधा देश मेवाड़ में, बुद्धि निर्मल हो पढिया गुरु पास ॥ १ ॥
रतन मुनिवर मोटका, जिन मार्ग को कीधो उद्योत ॥
ऱ्या पुरुषों के प्रसाद से मैं पायी हो शुद्ध समकित ज्योंत ॥ २ ॥
महामन्दिर बडलू रियां, रायपुर और जयपुर शुभ ठाम ॥
एक एक पाचो नगर में, चौमासे हो लीधो विसराम ॥ ३ ॥
चार चार अजमेर मेडते, किशनगढ में हो दो तीन पीपाड़ ॥
दश नगिना इग्यार पाली किया, जोधाणे हो चौमासा बार ॥४॥
ए चौपन चातुर्मास में, भविजन ने हो तार्या समझाया ॥
पुर पाटन विचरिया घणा, वसु पावन हो कीधी मुनिराय ॥ ५ ॥
रुनि मडल नागौर में, चौमासो हो चौपनमों किधो ॥
रीया पीपाड पधारिया, तन चेष्टा हो वडा शिष्य लखि खीण । ६ ।
गढ जोधाणे नृपति तपे, हिन्दवाणी हो सूरज तप तेज ॥

देश विदेश प्रमानिलो मानिके हो सुखी जिनमेश ॥ ७ ॥
सुन आगम सतगुरु तणी मन हर्षो हो करिके विचार ॥
अर्ज करी दरबार में मैं बापू हो रीमां पीनाड़ ॥ ८ ॥
सु कारण नृप पूछियो कर जोरी हो बापे दीनाण ॥
मुनि रत्नेश पधारिया बड़ा पण्डित हो जिनौ मकना बाय ॥ ६ ॥
बाल ब्रह्मचारी मोक्ष तपसी निर्लोभी हो उत्तम गुण खान ॥
धर्म यात्‍पर्य मारग आके दरशन से होरे मोक्ष कल्याण ॥ १ ॥
धर्मार्थ पद बालके भग जानी हो पायो सुपात्र ॥
संवत्सर सत्तर निमर्षी गुरु वन्दे हो निज भवन निहार ॥ ११ ॥
बड़े शिष्य से चर्चा करी गुरु आगम हो किनबे जिनमेश ॥
पूज्य जोधाये पधारिए, जिनरण की हो अक्सर नहीं लेश । १२ ।
श्री गुरु कहे वाणी साची सुन समस्या हो मन हर्ष अपार ॥
गुरु वन्दी पर आविया लारे स हो मुनि कीयो विहार ॥ १३ ॥
चैत्र कृष्ण पक्ष अष्टमी जोधाणे हो रत्न रत्नेश ॥
जिनय चन्द कहे धन्य पूज्यको ज्ञा मुनिवों हो बोलो उपदेश । १४ ।

दोहा— ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी पूज्य किया उपवास ॥
तन में व्यासी था ये राइजवर की बात । १ ॥
बड़ा शिष्य नाम हमीर जी तेरह रात विचार ॥
धारी अनशन लियो शरणा चार सुनाम ॥ २ ॥

---